Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RAM SANDESH 1926 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112394

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राम-सन्देश

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धान्जलि

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

—संस्था… …पक—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ब्रह्मलीन स्वामी हरिॐ जी महाराज

स्वामी अमर मुनि जी महाराज

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय

–सूनो है मिशन सब
–व्यावहारिक वेदान्त (सुधार)
–हृदय पीर को गीत बना दे
–सावधान
–भारतीय संस्कृति
–काश यह सुहावना स्वप्न बना रहता
–श्रद्धान्जलि
–आध्यात्मिक सप्तक
–ब्रह्मलींन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज को श्रद्धान्जलि
–स्वामी गोविन्द प्रकाश से स्वामी राम तक
–श्रद्धान्जलि
–दिव्यझांकी
–संस्मरण
–सच्ची घटना
–सम्मेलन
–अन्तिम दिवारात्रि
–स्वामी जी
–पत्र
–सम्पादकीय

–Letters
–Telegram
–How to live peacefully
–On Relation
–Misuse of freedom
–Indian culture
–Life sketch of Swami Govind Prakash Ji

–आश्रम समाचार

A MESSAGE

"The Ocean surge, the rivers roll In me, in me in me". These are a famous line of Swami Rama. Rama's preaching contents that a man is complete only when he seeks self realijation He said that if a man identifies himself in a real sense, if he searches his innerself, he will come to know that there is no difference between him and God.

Nature ! a most commonly used word in our daily life is mostly misunderstood by us. According to Rama you are Nature in itself as he says "The foe contneds, the friends defends the mother sleep the baby weeps, In me, in me, in me." These lines closely indicates that a man is all in itself, there is no point to search enternal peace in the outer aspects of life.

If one comes to know himself, he will find that the World is nothing but his ownself the flower the Sun, the animals what ever are the creation of him is actually his ownself. There is no disfidctiton between us and a dead stone it is our own wrong notions and norm that we fail to understand the mystery of Nature, as said in the Bible Love thy neighbour as thyself it means that if we see our ownself in each and every creation of God, there shall be no enemity or friendship between us there will be love and Divine love every where, a unity and prosperity will be the symbol of life and nohatred will exist whatsoever. You realise yourself search your innerself and then only you will be able to live a life that is granted by the Almighty. see what you are, assit where you stand and then only you will come to know God.

—Swami Amar Muni

मुख्य सम्पादक—
स्वामी हंस प्रकाश वेदान्ताचार्य एम०ए० (दर्शन)

सह सम्पादक—
"निर्द्वन्द्व"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112394
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राष्ट्र के हित के लिए प्रयत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात् देवताओं की आराधना है'
—स्वामी राम

वेदान्त, अध्यात्म, संस्कृति, धर्म एवं भक्ति का सजग सन्देशवाहक तथा
स्वामी राम के आदर्शों का उपस्थापक एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

(राम-सन्देश)

वेदोपनिषदां तत्त्वम् सत्यं नित्यं सनातनम्।
तत्सर्वं "रामसन्देशे" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम्॥

वर्ष २६
अंक ११

वार्षिक शुल्क : १० रु०,
एक प्रति-८५ पैं०,

नवम्बर १९७७

112394

सूनो है मिशन सब

"गोविन्द' के प्रकाश बिन सूझै कैसे ज्ञान-पथ
'राम' के सन्देश हाय कैसे सुन पायेंगे ?
मुक्ति-जुगति आज बूझैं हम कौन सो,
'प्रेम के प्रसून प्यारे' कैसे चुन पायेंगे ?
राम के पैगाम और हरिओ३म-उपदेश-पुंज,
कुंज बीच गूंज-गूंज, कैसे गुन पायेंगे ?
'गोविन्द' आनन्दकन्द अनगिन निहारे गुन,
हम मतिमन्द प्यारे, कैसे गिन पायेंगे ?

छोड़ि गये 'दून' हाय, दैके दुःख दूनो हमें,
चेतन औ, जड़ तेरे शोक को करत हैं।
पूनो हुई ऊनो आज, सूनो है मिशन सब,
'राम-दरबार' आंसू दूनो ही झरत है॥
सन्त-अवतंस हाय, मानस के हंस गये,
सोक-बस काहू को, न बैन निकरत है !
आकुल--बेचैन सब रोवत है रैन--दिन,
आंसू ते नहायो, मैन नाहि उघरत है॥

—शान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे:—

जनवरी १९०२ में भारत-धर्म-महामण्डल भवन मथुरा में स्वामी राम का व्याख्यान, श्रीनारायण स्वामी द्वारा लिखित नोटों से—

व्यावहारिक वेदान्त

सुधार

—स्वामी राम

अन्तःकरण को शुद्ध करने का साधन:—पहले वर्णन कर आये हैं कि सुधार के इच्छुक या सुधारक महाशय के लिए शुद्ध अन्तःकरण रखना अत्यंत आवश्यक है। अतः अन्तःकरण के स्वच्छ रखने का उपाय भी शास्त्र और तत्व-ज्ञान के अनुसार बता देना आवश्यक समझकर स्पष्ट किया जाता है। इससे पहले कि अन्तःकरण के स्वच्छ करने की रीति वर्णन की जाय, प्रत्येक का ध्यान प्रकृति की ओर खींचा जाता है कि उसने सांसारिक पदार्थों को निर्मूल और स्वच्छ या मलिन और स्थूल करने का कौन सा ढंग वा नियम अंगीकार किया है। क्योंकि जो रीति प्रकृति ने सांसारिक पदार्थों को स्वच्छ और निर्मल करने के लिए अंगीकार की हैं, वही ढंग या नियम यदि मनुष्य स्वीकार करेंगे, तो निश्चयतः आशा की जा सकती है कि अन्तःकरण बहुत शीघ्र स्वच्छ और निर्मल हो जायेगा, यद्यपि मलिन तो वह पहले से है ही। विज्ञान के मत से सूर्य का प्रकाश सप्त रंगों का समुदाय होता है, और जो रंग संसार में मौजूद हैं, वे केवल सूर्य के ही हैं।

अब प्रत्येक व्यक्ति जो विज्ञानविद् नहीं है, यह सुनकर बड़ा चकित होगा और यों कहेगा कि जब हम नीला कमल कहते हैं, तो उससे स्पष्ट पाया जाता है कि कमल का रंग नीला है, फिर किस प्रकार कहा जा सकता है कि रंग केवल सूर्य का है? नीला रंग कमल का न होने में विज्ञान यह प्रमाण देता है कि रात को अन्धेरे में हम कमल की पंखड़ियाँ और आकार, गोलाई और वचन आदि वैसा ही पाते हैं, जैसे कि दिन में प्रकाश के समय पाते थे, मगर नीला रंग जो सवेरे प्रकाश में कमल का देखते थे, अब अन्धेरे में कमल के साथ बिलकुल दिखाई नहीं देता। यदि कमल की पत्तियां आकार और गोलाई आदि की तरह नीला रंग भी कमल का अपना होता, तो कमल के शेष सब अंगों के समान वह भी सदैव कमल के साथ ही बना रहता।

परन्तु अन्धेरे में शेष सब अंग तो कमल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ बने रहते हैं और भान भो होते हैं. किन्तु केवल रंग नहीं रहता और न दिखाई ही देता है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि रंग कमल का नहीं, वरन् उस प्रकाश का है, जिसमें या जिसके कारण नीला रंग दिखाई देता था और लगातार नजर आता था। इसमें अब फिर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यद्यपि यह सिद्ध हो गया कि रंग कमल का न था, किन्तु यह किस प्रकार कहा जा सकता है कि जो रग किसी वस्तु का प्रकाश में देखा जाये, वह केवल प्रकाश का होता है ? इस स वस्तार उतर को प्रत्येक महाशय को नेबुलरथियूरी (नीहारिका सिद्धांत) के पढ़ने से मिल सकता है, किन्तु यहां केवल संक्षेपतः बर्णन किया जा सकता है। इस विषय में विज्ञान यों कहता है कि जो रंग नीला या पीला आदि वस्तुओं का दिखाई देता है, उसका कारण केवल यह है कि जो सात रंग(लाल, नारंगी,नीला,आसमानी,पीला, हरा और वनकशी) विज्ञान ने सूर्य के प्रकाश के वर्णन किये हैं, उसमें से छः रंग तो वस्तुएं शोवण कर जाती हैं, और शेष एक रंग सूर्य की ओर वापस लौटा देती है। जो रग वस्तुएं नहीं शोषण करती, बल्कि सूर्य की ओर लौटाती रहती है, वही रंग दिखाई देता हैं। यद्यपि दृष्टि में तो ऐसा ही [illegible] है कि रंग वस्तु का है, किन्तु वास्तव में यह रंग केवल सूर्य का होता है कि जिस (स्रोत) से पहले निकल कर वह वस्तुओं में शोषित होने के लिये वस्तुओं की ओर आया था, और शोषित न किये जाने पर फिर अपने स्रोत (सूर्य) की ओर ही गमन करता है। इस तरह से प्रत्येक रग, जो वस्तुओं का दिखाई देता है, वास्तव में सूर्य का ही होता है।

क्रमशः

हृदय पीर को गीत बना दे !

—डा० व्रजमोहन

जीवन की ज्वाला के पल भी
कभी कभी उपयोगी होते,
महाप्राण मानव उर का वे
अन्धकार दुर्बलता खोते।

सच है ज्वाला के चुम्बन से
सदा भस्म हो जाते तिनके,
पर सोने के कण तो जलकर
जीवन की नव ज्योति संजोते

अपने जीवन की ज्वाला से
जग में जीवन ज्योति जगा दे,
अश्रुकणों से जलकर मुरझाती
कलियों की प्यास बुझा दे।

कसले और मिटाले तार
सभी अब जीवन के सितार के,
जब २ चोट पड़े जीवन पर
हृदयपीर को गीत बना दे !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

लेखक – ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश वेदान्ताचार्य

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत — (उठो जागो और अपने अभीष्टों को प्राप्त करके समझ लो)

प्रत्येक जीव के हृदय में यह स्वाभाविक अभिलाषा रहा करती है कि मैं अपने जीवन को सुख और शान्तिमय व्यतीत कर परम पद को प्राप्त करूं परन्तु देखने में यह आता है कि प्रायः हम इस मनोरथ से वंचित रहते दुःख और अशांति का अनुभव करते हैं। कारण यह है कि जो वास्तविक सुख और शान्ति का मुख्य साधन है उससे विपरीत साधनों में सुख और शान्ति की खोज करते हुए मृग-तृष्णावत् व्यर्थ में ही जीवन व्यतीत कर बैठते हैं। इसलिये महानुभाव उन विपरीत साधनों से साव-धान करने के लिये शास्त्रीय तथा स्वकीय अनुभवों से वास्तविक मार्ग प्रदर्शन कराते हैं – ऐ जीव तू-क्यों मोह निद्रा में पड़ा हुआ शोक कर रहा है, शोक का कुछ काम नहीं हैं। चिन्ता करने से कोई कार्य सिद्ध नहीं होता, भय मत कर पागलपन छोड़ दे, अन्धा बनकर ठोकरें मत खा, यह स्थूल शरीर तेरा नहीं है,सूक्ष्म शरीर तेरा नहीं है,कारण शरीर भी तेरा नहीं है. तीनों शरीर तू नहीं है। इसी प्रकार जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति ये तीनों अव-स्थायें भी तेरी नहीं हैं। यह जो कुछ भी तू देख रहा है उससे तेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। तू निस्संग कूटस्थ-सच्चिदानन्द, निष्कल निरन्जन देव है, न तू कर्त्ता, न तू भोक्ता, न तू प्रमाता है किन्तु शुद्ध साक्षी निरामय सनातन पुराण ब्रह्म है।

'असङ्गोह्ययं पुरुषः' इस श्रुति के वचन पर पूर्ण विश्वास कर दृढ़ श्रद्धा कर इस शरीर की उत्पत्ति से पहले तूने इस संसार को नहीं देखा था। शरीर के पीछे भी तू इस प्रपंच को नहीं देखेगा। बीच में संसार जो देख रहा है, वह शरीर के सम्बन्ध से ही देख रहा है। इसलिए अन्वय और व्यतिरेक से वह शरीर ही संसार के दिखाई देने का कारण है। जैसा आदि में होता है और जैसा अन्त में होता है वैसा ही मध्य में होता है।

"आदावन्ते च यन्नास्ति वर्तमानेऽपि तत्तथा
वितथैः सदृशाः सन्तोऽवितथा इव लक्षिताः"

इसलिये शरीर के सम्बन्ध से दीखने वाला प्रपञ्च भी आदि और अन्त में न होने से मध्य में भी नहीं है तब तू शरीर को अपना मानकर क्यों शोक-मोह-भय और चिन्ता में पड़ा हुआ है। शरीर अचेतन है, तू चेतन है, शरीर दृश्य है, तू द्रष्टा है, शरीर अनित्य है तू नित्य है, शरीर जन्म लेने वाला और मरने वाला है, तू अज और अमर है। शरीर को अपना मानकर शरीर के दुःख से

● ये दोनों प्रकाशित लेख महाराज श्री ने स्वयं लिखकर 'राम सन्देश' १९५४ जनवरी अंक में प्रकाशित करवाये थे। उस समय पत्रिका ब्रह्मलीन स्वामी हरिओम् जी के पूर्ण संरक्षण में प्रकाशित होती थी। प्रस्तुत है पुनः उनका स्मरण करने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप क्यों दुःखी होता है ? श्रुति कहती है कि यदि पुरुष अपनी आत्मा को जान ले कि मैं यह आत्मा हूँ तो वह शरीर के पीछे क्यों दुःखी और अशान्त हो अर्थात सर्वदा सुख और शान्ति में मग्न रहे।

"आत्मानं चेद् विजानीयादयमस्मीति पुरुषः।
किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् ॥

अतएव देह को मत देख। देह की तरह दिखाई देने वाले प्रपञ्च को मत देख, अपने तत्व में अपने स्वरूप में जा।

जब अपने स्वरूप का अज्ञान होता है तभी दूसरा दिखाई देता है। जब अज्ञान निवृत्त हो जाता तब दूसरा कभी नहीं भासता। अज्ञान को दूर कर भेद बुद्धि कर्पूर कर, द्वैत भाँडे को तोड़कर दूर कर, फिर तू सुखी हो जाएगा।

आनन्द भरपूर हो जायेगा, दुःखी कभी भी नहीं होगा, परतन्त्रता भाग जायगी, शोक, मोह आदि अनर्थ सब नष्ट हो जायेंगे। एक सच्चिदानन्द स्वयंज्योति स्वयंसिद्ध परमात्मा ही आरपार दिखाई देता है। विवेक के नेत्र खोल अन्धे के समान ठोकरें मत खा। अरे मानव जाग जा।

संसार स्वप्न को छोड़कर परमात्मतत्व में जायगा—यह कौन कह रहा है ? श्रुति माता कह रही है, सन्त महात्मा कह रहे हैं, अथवा कोई बालक कह रहा है। कोई भी कह रहा हो, युक्ति-युक्त बात बालक की भी क्यों न हो-माननीय है।

जिन धन-धान्य-पुत्र कलत्र आदि को तूने सुख शान्ति का साधन समझ रखा है विचार करने पर यह सब शारीरिक यात्रा के साधन हैं, न कि सुख शान्ति के। क्योंकि इस दुस्तर संसार से पार करने में यह साधन कुछ भी सहायता नहीं देते।

"रे चित्त चिन्तय चिरं चरणौ मुरारे।
पारं गमिष्यसि यतो भव सागरस्य ॥
पुत्राः कलत्रमित्रा नहिते सहायाः।
सर्वं विलोकय सखे मृगतृष्णाकाभम् ॥

अन्तिम में यही निवेदन है कि इन विपरीत साधनों से दूर हो शास्त्रीय साधनों द्वारा ही तू सुख शान्ति को प्राप्त कर सकता है। उनमें से कुछ का दिग्दर्शन ऊपर किया गया।

❀ ❀

० अमर वाणी ०

दुखतीं आंख पर डाक्टर हरे रंग की पट्टी बाँधते हैं; आंख बिल्कुल तो ठीक नहीं होती परन्तु हरे रंग का महत्व दुखती आँख के लिये बहुत है। इसी प्रकार सन्त महापुरुषों के दर्शन उनके सत्संग से ही कई पापों की निवृत्ति हो जाती है।

—स्वामी हरिओम जी

सत्य का बोध ही आप को विश्व का स्वामी बना देगा। —स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ भारतीय संस्कृति ★

[स्वर्ण-पदक-विजयी ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्दप्रकाश, वेदान्ताचार्य]

महानुभावो ! कौन ऐसा भारतीय है जिसका हृदय अपनी प्राचीन संस्कृति के स्मरण मात्र से ही आनन्द सागर की तरल तरङ्गों से तरङ्गित नहीं हो उठता । यदि कोई है तो उसे समझ लेना चाहिये कि मैं वह हूं जिसके भार से पीड़ित होकर कभी-कभी इस सर्वाहारो वसुन्धरा को भी प्रकम्पित होना पड़ता है। भारतीय संस्कृति के निन्दकों को चाहिये कि हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के इस पद को ध्यान में रखते हुये भारतीय संस्कृति की निन्दा से मुख मोड़ पूर्वकृत अपराधों के लिये प्रायश्चित करें—

"हमको विदित थे तत्व सारे नाश और विकास के।
कोई रहस्य छिपे न थे पृथ्वी तथा आकाश के ॥
थे हजारों वर्ष पहले जिस तरह हमने कहे ।
विज्ञान-वेत्ता अब वही सिद्धांत निश्चित कर रहे ॥'

सचमुच संस्कृति की इतनी गहरी छाप होती है जिसे मिटाने में युगों की अवधि अपेक्षित है । कुछ लोगों को तो इस समय आश्चर्य के सागर में गोते लगाने पड़ते हैं, जब उन्हें मेरे देश के भावी कर्णधारों के मुख से यह गौरवमय गान उन्हें सुनाई पड़ता है:

"यूनान मिस्र, रोमा सब मिट गये जहां से ।
बाकी मगर है अब तक नामों-निशाँ हमारा ॥"

भला, इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है ! जिस संस्कृति-रूपी वृक्ष को आस्तिकता, सेवा, त्याग, सदाचार, बलिदान, सत्य, अहिंसा, अतिथि-सत्कार, शरणागतवत्सलता और पातिव्रत रूपी स्रोतों ने सींचा हो, जिसका मूल 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के पवित्र सिद्धांत पर स्थित हो, जिसका एक-एक शब्द 'मातृदेवो भव', 'पितृदेवो भव', 'आचार्य देवो भव' की शिक्षा से अपने जीवन को शिक्षित करता हो उसका लोप हो सकता है—ऐसी कल्पना करना ही अपनी बुद्धि को तिलाञ्जलि देना है । यद्यपि संस्कृति और सभ्यता ये मिलते-जुलते शब्द हैं, तथापि ये एक दूसरे से भिन्न हैं । संस्कृति किसी जाति के मानसिक, आत्मिक तथा बुद्धि-सम्बन्धी विकास को सूचित करती है, किन्तु सभ्यता भौतिक विकास को। यदि किसी जाति की श्रेष्ठता की जांच करनी हो तो उसकी संस्कृति का निरीक्षण नितांत आवश्यक है । भारत की संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न है । भिन्नता ही इसकी विशेषता है । प्रारम्भिक काल से ही भारत की संस्कृति उसकी अमूल्य निधि रही है—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनाः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥"

इसी निधि को पाकर ही जनक—जैसे वैभवशाली सम्राट् वैराग्य-वृत्ति को प्रधानता देते हुये जीवन-पर्यन्त सघन-वनों से आवृत्त पर्वत-कन्दराओं के निवासी आत्मसाक्षात्-कर्ता साधु-सन्तों का ही यशोगान करते रहे । बृहद् मौर्य साम्राज्य के अधिपति अशोक इसी निधि के बल पर आयु पर्यन्त भिक्षुक सा जीवन व्यतीत करते रहे। यह वह निधि है जिसको पाकर बौद्ध भिक्षुओं ने अपना सन्देश सुनाने के लिये कोने-कोने में विचरण किया । ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश यह सुहावना स्वप्न, बना रहता-

स्वामी अमर मुनि

सन् १९४३, अप्रैल का महीना। अत्यन्त सुहादना गंग नहर का तट। एक ओर नहर में बहने वाला अमृत तुल्य स्वच्छ अपूर्व छटा लिए जल। और दूसरी ओर आम तथा सागवान के विशाल पेड़, उन पर बसन्त की बहार। कितना सुहावना दृश्य था। सैकड़ों सन्तों का गेरवे वस्त्रों में जमघट। यह दृश्य है चेतनदेवअवधूताश्रम कनखल का। उसमें सुड़ौल, सुन्दर, पुष्ट,गहरे भगवे कपड़े पहने—२२ वर्ष की अवस्था, कपड़ों के रंग के समान आभा लिये, मुस्कुराता चेहरा आज भी ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे सामने खड़ा हो। यह था प्रथम साक्षात्कार स्वामी जी से। प्रायः समवयस्क होने के कारण शीघ्र ही घनिष्ठता हो गई। जिसमें कारण एक यह भी रहा कि उन्हें मेरे सामने ही कुटिया मिली अतः दिन रात साथ रहना।

जीवन के कार्य की झलक उसी अवस्था में स्पष्ट थी। बड़े उत्साह से स्वामी जी ने साधु विद्यार्थियों की एक सभा को संगठित किया। जिसका कार्यालय रखा मुनि मण्डल आश्रम कन—खल में। उसी समय से उपदेश में रुचि। उस समय के उनके शहनशाह राम के प्रवचन—यह सैर क्या है अजब अनोखा कि राम मुझमें मैं राम में हूं—

अगस्त व्यतीत होते देर नहीं लगी। मैं विद्यालय चला गया और स्वामी जी पश्चिमी पंजाब का भ्रमण करने। काफी दिनों के अनन्तर स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के रूप में पुनर्मिलन हुआ उदासीन पंचायती विद्यालय में। यह सम्भव—तया १९४४ की बात है। विद्यालय में पण्डित गणेश झा से पढ़ना; किन्तु स्वामी जी ने योगाश्रम में प्रवेश ले लिया। तब भी प्रतिदिन मिलना। सभी विद्यालयों से प्रसन्न चित्त तथा उदार भाव से मिलन। समय व्यतीत हो गया। मैं वाराणसी चला गया तो पाया कि स्वामी जी भी बनारस पहुंच गये। काशी में गंगा किनारे महेश्वरा नन्द मठ। सामने गंग-जल की अनन्य राशि। नावों का जमघट सायंकाल छतरी में बैठकर गंगा में तैरती नावों का दर्शन। कभी कभी गङ्गा पार सभी सन्तों का एक साथ खेलना। क्या यह स्वप्न था? कितना सुहावना स्वप्न; काश सदा बना रहता आज भी ऐसे प्रतीत होता है जैसे गंगा की सुकोमल रेत में खेल रहे हो। आंखें बन्द हों तो सभी स्पष्ट दिखाई देता है और आंखें खोलने पर भर आते है आंसू। शहनशाह राम के शब्दों में नाव सागर में थी और सागर नाव में थी। आज है वह अनन्त—सागर परब्रह्म। जी चाहता है नावें दिखाई दें, किन्तु दूर तक सागर ही सागर है स्मृतियों का, नाव तो सागर बन गई। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धान्जलि

स्वामी हंस प्रकाश वेदान्ताचार्य
एम० ए० (दर्शन)

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

पूज्यपाद सद गुरुदेव जी का सर्वप्रथम दर्शन हरिद्वार में सन् १९५४ में अवधूतमण्डलाश्रम में हुआ। उस वर्ष मैंने संस्कृत की प्रथम परीक्षा दी थी। परीक्षा देते ही एक मित्र महात्मा के साथ मसूरी देखने के लिए आया था। रास्ते में रामतीर्थ मिशन में हम ठहर गये। उसी समय ब्रह्मलीन पूज्यपाद श्री हरिॐ जी महाराज का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर १९५६ के उज्जैन कुम्भ में सद्गुरूदेव जी का दर्शन म०मं० स्वामी विद्यानन्द जी प्रज्ञाचक्षु के कैम्प में हुआ। तब तक मैं सफेद कपड़ों में ब्रह्मचारी रूप में था। हरिद्वार चेतन देव कुटिया में रहने के कारण यदाकदा भंडारा खाने के लिए अवधूतमण्डलाश्रम रहने के लिए चला गया। उसी समय हरिद्वार में कोई पर्व था महाराज श्री ने कहा चलो ब्रह्मचारी जी! कनखल सती घाट पर स्नान करके आते हैं। प्रातः काल की बेला में हम पैदल चल पड़े। स्नान करके महाराज श्री जाप करने लगे। १५ मिनट जाप करने के पश्चात सारा हाल चाल पूछने लगे। कहाँ के रहने वाले हो? पढ़ कर क्या बनने का विचार है? क्या पढ़ कर घर वापिस जाने का विचार है? मैंने कहा नहीं महाराज जी! खूब पढ़ने का विचार है और प्रचार करने का विचार है। मैंने जब महाराज श्री को अपने चरणों में स्थान देने के लिए प्रार्थना की तो बोले मेरे साथ देहरादून चलना। वहाँ विचार करेंगे। रामतीर्थ आश्रम राजपुर में १ मई १९५८ को मेरे को सन्देश दिया। उस समय आश्रम का निर्माण धीरे धीरे हो रहा था महाराज श्री विद्या और विद्यार्थी से बहुत प्रेम करते थे। उन्होंने न जाने कितने संस्कृत छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान की होगी। १९६३ में मैंने वेदान्ताचार्य वाराणसी से किया। सेवा भाव बचपन से ही था फिर महाराज श्री के सान्निध्य में उसका विकास हुआ महाराज श्री के साथ काम करने में आनन्द आता था। उस समय शरीर में भी जोश था। आठ आठ घंटे सेवा करते रहते थे। फिर भी महाराज श्री थकते नहीं थे। जब हम थक जाते तो कहते "तुमने डालडा खाया है हमने शुद्ध घी खाया है।" उनकी किन किन विशेषताओं की चर्चा करूँ। वे अपने शिष्यों से प्रेम तो करते थे किन्तु उनका प्रदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होने देते थे । मैंने कहा कि आपको सही उत्तराधिकारी स्वामी ॐप्रकाश जी ही हो सकते हैं, दो तीन बार प्रार्थना करने पर भी उन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया । मेरे में और कोई गुण नहीं था जो कुछ भी उनकी या संस्था की सेवा में करता था वह उनकी कृपा का फल था । वे अपनी सेवा से संस्था की सेवा को अधिक महत्त्व देते थे । उनमें प्रान्तीयता की अथवा किसी भी प्रकार की संकीर्ण मनोवृत्ति नहीं थी । उनकी व्यवहार चतुरता की बड़ी चर्चा की जा रही है लेकिन उनसे भी बड़े बड़े साधुसमाज में व्यवहार चतुर पड़े हैं किन्तु जो लोकप्रियता उन्होंने सादगी और अभिमान शून्यता से प्राप्त की वह आज तक कोई महामण्डलेश्वर प्राप्त नहीं कर सका । बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर वे किंचित भी विचलित नहीं होते थे । चट्टान बन कर तूफानों से टकराते थे । विपत्ति में अपने लक्ष्य को नहीं भूलते थे । जब वे लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर को छू रहे थे तब भी उनके अन्दर क्षमा की भावना विद्यमान थी । बड़ी बड़ी सभाओं में उनकी वाक्पटुता अब कहां देखने को मिलेगी । वे आंधी की तरह आये । थोड़े समय में सनातन धर्म की समस्त सभाओं पर छा गये । समय आने पर पराक्रम दिखाने से भी वे पीछे नहीं हटते थे । उनके अन्दर कुछ कर गुजरने की तमन्ना बड़ी प्रबल थी । यही कारण है कि जब रामतीर्थ मिशन को सम्भाला तो इस संस्था पर पांच हजार का कर्जा था ।किन्तु आज इसकी चल अचल २८ लाख की सम्पत्ति है । अपनी महत्त्वाकांक्षा की होड़ में दूसरों का वे गला नहीं घोट देते थे । छोटे छोटे वक्ताओं को प्रोत्साहन देना उनका स्वाभाविक गुण था । प्यार की वे साक्षात् मूर्ति थे। इसीलिये आज प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह गृहस्थी हो या संन्यासी यही अनुभव करता है कि उस प्यार का मिलना अब दुर्लभ है । मेरे लिये तो उन्होंने अपनी कृपा का कोष ही खोल दिया था किन्तु मैं ऐसा दुर्भाग्यशाली निकला कि उस कृपा को बटोर न सका । सहारनपुर में जब वे बीमार पड़े थे । तब प्रयाग से सेठ जगन्नाथ बग्गा उनसे मिलने आये बग्गा साहब उनके अन्तरंग शिष्यों में से हैं । वे ३ दिन सहारनपुर रहे । उन्होंने तीनों दिन ही मेरी चर्चा महाराज श्री से की । उनके मुखारविन्द से मेरे बारे में प्रशंसा के ही शब्द निकले । वैसे मैं उस प्रशंसा का पात्र नहीं हूं । यह उनका बड़प्पन था जो मुझे इतना मान देते थे । मेरे मना करने के बावजूद भी मुझे प्रयागराज के कुम्भ में सम्मान के सर्वोच्च शिखर पर बैठाया । उनको व्यक्ति की पहिचान थी । ठीक समय पर निर्णय लेना । निर्णय लेने के बाद कदम वापस नहीं हटाना ऐसी अनेक विशेषताएं उनमें थी जो औरों में नहीं पायी जाती । स्वामी राम की तरह सर्वधर्म समन्वय की भावना क्षेत्री और प्रान्तीय भावना से ऊपर बैठकर सोचना, सारे संसार को अपना घर समझना त्याग की भावना, दर्द दिल इन्हीं विशेषताओं ने उनको देवत्व कोटि में स्थापित कर दिया था । भक्तों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए जो वे कष्ट उठाते थे उनका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति होने पर और शरीर रुग्ण होने के बावजूद भी दो घन्टे देहरादून की कचहरी में खड़े होकर बयान देते रहे। उनकी कृपा का कहीं अन्त है? हम ही नालायक निकले कि उनकी कृपा को दिल में न उतार सके। वे अपना प्रकाश बिखेर कर चले गये। उनके अभाव में जीवन शून्य मालूम पड़ता है। जीवन में नीरसता छा गयी है। उत्साह समाप्त हो गया है। यन्त्र शरीर को अब ढोये जा रहें हैं। गुरुदेव आप ही शक्ति दो तो आपके बताये हुए रास्ते पर चल सकें। वरना जीना दूभर हो गया है। पुनः आपके श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम करता हुआ लेखनी को विराम देता हूं।

आध्यात्मिक सप्तक

(१)

नैंनन सों नित नीर बहै, दृग सावन-मास बने हैं पनारे !
वियोग के रोग में रोवत ते, नित लागत हैं ये घने रतनारे !
पितु-मात सहायक स्वामी सखा क्यों जीवैं भला हम तोहि बिना रे !
प्रभु-प्रेम-तरंग में आप बहे, हम रोये हैं बैठ के गंग-किनारे ।।१।।

(२)

प्रेम की नाव बैठाये के चाव सों, बूढ़त सिन्धु के पार उतारे !
'प्रकाश' सों तारे हैं जेते अघी, नहिं तेते आकाश में दीखत तारे !
हम आपके काम न आये कभी, हाय आयु अकारथ दई बिता रे !
तुम गंग की गोद समोद गये, इत डूबे हैं आपने भाग्य सितारे ।।२।।

(३)

प्रीत की रीत सिखाई सुनीत सों, प्रेम को पन्थ पुनीत बतायो !
व्यतीत अतीत प्रसंगन ने चित्त चौगुनो आय के आप सतायो !
निधि रीत गई विपरीत विधि, संसार असार को सार जतायो !
तिहारे वियोग के रोग को भोग के, जीवन कैसे यह जाय बितायो ? ।।३।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४)

'दून' की दीन-मलीन दुनी, दिन दूनी ही पीर के नीर नहावै !
गोविन्द-विभोर सुधाकर-कोर सों, पोर की पोर चकोर कहावै !
वियोग के सिन्धु डुबोया हमें, अब गंग तरंग में अंग बहावै !
हम पापी कुरंग न संग गये, उर शो के तीर के पीर पिरावै ॥४॥

(५)

ज्ञान की सीख सिखाई हमें, और प्रेम की पावन रीत बताई !
छोटे बड़े सब भेंटे स्नेह सों, गेह में देह में एक मितायो !
जड़ चेतन प्यार समान दियो, 'हा' और न काहू की देह सतायी !
हाय रतन-तन लूट लियो, है कौन नियम यम, आततायी ॥ ५ ॥

(६)

रोते रहें दिन रैन ये नैन, औ रीते रहे अब हाथ हमारे !
रेत के महल से टहले सपना औ, न जीते रहे अब नाथ हमारे !
अब दरस की प्यास की आस गई, और आयु के बरस अनाथ हमारे।
हा, भीड़ को चीर अकेले गये, जग-मेले में खेले जो साथ हमारे ।

(७)

पुण्य सभी अब क्षीण हुये, औ' नवीन हुये सब पाप हमारे ।
विरहानल हाय, यह कैसे बुझे, और कैसे घटें तन-पाप हमारे ?
अब कौन सों बूझें, औ' खोजें कहां कित स्वामी गये चुपचाप हमारे ?
काल-बेपीर तो पीर न जानै, क्यूं आँसू न पोंछो आ आप हमारे !

—शास्त्री बलदेवराज "शान्त"

('चान्दी जैसी वे रात गई, वे सोने जैसे दिन बीत गये' गीत को लिखने में मेरी वही स्थिति रही जो 'प्रिय प्रवास' के लिखने में हरिऔध जी की। एक-एक पंक्ति अश्रु पोंछ पोंछ कर लिखता था। खेद है कि देहरादून में आकर गाकर सुना न सका ! ८ वर्ष बाद मैंने इतना भावुक गीत लिखा है। तथा नस-नस में पोर-पोर में, रोम-रोम में पीर पिरा रही थी।)

—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मलीन स्वामी स्वामी गोविन्दप्रकाश जी महाराज को श्रद्धान्जलि

स्वामी ब्रह्मानन्द
एम.ए., एल.एल.बी., एडवोकेट

पर्याप्त समय के अनन्तर दिनाङ्क ३० सितम्बर १९७७ को अपने मित्र पण्डित ख्यालीराम उपाध्याय साहित्याचार्य एम०ए० से भेंट करने पर मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे एक अन्यतम मित्र का सम्भवतः गत दिनांक १९ सितम्बर को निधन हो गया, समाचार सुनने पर भी आश्चर्य की अपेक्षा अविश्वास हुआ; सन्देह होना स्वाभाविक है, अनेक बार मुझे सन्देह हुआ किन्तु आधार बिना।

शास्त्रों में अध्ययन अथवा श्रवण करने का अवसर मिलता है कि संसार में कोई अपूर्व घटना नहीं होती है, नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः, असत् का भाव नहीं होता है और सत् का अभाव नहीं होता है। आविर्भाव एवं तिरोभाव कल्पित है, सत्य नहीं, यह प्रक्रिया अनादि काल से चली आ रही है। सत् शाश्वत है, प्राणी आदि में अव्यक्ति है, मध्य में व्यक्ति तथा अन्ततः अव्यक्त है। पत्र के उत्तर में ब्रह्मपुरी से स्वामी रामतीर्थ ने पूर्वाश्रमियों को उक्त वाक्य लिखा था: अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना। (गीता २-२८) ऐसी दशा में सन्ताप करने की क्या आवश्यकता है। सांख्य के सदृश ही वेदान्त भी सृष्टि को अविद्याकृत मानता है, जन्म मरणादि सब मायाकृत हैं अतः मिथ्या है, किन्तु इन सबको जानते हुये भी परिवेदना तो होती ही है।

मुझे वर्षों पश्चात भी स्वामी हरिओम् की सौम्य आकृति अब भी दृष्टिगोचर होती है, उनके निधन पर मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, आज भी वह सरल एवं स्मितभाव प्रतीत होता है। यही प्रकृति स्वामी गोविन्दप्रकाश की थी, और उनके निधन की वार्ता श्रवण होने पर भी मुझे विश्वास नहीं हुआ, मेरे सम्मुख वे यथापूर्व हैं, वही सम्बोधन सुनता हूं, कहो प्रोफेसर क्या वार्ता है, आओ भाई एडवोकेट, इस सबमें क्या रखा है, आओ रामतीर्थ मिशन में कार्य करो अपने विद्याबल तथा जीवन को नष्ट न करो, ऋषिकेश का मोह त्यागकर समय रहते कुछ कर लो, जीवन का कोई विश्वास नहीं कब चल दे।

उक्त अनुच्छेद में सत्यता अभिव्यक्त हैं, सन्देही के लिये सन्देह होगा उसे दूर करना हमारा ध्येय नही। स्वामी गोविन्दप्रकाश जी से मेरा क्या सम्बन्ध था प्रेम पण्डित को ज्ञात है। सन् १९५३ में कानपुर सर्वभौम साधु सम्मेलन हुआ था। जिस के अन्तरंग कार्यकर्ताओं में, मैं और स्वामी गोविन्द प्रकाश जी भी थे। तब से हम दोनों परस्पर मित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गये और बने रहे। दैवात् स्वामी हरिओम् के अल्पकालिक निधन ने रामतीर्थ मिशन को एक प्रकार से निराश्रित कर दिया था किन्तु न्यासियों ने योग्य महात्मा खोज निकाला परिमाणतः स्वामी रामतीर्थ के कार्य निर्वहणार्थ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज ने अध्यक्षत्व स्वीकार किया और सर्वतोभावेन आजीवन सफलतापूर्वक कार्य किया। मैं स्थायीरूपेण कभी भी आश्रम में नहीं रह पाया किन्तु यदा कदा आना जाना होता रहा एक दो बार स्वामी गोविन्द प्रकाश जी मेरे आवास पर भी पधारे थे। अन्तिम भेंट सम्भवतः गत जुलाई में आश्रम में ही हुई, काका हरिॐ स्वामी जी की आज्ञा से किसी भक्त के मंगल के लिये रामायण का पारायण कर रहे थे और स्वामी जी ने अपनी दिनन्दैनी में अग्रिम अनेक महीनों का कार्यक्रम लिख दिया था। मुझे अन्तिम बार रामतीर्थ मिशन में आने का अनुरोध किया किन्तु सब तो भाग्यायतन है। अपने भाग्य से प्राणी बढ़ता घटता है, चक्रारपंक्तिरिवगच्छति भाग्यपंक्ति। अपने गुरुदेव की सरलता प्रवीणता, उत्साहसम्पन्नता का अनुकरण स्वामी हंस प्रकाश जी भी करते हैं, स्वामी राम के सन्देश का प्रसारण उनकी चर्या है।

स्वामी हरिओम् के सदृश ही स्वामी गोविन्द प्रकाश जी में साम्प्रदायिक संकोच न था, किसी भी सम्प्रदाय का कोई सन्त महात्मा आश्रम में पहुंचे कभी उपेक्षा नहीं की, षड्दर्शन का होना चाहिये। अधिकार प्राप्ति के लिये नाना प्रकार के संघर्ष होते हैं क्योंकि कार्यकर्ता दुर्लभ होता है। अध्यक्ष बनना पक्व पायस नहीं, राजनीतिक चक्र प्रायः सर्वत्र और सदा चंक्रमण करता है, संघर्ष होते रहते हैं, आलसी, स्वार्थी रागी के लिये समस्या बन जाता है परन्तु वीतराग ब्रह्मनिष्ठ तत्त्वज्ञ परिव्राजक के लिये कोई समस्या नहीं। आजीवन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी ने आश्रम का संचालन किया, रामसन्देश प्रसारित किया और निरवकाश भ्रमण किया प्रवचन, सत्संग उपदेश के लिये।

अपने मित्र से ज्ञात हुआ कि उनका भी स्वामीजी ने सत्कार किया, विद्वानों का सम्मान तथा सत्कार करना उनका स्वभाव था, संस्कृत के छात्रों का विशेषकर अद्वैत वेदान्त के विद्यार्थियों को विद्यार्थीवृत्ति देते थे, उनसे छात्रवृत्ति लेकर अनेक छात्र व्युत्पन्न सिद्ध हुये और अनेकविध प्रतिष्ठित हो गये हैं। स्वामी रामतीर्थ के लिये उन्होंने आत्मसमर्पण कर रखा था। अनेक सत्संगों में व्याख्यान, प्रवचन तथा उपदेश करना उनका लक्ष्य रहा। अपने शरीर की कोई चिन्ता नहीं की। स्थूल शरीर होने पर भी अशिथिल एवं सदा उत्साहसम्पन्न थे। अपने वस्त्रों, जूतों का कोई ध्यान नहीं अपने जीवन का प्रतिपल लोकसेवा से लगा दिया। उन्हें ज्ञात था संसार धर्मशाला है, यह स्थायी विश्रामालय नहीं, इसमें कबाड़ा फैलाने और छोड़ने से बुरा कोई काम नहीं। धर्मशाला से जाना है, सभी प्रकार के यात्री धर्मशाला में आते हैं, विश्राम कर पुनः चल देते हैं, अच्छा यात्री प्रस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्नता से जीवन यापन करता है और अपनी प्रसन्नता दूसरों में फैलाता है। न घर मेरा न तेरा यह तो रैन बसेरा है विहान होते ही उड़ जाना है, जीवन नदी नाव का संयोग है। आसक्ति यदि संसार में बन्धन का कारण है तो उपेक्षा भी निन्दा का जनक है। अपने अधिकार का सामर्थ्य से उपयोग करना शंस्य है। इसी बात का प्रतिपादन भगवान् कृष्ण ने किया कि जो जो श्रेष्ठजन करते हैं वही दूसरों के लिये अनुकरणीय होता है 'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदि-रोजनः। अपने अदम्य साहस, परिश्रम, सामर्थ्य से स्वामी हरिओम् जी के आरोपित पादप का रक्षण सिञ्चन ही नहीं किया अपितु उसे विविध प्रकार से प्रसृत भी किया। अपना सामर्थ्य, अधिकार, समय रहते हुए सब कुछ करने में यशो-वृद्धि होती है, अन्यथा–सन्दीप्ते भवने तु क्व कूप-खननम्। कल की बात छोड़ दो आज की देखो।

❀ ✶ ❀

ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज को श्रद्धाञ्जलि

(—डा० स्वामी विश्वानन्द सरस्वती द्वारा)

आज से लगभग २६-२७ वर्ष पूर्व रामतीर्थ मिशन के संस्थापक श्री स्वामी हरिओम् जी महा-राज से दिल्ली में मेरा सम्पर्क हुआ था जब वे दिल्ली मिशन की शाखा की स्थापना के लिए एक सप्ताह मेरे निवास पर ठहरे थे और उसी स्थान पर मिशन की शाखा की स्थापना की थी। २३-२४ वर्ष पूर्व उनको गले का रोग का कष्ट हुआ। उस समय दिल्ली में उनके कुछ प्रेमियों की सभा हुई उसमें स्व० श्री मंजुराम का प्रस्ताव था कि गले का आपरेशन कराया जाये। मेरा परामर्श और आग्रह था कि आप्रेशन न कराया जाये और मैंने कहा कि उनके गले की सफल चिकित्सा मैं बिना आपरेशन के कर दूंगा। उस सभा में पधारे शेष सब भक्तों का भी यही विचार था कि आपरेशन नहीं करना चाहिए। परन्तु श्री मन्जुराम जी के प्रभाव में आकर स्वामी जी महाराज ने आपरेशन कराना स्वीकार कर लिया। मैंने चेतावनी दी कि आप ठीक नहीं करा रहे। परन्तु उन्होंने अपरोशन कराना ही उचित समझा। वड़े शोक की बात थी कि आपरेशन टेबुल पर ही देहान्त हो गया। उनके सैकड़ों भक्त शोकातुर हो गये। चार दिसम्बर का दिन था कि मैं तीन चार और राम प्रेमियों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी रात शव को मिलिटरी के एक ट्रक में लेकर देहरादून रामतीर्थ मिशन में पहुंचे। उस समय जहां सबने अपनी अपनी श्रद्धाञ्जलि पुष्पाञ्जलि उनके प्रति अर्पण की, मैंने अपनी जीवनाञ्जलि अर्पण की थी और उपरान्त चिकित्सा का कार्य छोड़कर इसी आश्रम में सेवा के लिये आ गया था।

ब्रह्मलीन श्री हरिॐ जी महाराज के स्थान पर श्री स्वामी गोविन्द जी महाराज वेदान्ताचार्य को सर्वसम्मति से उत्तराधिकारी चुना गया। जिस रामतीर्थ मिशन रूपी पौधे को श्री स्वामी हरिओम् जी महाराज ने लगाया था श्री गोविन्द प्रकाश जी महाराज ने लगभग २२ वर्ष के महान परिश्रम और बड़ी लगन से उसका इतना विस्तार कि वह अब वट वृक्ष के रूप में परिवर्तित हो गया है। ब्रह्मलीन श्री स्वामी गोविन्दप्रकाश जी महाराज सर्वगुण सम्पन्न थे। वह बड़े विद्वान, उदारचित्त, दयालु और बहुत विशाल हृदय के थे। प्रत्येक धार्मिक और नैतिक विषय पर उनके प्रवचन बहुत प्रभावशाली और हृदयग्राही हुआ करते थे और अपने चौमुखी गुणों के कारण देश विदेश में बहुत ख्याति प्राप्त कर चुके थे।

सितम्बर के प्रथम सप्ताह में मुझे पता लगा कि सहारनपुर में उनको हृदयावसाद हुआ तो मैंने उनको बड़े प्रेम से लिखा कि स्वामी जी महाराज आप देहरादून आ जायें तो मैं आपके रोग की सफल चिकित्सा करदूंगा उसके अतिरिक्त उनसे किसी अन्य विषय पर बातचीत करने के लिये भी लिखा था। उस पर उनका ता० १०-९-७७ का सहारनपुर से उनके हाथ से लिखा निम्न पत्र ता० १३-९-७७ को मुझे मिला—

"परमप्रिय आत्मस्वरूप डा० स्वामी विश्वानन्द जी

शुभ आशीर्वाद, सप्रेम हरिओम्।

समाचार यह है कि मेरे अस्वस्थ होने के कारण आपके पत्र का अध्ययन ठीक ढंग से न कर सका (अब इसका मैंने ठीक ढंग से अध्ययन किया है)। मैं दिल्ली चैकअप कराने जा रहा हूँ वहाँ से जब लौटकर आश्रम आऊंगा तो हमारी आपकी बातचीत खुलकर होगी और (रोग के सम्बन्ध और अन्यथा) विचार विमर्श करेंगे।

आपका अपना

स्वामी गोविन्द प्रकाश"

मैं बड़ी उत्सुकता से उनके यहां पधारने की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु बहुत दुःख की बात हैं कि उनके पधारने के स्थान पर उनके ब्रह्मलीन होने का समाचार १९-९-७७ को मिला। उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। ईश्वर उनको आत्मा को अमरत्व प्रदान करें।

विश्व-मंच पर हर व्यक्ति एक पात्र की तरह आता है और अपना अभिनय कर चला जाता है। रह जाती हैं मात्र उसकी यादें, स्मृतियां जो कभी २ एकान्त में साकार होकर ऐसा अनुभव कराती है मानो वह सामने हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी गोविन्द प्रकाश से स्वामी राम तक

श्यामलाल कश्यप वकील
उपाध्यक्ष,
श्री स्वामी रामतीर्थ मिशन, अलीगढ़

काफी दिन पहले मैंने पूज्य स्वामी जी का अनुभव के आधार पर एक लेख लिखा था, उनकी प्रेरणा न होने पर वह लेख 'राम सन्देश' को नहीं भेजा गया यद्यपि हमारे मिशन के मन्त्री श्री सचदेवा जी की राय थी कि उस लेख को जो ब्रह्मलीन स्वामी जी के सम्वन्ध मैं है, को भेजा जाये, किन्तु ब्रहुत से पाठक अन्यथा न समझें उसे मैं भेज न सका किन्तु अदृश्य हाथ किसी को मालूम है कि क्या ? कहाँ ? कैसे होता है। स्वामी राम ने कहा है कि जब कोई किसी महापुरुष पर अति निर्भर रहने लगता है। वे ठीक समय में छोड़कर चले जाते हैं। पूज्य स्वामी जी ने वही किया। वे हमें छोड़ गये। या यूं कहिये जैसा स्वामी राम ने कहा था कि जब कोई महान आत्मा चली जाती है तब अधिक शक्ति से सुधार होता है। समाज उठता है। और उन्होंने इसी सिद्धांत पर अपना विख्यात शंखनाद किया था—Ram seriously pronuce to infure power & dispel darkness and weakness from India's within ten years within. The half of the twentith century. India will be restored to more than its orignal glory. Let there worths be recouled." अस्तु ! स्वामी जी के ऋण से उऋण होने का तो केवल एक ही उपाय है, कि हम उनके कार्यों को आगे बढ़ायें, ईश्वर की आज्ञा से।

मैं शुरु से आर्य समाजी परिवार का सदस्य होने के नाते आर्यसमाजी था बाद में अति अध्ययन करते मार्कसवाद की ओर झुक गया। आप सच मानिये मैंने बहुत विकट अध्ययन किया। दर्शन का विद्यार्थी होने के नाते भी और जिज्ञासु की तरह एक के बाद एक बाद, थीसिस, सिद्धान्त, सम्प्रदाय, मजहब आदि २ का अध्ययन किया और सैकड़ों बहस मुवाहिसो के बाद इसी नतीजे पर पहुंचा कि 'ईश्वर' नहीं है।

गाजियाबाद से अलीगढ़ आ गया कई राजनैतिक दलों के जुम्मेवार पदों पर काम किया बहुत निकट से नेताओं के जीवन को देखा प्रत्येक सिद्धांतों को परखा, मन हट गया। सवाल बना रहा कि ईश्वर है भी या नहीं। एक बार दिल में आया कि बिना कुछ करे, खाली सिद्धांतों वाद-विवादों से शायद ईश्वर का पता कैसे लगे ? इसलिये एक के बाद एक गुरु परखा गया अब सच समझें भारत के दर्जनों विख्यात गुरुओं, भगवानों से सम्पर्क किया उनसे पत्र व्यवहार किया और उनके बताये साधन का ईमानदारी से पालन किया कुछ हाथ नहीं लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सन्तों, महात्माओं के नाम लिखना आवश्यक नहीं है। बात ज्यादा लम्बी हो गई है।

अलीगढ़ में स्वामी रामतीर्थ मिशन के सम्मेलन होते हैं मैं किसी में नहीं जाता था। स्वामीराम का अध्ययन नहीं किया था। स्वामी विवेकानन्द जी का थोड़ा साहित्य मंगाकर पढ़ा था। कुछ आकर्षण बढ़ा। राम की कुछ पुस्तकें सरसरी तौर से पढ़ी किन्तु नीरस सी लगी। अचानक कई वर्ष पहिले न जाने क्यों, एक दिन सम्मेलन में हाजिर हुआ सच मानिये। उस समय सम्मेलन समाप्त हो रहा था, मैं आगे बढ़कर पूज्य स्वामी जी के सामने खड़ा हो गया। उनके बराबर पूज्यपाद स्वामी गुरुचरणदास, स्वामी हंस प्रकाश तथा स्वामी ओमप्रकाश जी बैठे थे। मेरी दृष्टि स्वामी जी से मिली आप माने या न माने मैं वहां बहुत देर तक खड़ा देखता रहा स्वामी जी का वही गम्भीर, सौम्य, मुस्कराता चेहरा। मुझे मेरी प्रत्येक उलझन का समाधान हुआ। अचानक रोंगटे खड़े हो गये। कोई बातचीत नहीं हुई सब कुछ हो गया। वर्षों की उलझन एक दृष्टि में सुलझ गई। मैंने एक पुस्तक अद्वैत दर्शन में समर्पण में लिखा (स्वामी गोविन्द प्रकाश के नाम) कि जिनमें मैंने दयानन्द, शंकराचार्य, के दर्शन किये ? बात बिल्कुल सत्य है। दुर्भाग्य से आधे पैसे प्रेस पर पहुंचे और उसे आज तक उठा नहीं पाये। हस्तलिखित प्रति की रफ नकल रह गई है। स्वामी जी से पत्र व्यवहार हुआ। उनका एक-एक पत्र अध्यात्म की निधि है।

प्रथम पत्र में उन्होंने मुझे सहज योग की शिक्षा दी। एक-एक पत्र वेदान्त दर्शन है। लेख के अन्त में उनके द्वारा लिखे प्रेरणाप्रद पत्रों को मैं दे रहा हूं। विशेष लाभ होगा। दुनियादारी के मामलों को लेकर उनसे कभी नहीं मिला। जैसाकि आम लोग करते हैं। और इसीलिये उन्हें महापुरुषों से कुछ नहीं मिलता। बैरंग आते हैं, बैरंग चले जाते हैं।

एक बार मैंने स्वामी जी को छूकर देखा जैसे छूना था कि एक बिजली सी दौड़ गई एक भ्रम टूटा स्वामी जी ने एक पर्चा मुझे दिया उसमें लिखा था "जीवन सूर्य की तरह होना चाहिये।" बहुत बाद में मैं इस वाक्य का रहस्य समझा हूं। स्वामीराम के लगभग सभी भाषणों, लेखों को, हजारों बार बढ़ा। ऐसा लगता है जब भी पढ़िये कोई नई बात ज्ञात होती है। ऐसा लगता है कि आज पहिली बार इसे पढ़ रहे हैं। अगाध समुद्र के द्वार स्वामी जी ने खोल दिये मेरे लिये। उनके पत्रों में विदित होगा आपको यह सत्य।

एक बार एक विशेष बीमारी से पीड़ित हुआ। दवायें ली आराम भी हुआ। एक योगी से मिले बोले— सुबह आइये कुछ आसन आदि करायेंगे होम्यो इलाज भी कराया लाभ न हुआ। अचानक पता चला स्वामी जी अमुक स्थान पर आये हुये हैं, मैं मिलने गया वे प्रसाद रूप में फल बांट रहे थे एक फल मेरी ओर फेंका वह मेरे शरीर के उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग में लगा जहाँ पर रोग था आप सही समझें वह रोग नहीं रहा। आश्चर्यों का आश्चर्य।

स्वामी जी को खूब परखा देखा पाया पूर्ण महात्मा हैं। मस्त हैं। फक्कड़ हैं और अनुभव के स्रोत हैं प्रेरणा के स्तम्भ हैं। कई बार स्वामी जी से कहा शिष्य बना लीजिये। हँस जाते थे एक बार जिद पकड़ ली बोले—"शिष्य नहीं तो क्या तुम मेरे गुरु हो?" हंसकर हाथ कन्धे पर रखकर चलने लगे बोले 'देखो स्वामीराम हाथ से बोलते थे। और तुम्हारा तो मस्तक भी बोलने में काम करता हैं। निश्चय करो तुम तो राम के दीवाने हो।' स्वामी जी से जीवन में थोड़े २ ही अवसरों की मुलाकात में वह सब कुछ मिला है जो उनके हजारों प्रेमियों को जो उनके सम्पर्क में रहते हैं सेवा करते हैं, नहीं मिला होगा। सत्य का ज्ञान। मैं दावे से कहता हूं कि दुनिया में ऊंगलियों पर गिने जाने वाले लोग इस सत्य से परिचित होंगे। जैसा ईश्वर अब तक समझा गया है। जैसी आत्म अनुभूति अब तक जानी गई है वैसी नहीं है। अपने अन्वेषण को स्वामी जी के प्रेरणा पर "वैज्ञानिक आध्यात्मवाद" नाम की पुस्तक में लिखा है। ८-१० पृष्ठों में केवल स्वामी अमरमुनि जी को वह दिखाई, वह बहुत प्रसन्न हुये, कहा भूमिका लिख दीजिये। वह हंस गये। प्रेरणा न होने से उसे प्रकाशित नहीं कराया। कई महापुरुष उसे पढ़कर मन्त्र मुग्ध हो गये। समझता हूं मैं कौन हूं। यह काम तो राम का है। उन्होंने ही रहस्य खोला है, वे ही प्रकट कर देंगे किसी दिन। एक सच्चा आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक मुझे मिला स्वामी जी के रूप में।

स्वामी जी की प्रेरणा पर स्वामी राम पर एक पुस्तक लिखी 'राम जन्म शताब्दी के अवसर पर' एक दिन रात्रि में बुला भेजा, जो लिखा है उसे सुनाओ। सुनने लगे, सुनाने लगे हम, आंखें मूंद कर सुन रहे थे। हमने समझा स्वामी जी सो रहे हैं, चुप हो गये, बोले आगे पढ़ो। अन्त में बोले वाह! बहुत अच्छा। खूब संग्रह है। उसमें स्वामी जी का विख्यात उपदेश भी छपा है उनके चित्र के साथ। आप उसे 'रामतीर्थ दिग्दर्शन' में पढ़ लें। कितना मर्मस्पर्शी है उनका वह उपदेश।

स्वामी जी की बीमारी की खबर राम सन्देश में पढ़ी, तबीयत उदास हो गई उनके अपने बजूद में समाने के कई दिन बाद मैं बीमार हो गया अभी स्वस्थ लाभ किया है। अचानक एक रात्रि में स्वप्न हुआ। देखा स्वामी खड़े होकर प्रसाद वितरण कर रहे हैं, लोग ले लेकर जा रहे हैं, सामने ही शांत भाव से स्वामी अमरमुनि व स्वामी हंसप्रकाश बैठे हैं। मैंने प्रसाद लिया और जाने लगा। वे बोले— 'ठहरो! एक रुपया लेते जाओ मैंने वह एक रुपया लिया। आंख खुल गई उनका हंसता हुआ चेहरा दीख पड़ा। वही मुस्कराहट। मनोविज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते उसके अर्थ किये। समाधान उनके एक पत्र में मिला। जिसमें स्वामी जी ने यूं लिखा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली, ॐ ६-१-७६

परमप्रिय आत्मस्वरूप श्रीमान् श्याम लाल जी शुभ आशीर्वाद हरिॐ। समाचार यह है कि स्वामी राम ने तो व्यष्टि में समिष्टि की भावना की थी। एक उद्देश्य, एक सदस्य, एक की प्राप्ति, एक ही स्वामी राम। स्वामी राम की घड़ी में एक ही बजता था। वह तो एक ही में अनेकता के दर्शन करते थे और भेद में अभेद के। स्वामी राम।

आपका अपना
स्वामी गोविन्द प्रकाश

आप ही सोचिये स्वप्न में उनका एक रुपया देने की बात का क्या अर्थ है ?

युगद्रष्टा, महान सन्त, परमहंस परिव्राजक, त्याग मूर्ति, समन्वयवादी, ज्ञान-विज्ञान के संगम, श्रीमान् परम पूज्य श्री स्वामी जी को कोटिशः प्रणाम। आप स्थूल शरीर से नहीं है। किन्तु आप अधिक शक्ति से पहिले से कहीं अधिक निकट हैं। क्या स्वामी जी चले गये ? क्या स्वामी जी चले गये। क्या मौत आ गई ? नहीं नहीं ?

वह डर से मेहर आ चमका अहा।
उधर मह बीम पै लपका अहा॥
हवा इठकेलियां करती हैं मेरे इक इशारे पर
है मौत पे मेरा कोड़ा अहा! अहा!!

सोचता हूं राम को या आपको या दोनों। पहिले किसका अभिवादन करूं और अब यह पंक्ति निकल पड़ी है अन्तःकरण से।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो मिलाय

प्रेम से बोलिये–

स्वामी गोविन्द प्रकाश! अमर हैं!!

उनके पत्र व्यवहार को प्रसंग अनुसार अगले अंक में भेजेंगे। यहां कलम इजाजत लेती है। ॐ। ॐ!! आनन्द!

श्रद्धान्जलि

जब तक चाँद, सितारे नभ में
अजर अमर तुम अवनी तल में
धर्म नीति का पालन करते—
वाणी गूंज रही भू-नभ में।

भक्तों के गल हार तुम्ही थे,
वेद-कथा आधार तुम्ही थे
सत्य, अहिंसा जीवन सम्बल—
दुखियों के आधार तुम्हीं थे।

सत्य ज्ञान की जोत जगा के,
भूलों को सन्मार्ग दिखाके,
अंधकार को दूर हटाया—
जन मन में अनुराग जगा के।

धर्म शिरोमणी औ' मृदु-भाषी
काम, क्रोध, मद लोभ विनाशी;
पर सेवा रत, सत पथ गामी-
तुम थे वीत राग संन्यासी।

— मंगला नन्द नौटियाल 'अभागा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

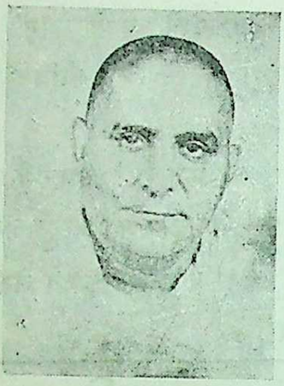

श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज की एक दिव्य झांकी

(प्रबोध चतुर्वेदी)
सचिव स्वामी रामतीर्थ मिशन
एवं भगवान राम मन्दिर
प्रयाग

भारत के प्रमुख सन्त शिरोमणी वेदान्ताचार्य श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज का पार्थिव शरीर उनके आराध्य स्वामी रामतीर्थ का अनुकरण करते हुए गंगा जी की पावन धारा में दि० २०–६–७७ को समाधिस्थ हो गया। स्वामी जी ने अपने नाम अनुरूप ज्ञान के प्रकाश – स्तम्भ होकर गोविन्द (ब्रह्म) के प्रकाश (ज्ञान) को सर्वत्र प्रकाश-मान कर दिया। उनके उपदेश बड़े सारगर्भित, सरल, शेर मधुर होते थे। स्वामी जी की कथनी और करनी के एक होने के कारण उनके उपदेश सीधे जाकर मानस पटल से प्रतिध्वनित होकर हृदयाकाश में पूरित हो जाते थे। स्वामी जी इतने सर्वप्रिय थे कि हर मानव को जो उनके सम्पर्क में आया यही अनुभव हुआ कि सबसे अधिक वही स्वामी जी का प्रेम पात्र है। निर्लेपता, उदारता, और सादगी की तो वे साक्षात मूर्ति थे। कुम्भ के समय राम प्रेमियों ने उनको प्रचुर मात्रा में धन दिया जिसके द्वारा स्वामी जी ने बड़ी उदारता से हजारो लोगों को नित्य प्रति भंडारा दिया। धन्य है स्वामी जी की उदारता को कि चलते समय समस्त अवशेष धन को प्रयाग में ही धर्म संस्थाओं, विद्यार्थिओं आदि को वितरण करके खाली हाथ वापिस गये। कुम्भ के अवसर पर ही स्वामी जी ने श्री स्वामी हंस प्रकाश जी को महामण्डलेश्वर के पद पर आरूढ़ करा कर रामतीर्थ किशन का कार्य भार समर्पित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। अपने जीवन काल में गद्दी (कुर्सी) का छोड़ना हम संसारी लोगों को बड़ा असाधारण प्रतीत होता है, अतः मैंने स्वामी जी से यह उत्कंण्ठा व्यक्त कर ही दी थी तो उस वैरागी सन्त ने मुस्कराते हुए कहा कि "यह तो हमारे स्वामी राम की निर्लेप परम्परा का एक प्रतीक मात्र है"। स्वामी जी धुरन्धर विद्वान थे, विदुषी गीता भारती उनको अपना शिक्षक कहती थी; स्वामी जी की सादगी पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी, उनके वस्त्र सादे और खादी के मोटे होते थे, उनको फटे पुराने का कुछ आभास नहीं था जब तक कोई संकेत न करे या देखकर स्वयं हटाकर बदल न दे। अन्तिम समय राजपुर से जाते समय कुछ निजी सामान वितरण कर गये थे। स्वामी जी के जिस पहलू पर दृष्टि जाती है वही सर्वोच्च दीखता है, जिसमें उनका "सर्वभूतहितेरताः" का स्वभाव आता है। उनका सारा जीवन ही दूसरों के हित में था। उन्होंने भारत भर में विद्यालय, औषधालय, इत्यादि जनता जनर्दिन की सेवा में स्थापित तथा संचालित किये। एक पीड़ित निराश और किंकर्तव्य विमूढ़ मानव के कर्ण-धार बनकर, कर्मण्यता के अमृतमय दिव्य सन्देश द्वारा, तथा साहस एवं शौर्य की अलौकिक भावना स्थापित कर प्रेम और शान्ति की धारा बहा दी।

अंगीठी ठण्डे कमरे की हवा में उष्णता लाती है और अंगीठी के कोयले समाप्त होने पर अंगीठी की सारी उष्ठाता कमरे को मिल जाती है। अंगीठी के कोयले मर गये लेकिन अपनी उष्णता सम्पूर्ण कमरे को प्रदान कर गये। इसी प्रकार स्वामी जी का दिव्य जीवन उनका शरीर शान्त होने के बाद अधिकाधिक व्यापक होकर सम्पूर्ण होगा। और वह ब्रह्मलीन आत्मा हमको अपने आत्म-स्वरुप का बोध करा देगी। स्वामी जी ने अन्तिम सन्देश देते हुए कुम्भ में कहा था "सत्य की धारणा से शक्ति और विजय मिलती" देहाध्यास तो मनुष्य को पतित बना डालता है। इस कथनी के अनुरूप यहां बीमारी में भी प्रवचन आदि सेवाऐं करते रहते थे।

अतः मैं अपने कर्णधार के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करता हूं कि वह शान्ति पूर्ण दिव्य आत्मा प्रभु के चरणों में अमरता प्राप्त करती हुई हम लोगों को भी शान्त पथ पर अग्रसर करती रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण :

"वियोगी होगा पहला कवि,
आह से ऊपजा होगा गान
उमड़कर आंखो से चुपचाप,
बहो होगी कविता अनजान ।।"

न तो मैं कवि हूं और न ही मैं कविता की रचना कर रहा हूँ, बल्कि मैं तो एक ऐसा तुच्छ सेवक हूँ जिसे पूज्य स्वामी गोविंद प्रकाश जी महाराज की ब्रह्मलीनावस्था ने अचानक ही इस ओर प्रेरित कर दिया है कि अपनी ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए अपनी चिरस्मरनीय घटना का दूसरों को भी ज्ञान करा सकू ।

मैं दिल्ली में रहता हूँ, तथा गत पांच-छः वर्ष पूर्व मैं राजपुर रोड़ पर स्थित इस आश्रम से परिचित हुआ था । हम लोग प्रायः प्रत्येक वर्ष मई में वहां पर जाते थे इस वर्ष कुछ आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों के कारण मेरा वहाँ जाना न हो सका । इसी घटना को स्मरण करते हुए मैं जून में अपने व्यापार के सिलसिले में जयपुर जा रहा था जिस स्थान पर मैं गाड़ी में बैठा हुआ था उसी स्थान से स्वामी जी निकले । एक बार तो उन्हें देखकर मैं आश्चर्य चकित हो गया मुझे विश्वास ही न हो सका कि यह स्वामी जी हैं, लेकिन फिर भी मैं अपने भ्रम को दूर करने लिये उनके पीछे-पीछे गया । उन्होंने मुझे तत्काल ही पहचान लिया । मैंने उनके चरण-स्पर्श किये तो उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया ताकि मैं अपने कार्य में सफल हो सकूँ । उनकी इस ब्रह्मलीन अवस्था पर जब-जब मैं विचार करता हूँ वह ट्रेन घटना मेरे आंखों के सामने आकर उनके व्यक्तित्व को साकार रूप में प्रस्तुत कर देती है । धन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112394

है वह मां, जिसने भारत-वर्ष की एक ऐसी महान् विभूति प्रदान की। हम सब की ओर से उन्हें शत-शत प्रणाम है। अब तो यही कहा जा सकता है —

"हाले दिल हम भी सुनाते लेकिन,
जब वो रुख्सत हुए तब याद आया।"

विजय कुमार ड़ंग

के-सी/१-सी, अशोक विहार
डी-डी-ए फलेट
दिल्ली-५२

सच्ची घटना

लगभग जुलाई का पहला रविवार था मैं तैयार हो कर अपने बरामदे में, जो कि सतसंग भवन के नजदीक ही है, कीर्तन सुनने के लिये बैठ गया। इस बीच मेरे मन में ख्याल आया कि स्वामी जी के दर्शन कैसे करूंगा, क्योंकि मेरे पैरों में तकलीफ है और मैं चलने फिरने से असमर्थ हूं, इसीलिये मैंने ईश्वर से विनती की कि स्वामी जी के दर्शन यहाँ पर हो जांय तो कितना अच्छा है,और मैं कीर्तन की तरफ ध्यान करके बैठा रहा, करीब आधे घंटे के बाद स्वामी जी स्वयम् पैदल ही चलते हुए हमारे घर पहुंचे। उनकी चरण बंदना करने के बाद मैंने अपनी यही बात कही, कि मैं थोड़ी देर पहले याद ही कर रहा था और आप स्वयं ही पधार गये, मेरा मन खुशी से इतना गद्गद हो गया कि उसका वर्णन करना मेरे लिए असंभव ही होगा।

जैगोपाल
बिन्द्राबन एवं पुत्र
राजपुर रोड़, देहरादून (उ०प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

स्वामी परम प्रकाश रामामणी
परमहंस सतसंग भवन
गोशाला रोड, सहारनपुर (यू.पी.)

सहारनपुर के गोशाला रोड स्थित परमहंस सत्संग भवन के ऊपर वाले कमरे में भोजनोपरांत मैं शयन के लिए लेटा था कि एकाएक मेरे ठीक सामने वाले कमरे से आवाज आयी। परम प्रकाश जी, परम प्रकाश जी, जरा जरा जल्दी आइये मैं कटिवस्त्र पहने था अत एक बडा कपड़ा कमर में लपेट ही रहा था पुनः वही आवाज आयी मैं भाग कर गया। तो स्वामी जी बोले-मुझे पसीना बहुत आ रहा है मेरा दिल कैसा हो रहा ।आप फौरन डाक्टर बुलाइये। मैंने नीचे बैठे रामपाल को खबर दी। स्वामी जी कहने लगे. मेरे पीठ में विक्स मल दो। बिटामिन बी कम्पलेक्स दो।

यह बात२६ अगस्त ७७ ८। सांय की है।

इतने में स्वामी के बाहों में दर्द हुआ मैं बांह दबा ही रहा था कि महाराज कृष्ण जी तथा प्रभाती राम जी डाक्टर ने जांच किया। सोने की स्थिति में स्वामी जी नहीं थे। फिर नींद की दवा खिलाई तो स्वामी जी को नींद आ गयी उस रात स्वामी जी के कमरे में ही मैं सोया रात में भी स्वामी जी को पीड़ा होती रही। २७.८.७७ को फोन से देहरादून से प्रेम को बुलाया गया। फिर एक सज्जन (सम्भवतया काका ही थे सफेद वस्त्र तथा दाढी-केश थे) के साथ प्रेम आए। मैंने कहा कि ३१. ८. ७७ तक तो मैं यहां हूँ। सेवा करु ंगा। फिर एक रात रह कर प्रेम स्वामीजी कि आज्ञा से देहरादून चले गए। स्वामी जी की बेचैनी वाली हालत तो नही रहीं लेकिन शारीरिक पीड़ा चल रही थी डाक्टर के बहुत कहने पर भी तथा मेरे रोकने पर भी सत्संग में १५–२० मिनट बोलते थे आनन्दमयी मां के यहां से जब सूखा मेवा तथा पत्र आया तो सब मुझे दे दिया। मैंने थोड़ा ले लिया। स्वामी जी मिशन में मुझे चलने को कह रहे थे। लेकिन मैं मजबूर था क्योंकि एक सितम्बर में मेरा कार्यक्रम दिल्ली का था। ओर अब मैं यहां उसी कमरे में ठहराया गया हूँ जिस कमरे में स्वामी जी थे। लेकिन अब मुझे यह कमरा एक वीरान, लगता है हां स्वामी जो थे तब यह चमन लगता है खैर यहां २२. १०. ७७ तक तो रहना ही है क्योंकि पहले से कार्यक्रम निश्चित जो। " मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ": यह कहते तो हैं आने को लेकिन यह प्रत्यक्ष देखा H. H. स्वामी M .M. गोविन्द प्रकाश जी महाराज में। मस्त, शरीर की परवाह नहीं अपनी मस्ती में मस्त। हंस रहे हैं बात कर रहें है। २७. ८. को कहने लगे कि मुझे पत्र लिखने थे मैंने कहा कि आप मैटर बता दें मैं लिख दूगा तो कहने लगे अब क्या करना पत्र से बहुत लिख चुका। मैं स्वामी जी के इशारे को समझ न सका आज स्वामी जी स्मृति मेरे सामने घूम रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधन स्मृति समारोह—श्री रामतीर्थ आश्रम

सम्मेलन ६.१०.७७

मैं दीर्घ अवधि से स्वधर्म (सनातन) मर्यादा तथा राष्ट्रीय संविधान प्रतिष्ठास्थापन दृष्टिवत हेतु यहां श्री रामकृष्ण आश्रम—राजपुर मार्ग: में हूँ। ६ अक्टूबर को जब स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने मुझे आश्रम पर परम अर्चनीय स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के निधन समारोह के अवलोकन के लिए कहा तो मैं यहां आश्रमाध्यक्ष महाराज की आज्ञा से उनके साथ उपरोक्त निधन समारोह में सम्मिलित हुआ सम्मेलन में मुझे क्या प्रेरणा मिली उस अव्यक्त को मैं यहां व्यक्त करने का प्रयास करता हूँ :—

आश्रम के नवीन मन्दिर के आंगन में सन्तों के समक्ष बहुत से सज्जन भाई बहिन भक्त वर्ग एकत्रित थे। भारतीय धार्मिक प्रतिबिम्ब ! इसके एक छोर पर जहां सन्त श्री गोविन्दकारता में रमजित थे वहीं भक्त वर्ग शोक श्रद्धाञ्जली देते हुये मानों डूबते से जा रहे थे: और निकटवर्ती सन्तों की पंक्ति को भी वह शोक-लहर आंखों तक स्पर्श करती प्रतीत होती थी ! सभी सम्मिलित सन्तों और सज्जनों ने हृदयस्पर्शी श्रद्धाञ्जलियां स्वर्गीय श्री गोविन्द प्रकाश जी को सादर अर्पित की। निस्सन्देह हो किसी सन्त का यह कहना कि: धर्म और देश की उन्नति के केवल मात्र राष्ट्रीय स्तम्भ हैं।—

'सती सन्त और सूर" का यह अति उत्तम उपदेश ही स्मृति समारोह की स्मृति को चिर-स्थाई करता है। इस आश्रम से मैंने केवल मात्र यही ग्रहण किया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ !!

समारोह में जहां श्री महन्त इन्द्रेशरण दास जी की यह आकांक्षा कि आपकी संरक्षता में आश्रम खूब "फूल फले" सुनने में भी आई वहीं आपको बधाई देते किसी सुहृद् सन्त को आपसे "उरमिला" देखा, वह दृश्य मानो अभिन्न आत्मा के समायोजन का अति उर्जित उपदेश हो!!! फूलने फलने की आकाँक्षा पर श्री गीता जी का ही आश्रय उचित प्रतीत हो—

"कर्मण्येऽवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

यहां जब अजित महाराज जी ने मुझ से पूछा कि तुमने समारोह में क्या देखा ? तो मैंने उन्हें यह उत्तर दिया :—

"विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।"

समारोह उपलक्षीय श्रद्धाञ्जली व आत्मीय बधाई युत...

—धीरज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्तिम दिवा-रात्रि

स्वामी सत्य प्रकाश

१६ सितम्बर का दिन न जाने कौन सी कालिमा व मलिनताओं को एकत्र करके आया था हमारे बीच से एक दिव्य ज्योति, अनन्य प्रकाश, साधु समाज का स्तम्भ, एक अनुपम प्रतिभा, देदीप्यमान मुख, केसरिया, चन्दन से चर्चित उन्नतललाट तथा तेजस्वी आंखें, ओजस्वी भाषण और भव्य मुस्कान को हमसे सदा के लिये छीनकर ले गया। घर में माता पिता भाई बहिन इनके बीच में से कोई एक जब चला जाता है तो उस समय क्या दशा होती है, लेकिन जिस व्यक्ति का माता पिता भाई बहिन सभी कुछ गुरु ही हो और वही न रहे तो इस क्षति का अनुमान लगाना एकमात्र व्यर्थ की कल्पना करना है। पूज्य गुरुदेव में सभी गुण विद्यमान थे, जो भी कोई व्यक्ति एक बार भी उनके सम्पर्क में आ जाता था वह यह कहे बिना न रह सका कि स्वामी हमसे बहुत स्नेह करते हैं। वह साक्षात प्रेम के पुञ्ज प्यार की मूर्ति थे। संस्कृत जगत का और आध्यात्म जगत का ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो उस महापुरुष को न जानता हो, एक बार पूछने पर कि आप रात दिन भागते रहते हैं कभी तो एक दो माह चुपचाप एकान्त वास, आराम कीजिये। कहने लगे कि इस शरीर से जितनी भी सेवा समाज की हो सके उतनी कर देनी चाहिये इसी में ही मैं आराम और सुख शांति का अनुभव करता हूं। हजारों विद्यार्थियों की अर्थ वस्त्र से सहायता करना उनकी स्वाभाविक प्रकृति बन गई थी। कहीं भी किसी भी विद्यालय का छात्र हो अगर सुन लेते थे कि पढ़ने में तेज है है उसे उत्साहित कर अर्थ वस्त्र देकर प्रसन्न कर दिया करते थे।

वास्तव में जैसा उनका नाम वैसा ही गुण था। उनके सामीप्य मे सदा आनन्द ही प्राप्त होता था कभी भी चेहरे पर उदासीनता देखने को नहीं मिली, मृदु स्वभाव, मन्द-मन्द मुस्कान, शीतल स्वभाव, शांतिपूर्ण व्यवहार जब याद आता है तो मन में शक होता है कि स्वामी जी शायद अब भी हैं। उनका चमकता हुआ व्यक्तित्व और स्नेह, बच्चे, युवक, वृद्ध सभी को स्वयं अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। काल का इतना कठोर हृदय निकला कि वह सदा के लिये उनको साथ लेकर चला गया। हो सकता है जितनी आवश्यकता हमें थी उससे कहीं ज्यादा उसे थी जिसने इतनी जल्दी बुला लिया। महाराज श्री जाते-२ इतना प्यार दे गये कि जीवन पर्यन्त भुलाया नहीं जा सकता।

जब उनका प्यार याद आता है तो इस करूणा भरे दर्दीले हृदय पर एक अजीब सी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदासी सूनापन न जाने कैसा लगता है। वह १८ सितम्बर की रात आखरी रात ही बन कर रह गई। मैं महाराज श्री की सेवा में था, स्वामी जी के रात्रि के १० बजे सो जाने के बाद ठीक ११-३० पर नींद खुल गयी और फिर मुझसे बातें करने लगे मैंने संकेत दिया कि जब डाक्टरों ने मना किया है कि बोला न कीजिए फिर आप मानते ही नहीं। कहने लगे "मेरे बेटे जब तक प्रारब्ध कर्म में जीना-मरना लिखा है न डा० बचा सकता है और न बढ़ा सकता है।" फिर कहने लगे कि अभी स्वामी हरिॐ जी तथा स्वामी प्रेमानन्द जी स्वप्न में कह रहे थे कि स्वामी गोविन्द प्रकाश अभी तक आप यहां पर क्या कर रहे हो और मुझे कुछ अपने आप बोलने की आदत पड़ गई है न जाने क्यों इत्यादि। मैं महाराज श्री की ओर से छात्रों को वृन्दावन में कुछ अर्थ वस्त्र बांटने तथा स्वास्थ लाभ के लिए पाठ रखवाने जा रहा था लेकिन उस समय कुछ जाने में बाधाएं सी उत्पन्न होने लगी और मैं जाने से रुक गया। महाराज श्री दोपहर १२ बजे तक बिलकुल ठीक स्वस्थ एवं प्रसन्न थे। उसके बाद उन्हें दर्द महसूस हुआ। उसी समय श्री स्वामी अमर मुनि जी महाराज डा० सोबती जी को लाये और मैं लाल जी को लाया देखने के बाद डाक्टरों ने कहा कि स्वामी जी को आज भर्ती कर दिया जाय। इतना कहकर बातचीत करके डा० सोबती जी जा ही रहे थे, कि अचानक उन्हें दिल का दौरा पड़ा उन्हें लेकर मैं, श्री भण्डारीजी तथा स्वामी बालानन्द जी गाड़ी में रखकर अस्पताल ले गये और आश्रम के कुछ ही दूरी पर चलने पर वह सदा के लिए परमात्मा की गोद में सो गये, अपने स्वरूप में लीन हो गये, जो बात वह कहा करते थे वह आज सत्य सिद्ध हो रही है कि—

हजारों महफिले होंगी, हजारों कारवां होंगे।
निगाहें हमको ढूंढ़ेगी, न जाने हम कहां होंगे॥
कर्म अच्छा कर लो, अच्छी जिन्दगानी आपकी।
लोग भी सीखें सबक, सुनकर कहानी आपकी॥

❃ ★ ❃

ज्ञान-रश्मियाँ

१—ईश्वर प्रेम है—यदि हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं, तो ईश्वर हममें रहता है।
—ईसा मसीह

२—पहले हृदय को जीतो, फिर बुद्धि को समझाओ। जहां तर्क काम नहीं देता, वहाँ प्रेम सफल हो सकता है।
—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी जी !

—भगतराम जेतली

१६ सितम्बर १६७७ का दिन क्या था कि एक पहाड़ टूटा स्वामी रामतीर्थ आश्रम पर, खास तौर से और सारे देश व रामप्रेमी जनता पर भी, जैसे ही यह सूचना मिली कि पूज्य श्री गोविन्द प्रकाश जी का शरीर देहली में छूट गया है। जो भी सुनता उसे विश्वास ही न आता फिर उनके अन्दर से एक आवाज निकती आह स्वामी जी। यह दशा देहरादून निवासियों की भी हुई। ब्रह्मलीन स्वामी हरि ओ३म् जी महाराज भी देहली गये तो फिर लौट कर नहीं आये। स्वामी हरि ओ३म् जी महाराज ने यह कहा था कि अगले सालाना - सम्मेलन में मेरा शरीर न होगा तो लोगों ने वहां फूट फूट कर रोना शुरु कर दिया था। तब उन्होंने स्वामी गोविन्द प्रकाश जी की ओर इशारा करते हुए कहा था कि यह महापुरुष आपको मेरे से भी अच्छा पथप्रदर्शन देगें। विधाता ने उनको, स्वामी हरिओ३म् जी महाराज को तो उठा लिया और स्वामी गोविन्द प्रकाश जी को हमें दे दिया।

जैसा ब्रह्मलीन स्वामी हरिओ३म् जी ने कहा था स्वामी गोविन्द प्रकाश जी ने उससे भी बढ़ के दिखाया।

कैसी महान विभूति थे वे अपनी अल्पायु में वे कितना बडा काम कर गये रामतीर्थ मिशन के लिए भारत के मानव के लिए। नहीं नहीं केवल भारत के लिए ही नहीं अभी अभी एक वर्ष पूर्व ही कुवैत, जर्मनी, फ्राँस और इन्गलैण्ड आदि देशों में भी भ्रमण करके, वहां भी वेदान्त का डन्का बजाया और उन देशों के रहने वालों ने भी जाना कि भारत में आज भी ऐसे महान तपस्वी है जिनके कारण भारत किसी समय जगद्गुरू था। वे त्यागमूर्ति संन्यासी और सच्चे अर्थों में महात्मा थे।

जब कभी भी कोई उनसे मिलने जाता तो उस प्राणी का स्वागत करते हुए पहले शब्द वे यही कहते आओ आओ भगवन! आओ नारायण! गीता के अनुसार वे नित्य संन्यासी थे- ज्ञेयः स नित्य संन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति। उनका अभी तक किसी से द्वेष नहीं देखा गया बडा हो या छोटा, अमीर हो या गरीब सबके प्रति उनकी धारणा थी —

सिया राममय सब जग जानी
करहुं प्रणाम जोरि जुग पानी।

त्याग का ये आलम था कि कभी भी उन्होंने कुछ मांगा नहीं मगर फिर भी लाखों रुपये आते रहे और आश्रम की उन्नति पर लगते रहे। साथ साथ एक बड़ा विशाल हाल भी देहरादून में बनवाया। मिशन की अन्य शाखाओं ने जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्नति की उसके लिए प्रत्यक्ष ही प्रमाण है

महाराज श्री ने अपने जीवन-काल में सेवा को ही सर्वप्रथम स्थान दिया वे कहा करते थे जनता की सेवा ही जनार्दन की सेवा है। सर्वभूत हिते रताः—के आदर्श को ही व्यावहारिक रूप देने के लिए ही अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उनके द्वारा नेत्र चिकित्सा शिविर का संकल्प किया गया और उसे पूर्वतः साकार रूप प्रदान के लिए आदेश दिया गया परन्तु विधि का बिधान सानुकूल न था।

तुल्य निन्दा स्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्—राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है, यहाँ यूं भी वाह-२ और यूं भी वाह वाह हर हाल में सन्तुष्ट रहते हुए सदैव प्रसन्न रहना कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि यह तो उनकी प्रकृति थी।

उनका पार्थिक शरीर तो अब हमारे बीच में नहीं परन्तु उनका बताया हुआ रास्ता और सुन्दर विचार जो एक महान पुरुष बताया और सुनाया करते हैं वे तो हमारे कानों में सदा के लिए हमें प्रेरणा देते रहेंगे। हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि अपने सतगुरु के प्रति यही हो सकती है कि हम उनके बताये हुए रास्ते पर चलें और अपने जीवन को सफल बनावें और फूलों की तरह वेदान्त की सुन्दर खुशबू अपने चारों ओर फैलावें।

★

त्याग

वेदान्तिक त्याग कैसे हो ? आपको सदा त्याग की चट्टान पर खड़ा होना पड़ेगा, अपने आपको इस उत्कर्ष दशा में दृढ़ता-पूर्वक जमा कर, जो काम सामने आये, उसके प्रति अपने आप को पूर्णतः अर्पण करना होगा। तब आप थकेंगे नहीं, फिर कोई भी कर्त्तव्य हो, आप उसे पूरा कर सकेंगे।

— — —

त्याग का आरम्भ सबसे निकट और सबसे प्रिय वस्तुओं से करना चाहिये। जिसका त्याग करना परमावश्यक है, वह है मिथ्या अहंकार अर्थात् 'मैं यह कर रहा हूँ', 'मैं कर्ता हूँ', 'मैं भोक्ता हूँ' — यही भाव हममें मिथ्या व्यक्तित्व को उत्पन्न करते हैं—इनको त्याग देना चाहिए।

— — —

जंगलों में चले जाना उद्देश्य-प्राप्ति का केवल एक साधनमात्र है, जैसे हम विश्वविद्यालय में पढ़ने जाते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभयत्र शस्तु दि० १६-६-७७ को परमादरणीय म०मं० श्री १०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये। अत एव स्वामी हंस प्रकाश जी को अकस्मात् कलकत्ते से प्रस्थान करना पड़ा है" इस हृदय विदारक समाचार को विरक्त स्वामी कृष्णानन्द जी के मुख से सुनकर असह्य वेदना हुई। ब्रह्मलीन श्री स्वामी जी महाराज केवल रामतीर्थ मिशन या उत्तराखण्ड साधु समाज के ही नहीं। अपितु सम्पूर्ण भारत और विश्व के आध्यात्मिक प्रेमी के लिये श्रद्धेय तथा पथ प्रदर्शक थे। वे सबको आत्मीय प्रतीत होते थे। वसुधैव कुटुम्बम् की जीती जागती साक्षात् मूर्ति थे। इनके अभाव में हम अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्तर पर सूनेपन का अनुभव कर रहें हैं। सर्वान्तर्यामी विश्व नियन्ता परमात्मा से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि वे अपना तेज एवं उत्साह धर्म तथा अध्यात्म ज्ञान प्रचार के लिये आप में और अपने अन्य कृपापात्रों में उड़ेल डालें। बस इन्हीं शब्दों के साथ ब्रह्मलीन श्री स्वामी जी महाराज के प्रति हमारी भूरिशः श्रद्धाञ्जलि है।

भवदीय
स्वामी विद्यानन्दगिरि

आपके दोनों पत्र मिले, परमाध्यक्ष श्री गोविन्द प्रकाश जी महाराज के ब्रह्मलीन होने से साधु समाज में से एक महान पुरुष उठ गया। साधु समाज की अपूरणीय क्षति हुई। उनमें सन्त गुण करूणा मैत्री मुदिता, भर पूर थी। समत्व योग की सजीव मूर्ति थे। उनकी प्रतिभा अप्रतिम थी। अपने ध्येय की साधना में उन्हें सदा ही सफलता मिलती रही। स्वयं विद्वान विद्यानुरागी विद्वत्समाज के प्रिय पात्र थे। उनसे साधु समाज सदा प्रसन्न रहता था। जहां भी पहुंचते वहाँ प्रकाश आ जाता रहा जीवन में सादगी विचार ऊंचे आचारण शुद्ध था। मेरे तो बहुत हितैषी एवं सुहृद थे। उनके वियोग में दुःखी जनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि सर्मपित करता हूं स्वयं उपस्थित न हो सका इसका मुझे खेद है, आप मेरी विवशता से अवगत है।

आपका
शुभेच्छु
बालकृष्णयति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मिशन के परमाध्यक्ष परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्री १००८ गोविन्द प्रकाश जी महाराज के आकस्मिक देहावसान की सूचना पाकर कोई भी सहृद-हृदयी निर्विकार नहीं रह सकेगा । क्योंकि श्री स्वामी जी की वह मिलनसार प्रकृति सभी को आकर्षित कर देती थी । लोक में किसीका भी जीवन स्थिर नहीं है किन्तु कुछ महान विभूतियों का अभाव लोक कल्याण की दृष्टि से अपूरणीय क्षति जान पड़ती है । अपने श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के कार्य-कलापों को देखकर हम इनको उन्हीं महात्माओं की श्रेणी में गिनते है, जो लोग अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को लोक-कल्याणार्थ विनियोग किये थे । इस महान-विभूति के आत्म-शान्त्यर्थ हम लोग (टेकरामठ के सभी सदस्य गण) श्री बाबा विश्वनाथ जी से प्रार्थना करते हैं और उस अमर आत्मा की अनुकम्पा की अभिलाषा करते हैं ।

आपका
शिवानन्द

मिलत एक दारुन दुखः देहीं
बिछुरत एक प्राण हर लेहीं

दिन के बाद रात्रि, रात्रि के पश्चात दिन का आना स्वाभाविक है । किन्तु दिन के न होने पर साधु पुरुषों को कष्ट होता है । केवल भूत-पिशाच, चोर, डाकू आदि राक्षसी प्रकृति के लोग ही रात्रि में आनन्दित होते हैं । साधु पुरुष तो भगवान् भास्कर की प्रभा से ही पुलकित होते हैं, रात्रि के निविड़ तम से नहीं ।

जीवन और मरण दोनों सभी भूतों में व्यापक हैं परन्तु उन्हीं का जीवन सहनीय होता है जिनके वियोग को साधु पुरुष सहन न कर सकें । वे ही महापुरुष धन्य हैं जो सुजन एवं दुर्जन दोनों से प्रशंसित हों एवं जो अजातशत्रु हों । जिनके नाम पर प्रेमाश्रु स्वतः छलक पड़े, वे महापुरुष शरीररहित होकर भी चिर जीवित रहते हैं ।

ब्रह्मलीन श्री गोविन्द प्रकाश जी, जिनके दर्शन मात्र से सूर्य रहते हुये भी संसार अन्धकार से घिर गया, भक्त चकोर चन्द्र बिना बेचैन हो गये गोविन्दस्वाति जल बिना शिष्य-चातक तड़फने लगे, सरस्वती अनाथ हो गई, धर्म आश्रयहीन हो गया, दान मृत्यु तुल्य हो गया, लक्ष्मी भाग्यहीन हो गई, सन्त-समाज शोभाहीन हो गया एवं रामतीर्थ मिशन सदा के लिये प्रवञ्चित हो गया, हमारे अन्तरङ्ग आत्मा, हृदय एवं प्राण थे । उन जैसा विलक्षण महामानव आज तक मैंने नहीं देखा । गम्भीरता में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र जैसे, क्षमा में पृथ्वी जैसे, दान में शिवि-दधीचि जैसे, व्यवहार कुशलता में बृहस्पति जैसे थे वे महापुरुष। क्रोध तो उनके पास फटकने भी नहीं पाता था। सदा चन्द्रवत् प्रसन्न मुद्रा में वे रहते थे। पञ्चत्व का दुःखद समाचार सुनकर मैं अवाक् एवं दिग्भ्रान्त हो गया। मैं अपनी वेदना शब्दों से वर्णित नहीं कर पा रहा हूँ। उनका वह मृदु व्यवहार, भोला स्वभाव एवं मेरे प्रति ऊनका अगाध प्रेम मेरे मन को अति व्यथित करता है। मैंने कभी यह सोचा ही नहीं था कि क्रूर काल के विकराल पञ्जे महामानव को संसार में अधिक दिन नहीं रहने देना चाहते।

वे मेरी संस्थाओं में पढ़े-लिखे थे। पढ़ते समय ही अपनी बुद्धि की प्रखरता सर्वत्र बिखरते रहते थे। मेरी संस्थायें उनके प्रयास से बहुत ही चमक गई। न जाने ये अभागिनी संस्थायें उनके वियोग कैसे सहन करेंगी? विशेष रूप से रामतीर्थ मिशन को उनका अभाव कभी भी सहन नहीं हो सकेगा। वस्तुतः उनके प्रयास से मिशन का बहुत ही प्रचार एवं प्रसार हुआ। लोग मिशन को श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे थे।

उनकी अभावरूपी क्षति किसी भी प्रकार से पूरी नहीं की जा सकती है। हजारों तारिकाएं सूर्य के बराबर प्रकाश नहीं कर पाती हैं। फिर भी हमें आशा है कि उनके द्वारा आरम्भ किये गये उदार धर्म-आन्दोलन, विद्यादान धनदान आदि सदा चलते हुए उनकी अव्याहत कीर्तिमान करते रहेंगें। उनके शिष्य एवं भक्तगण उनके दिव्य-सन्देशों को देश-देशान्तर तक फैलायेंगे।

मेरे पास ऐसे शब्द ही नहीं दिखलाई देते हैं जिनके द्वारा मैं अपनी प्रिय आत्मा, परस्नेही, स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के बारे में कुछ कह सकूं। जब ही शब्द कुछ कहने को तैयार होते हैं तभी स्मृति नेत्रों में शोकाश्रु उड़ेल कर मौन हो कर उन्हीं के स्मरण में विलीन रहने को प्रेरित कर देती हैं।

विश्वनाथ यति
डी. ५४।१ टेकरामठ
जट्टू मण्डी, वाराणसी

त्याग

आप कोई कर्तव्य करने के लिए वाध्य नहीं; आप किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं, आप को कोई ऋण नहीं चुकाना है, आप किसी से बंधे नहीं हैं। आप अपने व्यक्तित्व को सभी समाजों और राष्ट्रों और प्रत्येक वस्तु के सामने प्रतिपादन करो। यही वेदान्तिक त्याग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

....!

परमाध्यक्ष जी स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के आकस्मिक ब्रह्मलीन होने का समाचार वृन्दावन में स्वामी अखण्डानन्द के एक ब्रह्मचारी ने बताया जब कि हम दिल्ली से प्रयाग आ रहे थे। आज प्रयाग पहुंचने पर हमें आपका भेजा पत्र भी मिला, उससे ज्ञात हुआ कि १६ सितम्बर को श्रद्धेय स्वामी जी अपने पञ्चतत्त्व युक्त शरीर को त्याग कर ब्रह्मलीन हो गये। हमें खेद और आश्चर्य दोनों हुआ कि हम देहली में २८ सितम्बर तक रहे लेकिन किसी ने नहीं बताया यद्यपि रामतीर्थ आश्रम के बहुत लोग यहां रहते हैं। २६ सितम्बर को चातुर्मास समाप्त कर हम मथुरा वृन्दावन होते हुए २ सितम्बर को प्रयाग पहुंचे। शरीर मलेरिया से ग्रसित है। रास्ते में से ही ज्वर की शिकायत हो गयी है, यदि स्वास्थ्य ठीक रहा तो ५ अक्टूबर को देहरादून प्रातः पहुंच कर श्रद्धेय श्री स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि समर्पित करूंगा। अन्यथा हमारी मानसिक रूप से उपस्थिति स्वीकार करें। परमाध्यक्ष ब्रह्मलीन श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी को हमारी ओर से सादर श्रद्धाञ्जलि समर्पित करें। हमें बड़ा धक्का लगा है ऐसे महापुरुष जो रास्ते चलते–२ भी अपरिचित व्यक्तियों को भी अपने प्रेम मयी वाणी से प्लावित करते रहते थे। मिशन को उन्होंने विशाल रूप देकर भक्तों के लिए कल्प वृक्ष के समान अपने प्रेम प्रसाद से प्रोत्साहित करते रहते थे। राम दरबार के सभी प्रेमी जनों को वे अपने स्नेह से प्लावित करते रहे उनका साकार विग्रह तो अर्न्तध्यान हो गया किन्तु निराका दक्षिणामूर्ति के रूप में सबके हृदय में बैठकर अपने वियोग रूपी ताप को शान्त करें ऐसी हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। हमारे हृदय में वे सदा के लिए वे अपना स्थान बना लिए हैं। भुलाने की वस्तु नहीं है। उनकी पवित्र मनोहर-मूर्ति प्रसन्न-वदन मुस्कराते हुए मानस नेत्रों के समक्ष आ जाते हैं।

अन्त में पुनः हमारी अनन्त बार श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करें, ऐसी कामना है।

आपका शुभेषी
शान्तानन्द सरस्वती

आदरणीय

सादर नमस्कार!

आपका पत्र प्राप्त हुआ। परम पूज्य स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के निधन का समाचार जान कर दुखः हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

आपका
महन्त इन्द्रेश चरणदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्य सद गुरुदेव जी ने सुनकर गहरा दुख प्रकट किया तथा कहने लगे कि सभी सम्प्रदायों से प्रेम करने वाला एक महान पुरुष हमारे बीच में से सदा के लिए चला गया जिसकी कमी पूरी होनी असम्भव है प्रभु की जो इच्छा ऐसा समझ कर सन्तोष करना पड़ता है।

उनकी पुण्य स्मृति पाठ एवं भंडारा ६-१०-७७ को होने जा रहा है इस अवसर पर आने की प्रबल इच्छा थी किन्तु आप का पत्र घूम–घूम कर आज सोलन में मिला है यहां पर वेद भगवान की स्थापना ७-१०-७७ को है अतः आना शक्य नहीं।

हमारी ओर से आप उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने की कृपा करें।

भवदीय
स्वामी गोविन्दानन्द
गुरु गंगेश्वर चतुर्वेद संस्थान

— — —

आपका पत्र प्राप्त कर अत्यन्त खेद हुआ के हमारे बीच से हमारे परम प्रिय तथा मान्यवर श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी समाधिस्थ हो चुके। यह वर्तमान भारत देश के समाज के लिये बड़ी भारी क्षति है। हमारे यती बिरादरी से एक अमूल्य हीरक चला गया और वेदान्त के आसमान से प्रकाशमय तारा अस्त हो गया। भगवान के दिव्य चरण अब एक नया पुष्प से शुशोभित हुए हैं। प्रभु तो प्यारे को पाकर प्रसन्न होंगें परन्तु हमारे लिये तो दुःख रह गया।

श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के विनम्रता, सदा प्रसन्नता, आनन्द मुद्रा, सरलता, मित्रता यह सब गुण हमारे तथा उनके असंख्य प्रेमियों के हृदय में चिर काल तक सजे रहेंगें। समस्त साधु महात्मा समाज को ब्रह्मलीन स्वामी जी ने मधुरता, सुगंधी और सुन्दरता की धारा में बहा दिया था अपने सच्चे प्रेममय जीवन तथा आदर्श व्यवहार से।

मैं उन महान आत्मा की पुण्य–स्मृति में पवित्र षोडशी दिन के पुण्य पर्व पर अपना भक्ति पूर्वक श्रद्धाञ्जलि समर्पण करता हूं तथा चरणों में प्रणाम करता हूं।

हरिः ॐ तत् सत्॥

भवदीय
स्वामी चिदानन्द
[प.पू. स्वामी शिवानन्द जी के
चरण दास]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चण्डीगढ़ से दिल्ली आने पर श्री १०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के निधन के समाचार को सुनकर अपार विक्षोभ एवं दुःख हुआ। वे भारत के लब्ध–प्रतिष्ठ एवं महान मूर्ति थे। वे हमारे साधु समाज रूपी आकाश के चन्द्र एवं रवि थे। जिन्होंने अपनी देदीप्यमान प्रतिभा से न केवल साधु समाज को अप्रत्याशित रूप से भारत एवं विश्व में समादरणीय स्थान प्रदान किया अपितु भारत के चारित्रिक उत्थान में उनकी देन अनुपम हैं। उनकी अपूरणीय क्षति से मैं ही क्या आज भारत का साधु समाज विह्वल है।

श्री कृष्ण आश्रम दिल्ली में दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं अपने दुःखी तथा संतप्त सहृदय जनों को शान्ति और साहस प्रदान करने के लिए प्रभु से सामूहिक प्रार्थना करने हेतु एक विशाल शोक सभा का आयोजन किया गया। प्रभु का विधान अमिट है, प्रकृति के नियत नियम अवश्यम्भावी हैं। उनके संस्मरण हमारे मध्य उनके अभाव को जितना मार्ग दर्शक एवं संतोष प्रदान कर सकेंगे उतने से ही आत्मतोष के साथ हम उनका मनन और चिन्तन अजस्र करते ही रहेंगें। उनकी दिव्य और अलौकिक कृतियाँ हृदय में स्थान ले चुकी हैं। वे राष्ट्र की सम्पत्ति थे–– आज हमें उन पर गर्व है।

भवदीय

म० मं० स्वामी गणेशानन्द गिरि

सप्रेम शिवोऽहम्! हरिः ॐ

भगवन् कल प्रचार दौरे से आने पर आपका अति दुःखद समाचार पत्र प्राप्त हुआ, पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ पूज्य स्वामी जी महाराज का मेरे ऊपर कितना स्नेह था यह मैं स्वयं जानता हूं। परमाध्यक्ष जी की कुशल कार्य शैली और उनका मोहक व्यक्तित्व किसे नहीं रुलायेगा, कौन ऐसा पत्थर दिल वाला होगा जिसेइ स संदेश से चोट न आयेगी? एक बार भी जिसने उनका प्यार पाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा वह आज अपने को अभागा अथवा अनाथ और अत्तत्यन्त दुःखी पा रहा होगा। मैं उन्हीं लोगों में से एक हूं जिसे आज एक महान अभाव और अति वेदना का अनुभव हो रहा। महाराज श्री का मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह था, राष्ट्र संत टुकड़ो जी महाराज के आश्रम में आने से पूर्व जब मैं पीलीकोठी चित्रकूट छोड़ने का विचार कर रहा था तो महाराज ने मुझे 'मिशन' में रहने का अति आग्रह किया था उनका हृदय उस रोज मेरे लिए गंगावत् प्रवाहित हो उठा था वे नित्य मुक्त, जीवन मुक्त ब्रह्मनिष्ठ थे उनके लिए शोक करना यद्यपि शास्त्रोचित नहीं किन्तु आज जो हम अनाथों का आसरा उठा है उसका शोक होना हमें सहज ही है। अनेक वर्षों में जो हमारे श्रद्धा केन्द्र थे आज उस केन्द्र बिन्दु के ओझल हो जाने से घना अन्धकार छा गया, अभी गत माह २४ अगस्त को उनका आशीर्वाद पत्र आया कितना प्यार और अपना पन था उनमें कुछ कह नहीं सकता, आज उनके ब्रह्मलीन होने से हमने अपना साथी, श्रद्धा केन्द्र, उचित सलाहकार, मार्गदर्शक, समाजसेवी, सही माने में सच्चा सन्त खो दिया। आज रामदरबार पर जो आघात हुआ गुरुदेव उसे सहन करने की शक्ति दें और राम के चरणों में अनन्य भक्ति दें जिससे मिशन का कार्य सदैव की भांति अविरल अबाध गति से चलता रहे। मैं भन्डारे पर अवश्य आता किन्तु इधर संस्थागत विशेष कार्य से आना असम्भव है आशा है। आप सब मिशन अधिकारी संतों का, राम प्रेमी बन्धुओं का स्नेह, आत्मभाव सदैव की भाँति कायम रहेगा यही अभिलाषा है।

आपका ही
आचार्य स्वामी निर्गुण
गुरुकुंज आश्रम अमरावती महाराष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्यम भावि भावानाम्
प्रतिकोश भवेत् यदि
लक्षः दुःखेन लिप्येरन्
नल राम युधिष्ठिरः ॥

मैं उस समय श्रीनगर में था जब देवी निर्मल के पास फोन आया कि स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज सदा के लिए संसार छोड़ गये हैं । यह बात सुनकर न जाने क्यों हृदय धड़कने लगा । हम लोगों ने बहुत पढ़ा भी है और सुना भी है कि शरीर विनाशी है और आत्मा अमर है, किन्तु यह सब उस समय न जाने कहां चला गया । जी चाहता था कि कुछ रोकर मनोव्यथा हल्की कर ली जाए किन्तु न जाने रोना भी क्यों नहीं आता । ईश्वर ने हृदय कैसा पत्थर का बनाया है, जो चिरन्तन साथी के सदा तन विरह की बात सुनकर भी विदीर्ण नहीं हुआ । बार-बार मुंह से यही निकलता रहा कि बहुत हानि हुई, वैसा मिलनसार महापुरुष नहीं मिलेगा । न जाने यह वाक्य कितनी बार और कितने लोगों के सामने दोहराया, ऐसा महापुरुष फिर नहीं मिलेगा । सचमुच स्वामी गोविन्द प्रकाश जी ऐसे ही थे । जिनमें गरीबी अमीरी का भेद साम्प्रदायिक भेद आदि दुर्गन्ध उनके पास कभी नहीं आते थे । कब किसको कितना सम्मान देना है इत्यादि पेचीदा व्यवहार की उलझी हुई गुत्थियों को वे बड़ी सरलता से सुलझाते हुए अपने हृदय से सभी का पूर्ण सम्मान करते थे । उदासीन या निराकारी सम्प्रदाय कोई भी उन्हें अपने बन्धन में न बांध सका, वे सबके थे और सबको गले लगाते थे, तथा अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं होते थे । अन्य वक्ताओं ने उनकी विशाल कार्य प्रणाली पर प्रकाश डाला होगा । मैं लिखकर पिष्ठ-पेषण नहीं करना चाहता। हूं किन्तु अवश्य कहूंगा कि ऐसे साधु अभी हमें नहीं मिलेंगे । स्वामी जी के चले जाने से समाज ने बहुत बड़ी निधि खो दी है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं ।

मेरे वैयक्तिक जीवन में भी उनके सहयोग का बड़ा महत्व रहा है । जो मैं कभी नहीं भूल सकूंगा । मुझे वाराणसी की घटना याद है जब प्रति सप्ताह उदासीन विद्यालय में आकर मुझसे पूछा करते थे, क्यों कृष्णानन्द जी क्या जरूरत है । कभी पाठ बांचने वाला विद्यार्थी ला देना, और मेरे न चाहने पर जबरदस्ती जेब में दो पांच रुपये डाल देते । ये घटनायें बहुत छोटी हैं किन्तु समय पर उनका महत्व था समय आया तो हमारे जगद्गुरु उदासीन आश्रम में भी स्वामी जी ने जिस भव्य भूमिका का निर्वाह किया था वह तो अनिर्वचनीय है । बार-बार यही कहूंगा बहुत खोया है ऐसी महान-आत्मा नहीं मिलेगी । इतने शब्दों के साथ, ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी को नम्र भावाञ्जली समर्पित कर विराम लेता हूं । स्वामी जी का चिरन्तन—

स्वामी कृष्णानन्द
स्वामी प्रियतम मुनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कल ही बताया गया। सुन कर आप जानते ही हैं कि एक साथी के बिछुडने से दिल की क्या हालत होती है। उनका सारा जीवन प्रेम-स्नेह से परिपूर्ण, त्याग और विरक्तता तथा भक्ति का उपदेश हृदय की मित्रता और मुहब्बत एकदम पूर्ण तथा सारे के सारे ही स्वामी गोविन्द प्रकाश की आँखों के सामने आ गये। किन्तु कोई बात न हो सकी। रामतीर्थ मिशन और तमाम जनता जर्नादन जो भी उनके सर्म्पक में आया। उनकी सेवा का एहसान मन्द रहेगा। और मुझे तो उनका स्नेह भरा प्यार भूल ही नहीं सकता।

वास्तव में अभी ऐसे महापुरुष की जमाने को बहुत ही जरूरत थी किन्तु विधाता की कार्य-विधि में कौन हस्तक्षेप कर सकता है जहाँ उनकी कमी सदैव रहेगी वहां उनकी याद सदैव अमर, जिन्दा रहेगी।

मेरी शारीरिक अवस्था से आप वाकिफ ही हैं मैं चाहत हुआ भी नहीं पहुँच पा रहा मेरी विवशता है और यदि सेहत ऐसी ही रही तो हो सकता है केरल भी न पहुंच पाऊं। मैं उस महान हस्ती के लिये क्या प्रार्थना करूँ वो सदैव अमर हैं ईश्वर चरणों में प्रार्थना है कि जो भी उनकी जुदाई में, प्रेम तड़प में दुखी है उन्हें वो शान्ति बख्शें, गिरधारी भी बहुत उदास और परेशान सा हो गया है उसकी प्रकृति तो आप जानते ही हैं। ज्यादा और अनुचित के लिये क्षमा करें।

आपका
सारशब्दान्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका काले बॉडर वाला कार्ड मिला। जिसे पढ़ करके मानों वज्रपात हो गया हो।

इसी गर्मियों में जब मैं देहरादून आया था, तब आपके आश्रम में गया था। वहां स्वामी गोविन्द प्रकाश जी से भेंट करके बहुत प्रसन्नता हुई थी। उन्होंने जो स्नेह पूर्ण आतिथ्य-सत्कार किया था, वह सदैव याद रहेगा।

उस समय कभी यह आशंका नहीं हुई थी कि उनका ब्रह्मलीन होना इतना समीप था। पर विधाता के विधान के समक्ष किसी की भी क्या चलती है? उसके सामने तो सबको झुकना ही पड़ता है।

स्वामी गोविन्द प्रकाश जी ने व्यावहारिक वेदान्त के प्रणेता प्रातः— स्मरणीय स्वामी रामतीर्थ जी महाराज की स्मृति-रक्षा के लिये तथा उनके उपदेशों का प्रचार करने के उद्देश्य से स्वामी रामतीर्थ मिशन का सफल संचालन किया था। उनका यह कार्य सदैव याद रहेगा। इसी क्रम में उन्होंने स्वामी रामतीर्थ केन्द्रीय स्मारक समिति को अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया था, जिसके लिये हम सब लोग उनके तथा आपके आभारी हैं।

प्रभु उनकी अमर आत्मा को अक्षय शान्ति प्रदान करें तथा आप सब को इस विपत्ति को सहन करने की सामर्थ्य देवें। कृपया मेरी ओर से हार्दिक समवेदनायें स्वीकार करें।

विनीत—

भक्त दर्शन

अभी अभी पूज्य स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के अकस्मात् निधन का दुखद समाचार पाकर हम सब दुख और शोक में डूब गये, समझ में नहीं आता कि क्या करें और क्या लिखें।

इस शोक समाचार से जितना दुख और शोक और स्वामी जी के न रहने से जो कमी महसूस हो रही है वह दीवान साहब और बीबीजी के जाने से भी ज्यादा है। स्वामी जी महान आत्मा थे और हम सबसे उनका इतना प्रेम था और समय समय पर उनसे इतनी शक्ति और मार्गदर्शन मिलता था। आज उनके न रहने से अपने को बेसहारा सा महसूस कर रहे हैं। हृदय शोक से इतना पीड़ित और व्याकुल है कि अपने कुछ विचार श्रद्धाञ्जली के रूप में भी लिखने में असमर्थ हूं। शोक का एक तार भी आश्रम को दिया है। कृपया सब महात्मा गणों एवं रामप्रेमी सत्संगी भाई बहिनों को हमारे परिवार की ओर से मिल के समस्त कर्मचारियों की ओर से एवं शिवपुरी आध्यात्मिक साँस्कृतिक समाज कल्याण ट्रस्ट की ओर से गहरा शोक तथा हार्दिक संवेदना। हम दिवंगत महान आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हम सब को इस दुखद निधन को सहन करने की शक्ति दें और मिशन तथा रामप्रेमी भाई बहिनों को भी शक्ति और प्रेरणा दें कि हम सब पूज्य स्वामी जी के आदर्शों पर चल कर और मिशन की सेवा करते हुए अपने जीवन को सफल बनावें।

अभी दो तीन दिन पहले ही पूज्य स्वामी जी का पत्र सहारन पुर से मिला था कि स्वास्थय ठीक ना होने के कारण वह कुछ दिन वहां विश्राम करके दिल्ली जायेगें। और उन्होंने शिवपुरी सम्मेलन का भी सब कार्यक्रम बनाकर भेज। था मेरे विचार में हम सबकी ओर से यदि कोई उपयुक्त श्रद्धाञ्जलि पूज्य स्वामी जी की स्मृति में हो सकती है तो यही है कि उन द्वारा प्रेरित और निश्चित किया हुआ कार्यक्रम पूरा किया जाय।

— आपका— दीवान सुरेन्द्र लाल

मान्यवर,

परम भक्त, विचारक, तत्व-वक्ता, समाजसेवी तथा उपदेशक श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के आकस्मिक निधन की खबर से समस्त भक्त समाज को महान दुःख हुआ।

अतः आज दिनांक ९-१०-७७ को श्री ऋषि आश्रम खुड़बुड़ा मौहल्ला देहरादून कार्य-कारिणी समिति एवं सभी आश्रमवासी तथा भक्त-गण एक शोक प्रस्ताव पारित कर उनकी पुण्य आत्मा को ब्रह्मलीन होने तथा आत्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। समस्त रामतीर्थ मिशन के शोक संतप्त भक्त समाज की इस महान क्षति के लिये अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

ऋषि आश्रम कार्यकारिणी समिति
एवं समस्त भक्त गण

यह जानकर भारी दुःख हुआ कि पूज्यपाद वेदान्ताचार्य श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये। उनके निधन से न केवल धार्मिक जगत की अपितु सारे राष्ट्र की क्षति हुई है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति मिले और हम सब उनके आदर्शों पर चलने की शक्ति प्राप्ति करें।

आपका
(बिश्वम्भर प्रसाद शर्मा)
सम्पादक, योधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज दिनांक २५ सितम्बर ७७ को रामकृष्ण विवेकानन्द योग आश्रम, अलीगढ़ के सत्संग भवन में, देहरादून राजपुर, स्वामी रामतीर्थ मिशन के परमाध्यक्ष स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के आकस्मिक निधन पर एक शोक सभा हुई; जिसमें योग आश्रम के सभी सदस्य महिलाएं व पुरुष उपस्थित थे।

मंत्री श्री राम अवतार शर्मा ने स्व० स्वामी जी के जीवन काल, व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुए अपने ऊपर उनका विशेष स्नेह था, सभी को बतलाया।

सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन धारण कर उस महान आत्मा के प्रति शोक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

शोक प्रस्ताव राजपुर स्वामी रामतीर्थ मिशन को भेजने के लिए पारित हुआ।

राम अवतार शर्मा

मुझे एक सज्जन द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि आदरणीय स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज का निधन हो गया है। मन इस सूचना पर बिल्कुल तैयार नहीं हो रहा था। एक आदमी को पटेल नगर के लाल मन्दिर से ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये भेजा तो पता चला कि बात सही है। मैं तो इस सूचना से अवाक् रह गया। प्रकृति के क्रूर हाथों ने यह खेल क्यों खेल डाला? इस घटना को सुनकर मुझ पर क्या प्रभाव पड़ा है? कैसे बताऊं? पूरे साधु समुदाय में से मुझे वही एक साधु दिखलाई पड़ते थे जो अपने परिचितों के विकास से प्रसन्न हुआ करते थे। उनके द्वारा समय समय पर जो मुझे मार्ग-दर्शन मिलता रहा है उसे कैसे भुलाया जा सकता है।

उसके सिवा ओर क्या कह और कर सकता हूं कि प्रभु उनकी आत्मा को वह सब कुछ प्रदान करे जो उसके पास देने जैसा है।

उनके द्वारा बताये हुये मार्ग पर चलते हुये आप लोग उनके कार्य को और आगे बढायेंगे ऐसी आशा है।

योगिराज नानक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

स्वामी गविन्द प्रकाश जी के निधन का समाचार जानकर अपार दुःख हुआ। आध्यात्मिक जगत की इस अपार क्षति को कोई पूरा नहीं कर सकता। वेदान्त सत्संगमण्डल के वह चमकते हुए नक्षत्र थे। वह न केवल अध्यात्मिक विद्या के अग्रणी थे अपितु सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं कर्मठ कर्मयोगी थे। एक राम परिवार का अनमोल हीरा अनन्त में विलीन हो गया— इस ईश्वरीय संविधान के आगे किस का जोर चलता है।

अत्यन्त दुःखी हृदय से
आपकी
उमा

आज दिनांक २० सितम्बर मंगलवार को प्रातः सात बजे भगवान श्री राम मंदिर में परम पूज्य श्री वेदान्ताचार्य स्वामी १००८ श्री गोविन्द प्रकाश जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर निम्नलिखित शोक प्रस्ताव सभा के द्वारा पास किया गया:—

हमारी सभा स्वामी जी के पार्थिक शरीर के निधन पर अति शोक संतप्त होकर अपने कर्णधार के प्रति उनके चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। और प्रार्थना करती है कि वह शान्ति मूर्ति दिव्य आत्मा प्रभु के चरणों में अमरता प्राप्त करती हुई हम लोगों को भी शान्ति प्रदान करें। इसके उपरांत ग्यारह बार उस दिव्य विभूति के लिए गायत्री का जाप किया गया एवं दो मिनट मौन होकर सबने स्वामी जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की;—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तारीख २१-६-७७ को सत्य धर्म मण्डल श्री स्वामी हेमराज मिशन के अध्यक्ष श्री हंसराज बटारा की अधीनता में अन्तरंग सभा के सदस्य तथा सभी सत्संगी बन्धुओं की एक शोक सभा सम्पन्न हुई जिसमें सर्व श्री १०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के आकस्मिक ब्रह्मलीन होने से जो क्षति सनातन धर्म जगत या भक्त जनों को हुई उसकी पूर्ति होना नितान्त कठिन है आपकी विचार धारा में रामतीर्थ मिशन और हेमराज मिशन दोनों ही एक है, दोनों के सिद्धान्त एक ही है जहां एक ओर श्री १०८ स्वामी रामतीर्थ जी महाराज अद्वैत धारा का प्रसाद समाज को वितरण कर रहे थे वहां मुलतान सिन्ध आदि की तरफ श्री १०८ स्वामी हेमराज जी महाराज अपनी अद्वैतवादी विचार धारा को प्रसारित कर रहे थे।

स्वामी जी के ब्रह्मलीन होने से पूर्व जब उनको मण्डल के तृतीय गुरुदेव श्री स्वामी १०८ चेतनानन्द चिदाकाशी जी के ब्रह्मलीन होने के सम्बन्ध में सुना तो उन्हें दुख हुआ और कहने लगे यह मिशन और वह मिशन एक ही है स्वामी जी ने जिन कार्यों को अधूरा छोड दिया है उन्हें पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है।

इस प्रकार एकान्त दृष्टि को धारण करने वाले स्वामी जी के ब्रह्मलीन होने पर आज भक्त, गण आधारहीन हो गये हैं इसलिये दुखी है।

आज हम पर ब्रह्म, परमात्मा से उनके ज्ञान पिपासु भक्तों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए परमात्मा से पुनः प्रार्थना करते हैं कि वो उनको इस महान कष्ट को सहन करने के लिए धैर्यपूर्वक क्षमता प्रदान करें।

महामंत्री सत्य धर्म महा मण्डल
हेमराज मिशन
७/५ ईस्ट पटेल नगर
न्यू दिल्ली-८

---

१६ ता० की रात्रि को जब महामण्डलेश्वर जी १०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के शरीर शान्त होने की सूचना मिली तो समस्त परिवार के सदस्य चित्कार उठे, मानो कोई अपने परिवार में से अति प्रिय ही उठ गया हो। पूज्यनीय स्वामी गोविन्द प्रकाश जी हम पर असीम कृपा रही है। हमारा परम सौभाग्य था कि वह हमेशा शिवरात्रि महोत्सव में पधार कर दिल्ली कैन्ट की संगतों को अपने पावन दर्शन से और अमृतमय वचनों द्वारा अनुग्रहीत करते थे।

उनकी ही प्रेरणा से महोत्सव, जो पहले एक ही दिन के लिये मनाया जाता था, तीन दिन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये मनाया जाने लगा। मुझे वह समय याद आ रहा है जब उन्होंने अपने पवित्र कर कमलों द्वारा प्रांगण में विशाल मन्दिर की नींव रखी थी। यह उन्हीं का वरद हाथ था कि हमारी सामर्थ्य न होते हुए भी थोड़े समय में ही एक सुन्दर मन्दिर तैयार हो गया जो सदा ही उन की पावन स्नेहमयी याद दिलाता रहेगा।

इस शरीर पर तो उनका मां सा प्यार था। जब हम व्यास पूर्णिमा पर प्रेम नगर जाते थे तो राजपुर से उनका प्रेममय निमन्त्रण अवश्य ही आता था। शरीर के अस्वस्थ होने पर भी हम उन के दर्शनार्थ अवश्य ही जाते थे। उनके अतिथि सत्कार की तो सीमा ही नहीं थी। बहु संख्या में होने पर भी स्वामी जी अपने पास बिठा कर स्वयं ही प्रेम से भोजन की व्यवस्था करते थे।

वह साक्षात स्नेह की मूर्ति थी, करूणा, मुदिता, मैत्री और मुदा सदा उनके द्वारा सुशोभित होती थी। वह कर्मठ संत थे जिन्होंने अपना सारा जीवन 'नाम जपो अवर नाम जपाओ' के अनुसार बिताया। स्वामी रामतीर्थ मिशन के तो बहु प्राण ही थे उनके योग्य नेतृत्व में स्वामी रामतीर्थ, राजपुर ने धरती पर एक स्वर्ग सा रूप धारणा कर लिया है रोहतक कलानौर; दिल्ली राजपुर, इलाहाबाद और अनन्त स्थानों पर इन के द्वारा ही जनता के कल्याणार्थ सम्मेलन आयोजित होते थे। उन की इन पावन स्मृतियों को याद कर दिल भर आता है परन्तु पावन गुरुवाणी के इस पवित्र पदानुसार

संत मरे क्या रोईये, जो अपने गृह जाये
रोवो साकत बापुरे, जो हाट हो हाट बिकाय

अब हम सब का उस दिवंगत महान आत्मा जी प्रभु की परम ज्योति में बिलिन हो गई है, के प्रति श्रद्धांजली यही है कि हम उनके सिद्धान्तों तथा पद चिन्हों पर चल कर उनके पवित्र कार्यों को पूर्ण करने का बीड़ा उठाए तथा उनके समान साधारण पवित्र परोपकारी तथा आदर्श मय जीवन बनाये। परिपूर्ण परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह (स्वामी जी) अपने समष्टि शक्ति द्वारा ही हमारा पथ प्रदर्शन करें।

माता लक्ष्मी देवी तथा सगंत
एक रसानन्दाश्रम
गोपीनाथ बिल्डिंग
दिल्ली कैन्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज परम पूज्य स्वामी ओमप्रकाश जी महाराज द्वारा दुःख समाचार मालूम हुआ कि, परमपूज्य सद्‌गुरुदेव श्रद्धेय श्रीस्वामी गोविन्दप्रकाश जी महाराज ब्रह्मलीन हो गये हैं। उनकी परम पवित्र आत्मा परमात्मा में समा गई। उनके जैसे महापुरुषों का त्यागमय जीवन लोककल्याणार्थ ही व्यतीत हुआ। उनकी कृपा व आशीर्वाद मेरे ऊपर सदैव बना रहता था।

परमपिता परमात्मा के आगे आज प्रातः सत्संग में पूज्य स्वामी ओमप्रकाश जी महाराज के सनिध्य में उनके पवित्र आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धान्जली अपित्त की गई।

परमपिता परमात्मा के आगे यही प्रार्थना है कि उनके शिष्यों तथा अनुयायियों के द्वारा उनका नाम सदैव रोशन होता रहेगा

शेष भगवत कृपा।

आपका ही बाबा
बालमुकन्द
संस्थापक,
गीता भवन ट्रस्ट, इन्दौर

आपके द्वारा रामायण वेदान्त आश्रम, को प्रेषित पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि परमपूज्य महाराज स्वामी गोविन्दप्रकाश जी का पार्थिव शरीर हृदय गति रुक जाने के कारण दिल्ली में शान्त हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार पाकर मैं इतना अभिभूत हो गया कि यह पत्र में आपकी सेवा में भेज रहा हूं।

पू० महाराज की 'बहुजन हिताय' सेवायें एवं उनकी सतत् कर्म करने की प्रवृत्ति, निस्वार्थ सार्वजनिक जीवन, कुशल संगठन सार्वक्षमता और व्यवहार चातुर्य श्लाघ्नीय है। सनातन सिद्धान्तों के प्रति महाराज जी की अटूट निष्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इन्ही सत गुणों के कारण वे 'रामतीर्थ मिशन' 'अवधूत मंडल' ब्रह्म निवास आश्रम जैसी बड़ी संस्थाओं का संचालन आसानी से कर लिया करते थे।

वे महान थे। काल क्रूर हाथों ने उन्हें असमय ही हम लोगों से छीन लिया है। ईश्वर से हमारी अन्तर्मन से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति दे और कैवल्य-लाभ करावें।

भवदीय

शेखर पांडेय

८/७१. आर्यनगर

कानपुर

रविवार दिनाँक २५. ६. ७७. को प्रातः १ बजे ध्यानयोग आश्रम, नारायण (गृहक्षेत्र) नई दिल्ली - २४ में परम वन्दनीय स्वामी योगिराज नानक चन्द्र जी महाराज की अध्यक्षता में एक विशेष वैठक बुलाई गई जिसमें निम्नलिखित 'शोक-प्रस्ताव' पारित किया गया।

'परम श्रद्धेय' हमारे शुभ चिन्तक, अकारण स्नेही स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के आकस्मिक निधन के समाचार से हमें बहुत आघात पहुंचा। उनका सहज स्नेह चिर स्मरणीय रहेगा। हम उनके दिवंगत दिव्यचरणों में अपनी हार्दिक श्रदाञ्जलि अर्पित करते हैं और प्रभु, से सच्चिदानन्द परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति दे उनकी दिव्य एवं अलौकिक अकांक्षाएं पूर्ण हों।

आत्मस्वरुप वन्धुगण

सदस्य आध्यात्मिक साधना संघ दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका कृपा पत्र मिला, जिसमें पूज्य श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के एका एक निधन की हृदय-विदारक सूचना पाकर अत्यन्त दुःख हुआ ऐसा लगता है जैसे कि अपना कोई सगा सम्बन्धी अथवा सच्चा हितैषी और अभिन्न शुभ चिन्तक का सदा के लिए विछोह हो गया हो स्वामी जी ऐसे ही थे। पिछले उत्सव में सम्मिलित होकर तो मैंने उनको और भी निकट देखा था इतने बडे समारोह में वह शान्ति और अविचल भाव से सब कुछ करते हुए भी अकर्ता बने हुए थे। यही तो महात्मा की विशेषता है। स्वामी जी की सप्रेम सहृदयता तथा उनका स्नेहपूर्ण व्यवहार, बार बार याद आकर मुझे विकल सा कर देता है।

श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी ने स्वामी हरि ओम जी महाराज के स्वप्नों को साकार कर दिया और उनके लगाये हुए पौधे को अपनी अथक मेहनत व परिश्रम से सींच संजोय कर पूर्ण विकसित किया, जिसकी अनेक स्थानों में फैली हुई शाखाओं की सुखद छाया में बैठ कर अध्यात्म के प्यारे ब्रह्मनिष्ट स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के उपदेशों द्वारा अपनी जिज्ञासा की संतुष्टि करते हैं। उन्होंने श्री स्वामी रामतीर्थ जी महाराज के नाम और उनके वेदान्त सम्बन्धी उपदेशों की ज्योत को बराबर प्रज्वलित रखने में बहुत सफल प्रयास किया, जिससे देश का ही नहीं, विदेशों का भी उनके द्वारा उपकार हुआ।

स्वामी गोविन्द प्रकाश जी का व्यक्तित्व बडा प्रभावशाली था तथा उनकी वाणी में भावों दीपक शान्तिमय प्रेरणा थी, जो मनुष्य को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। किन्तु मनुष्य विवश है ईश्वर के विधान में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता। भगवान की योजना, मनुष्य की बुद्धि से परे है। हम लोग अपने स्वार्थ के लिए दुःखी होते हैं यह हमारी अज्ञानता है। ईश्वरीय योजना में त्रुटि कहां? वहां तो सब कुछ नियमानुसार ही होता है, अतः भगवान की इच्छा में अपनी इच्छा विलीन करके सन्तुष्ट रहने में ही हमारी सब की भलाई है। प्रभु की इच्छा पूर्ण हो और हमारी सबकी इच्छाएं पूर्ण हों। आप तो स्वयम् ज्ञानवान हैं सबकुछ समझते हैं। वह तो ब्रह्मनिष्ठ महात्मा थे ब्रह्म में ही विलीन होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर गये। उनके लिए कैसी प्रार्थना तो अपने लिए है कि वह परम पिता परमात्मा हम में वह ज्ञान भर दे, जिससे हम इस दुखद प्रसंग को इश्वरीय इच्छा समझकर शान्तिपूर्वक स्वीकार कर सकें।

सप्रेम हरि ओम सहित,
आपका अपना
(अयोध्यानाथ)
अ. मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज रविवार दिनांक (२५-९-१९७७) को ९ बजे सुबह गीता भवन के सत्संग घर में परमपूज्य महामन्डलेश्वर श्री-१०८ स्वामी हंसप्रकाश जी महाराज और गौड़िया मठ के परमाध्यक्ष आचार्य माधव भक्ति जी महाराज तथा उनके शिष्यों की उपस्थिति में श्री सरदारी लाल जी ओबेराय प्रधान जी की अध्यक्षता में श्री सनातन धर्म सभा गीता भवन की शोक-सभा पूज्य महामन्डलेश्वर स्वामी गोबिन्द प्रकाश जी वेदान्ताचार्य के आकस्मिक ब्रह्मलीन होने पर हुई। यह (सभा) अत्यन्त शोक प्रकट करती है और भगवान के चरणों में प्रार्थना करती है कि भगवान उनकी परम पवित्र आत्मा को अपने चरणों में विश्राम दे।

महाराज जी ने देहरादून में विशेषकर और दूसरे शहरों में धर्म प्रचार करने में जो प्रयत्न किये वे कभी भूले नहीं जा सकते। आपका रामतीर्थ मिशन के अध्यक्ष होते हुये भी श्री सनातन धर्म सभा गीता भवन से भी उतना ही प्रेम था और समय समय पर सभा को पूरा सहयोग मिलता था। यहाँ पर महात्माओं का सत्संग के लिए प्रबन्ध करने में आपका बड़ा हाथ रहा है और उनके ब्रह्मलीन होने पर सभा की बड़ी हानि हुई है जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती।

महिमानन्द डोभाल
प्रधान
श्री सनातन धर्म सभा
गीता भवन, देहरादून

दिनाक २०-९-७७ को १० बजे ऋषि संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार के समस्त छात्रों कर्मचारियों एवं संचालकों की सम्मिलित सभा, स्थानीय भगवान दास संस्कृत महाविद्यालय के परमाध्यक्ष व संचालक प्रातः स्मरणीय श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज वेदान्ताचार्य के आकस्मिक कैलाशवास पर अपना हार्दिक शोक प्रकट करती है और जगज्जननी भगवती से उनकी आत्मा को चिर-शान्ति प्रदान करते की प्रार्थना करती है।

प्रधानाचार्य
ऋषि संस्कृत महाविद्यालय
खड़खड़ी, हरिद्वार (उ०प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

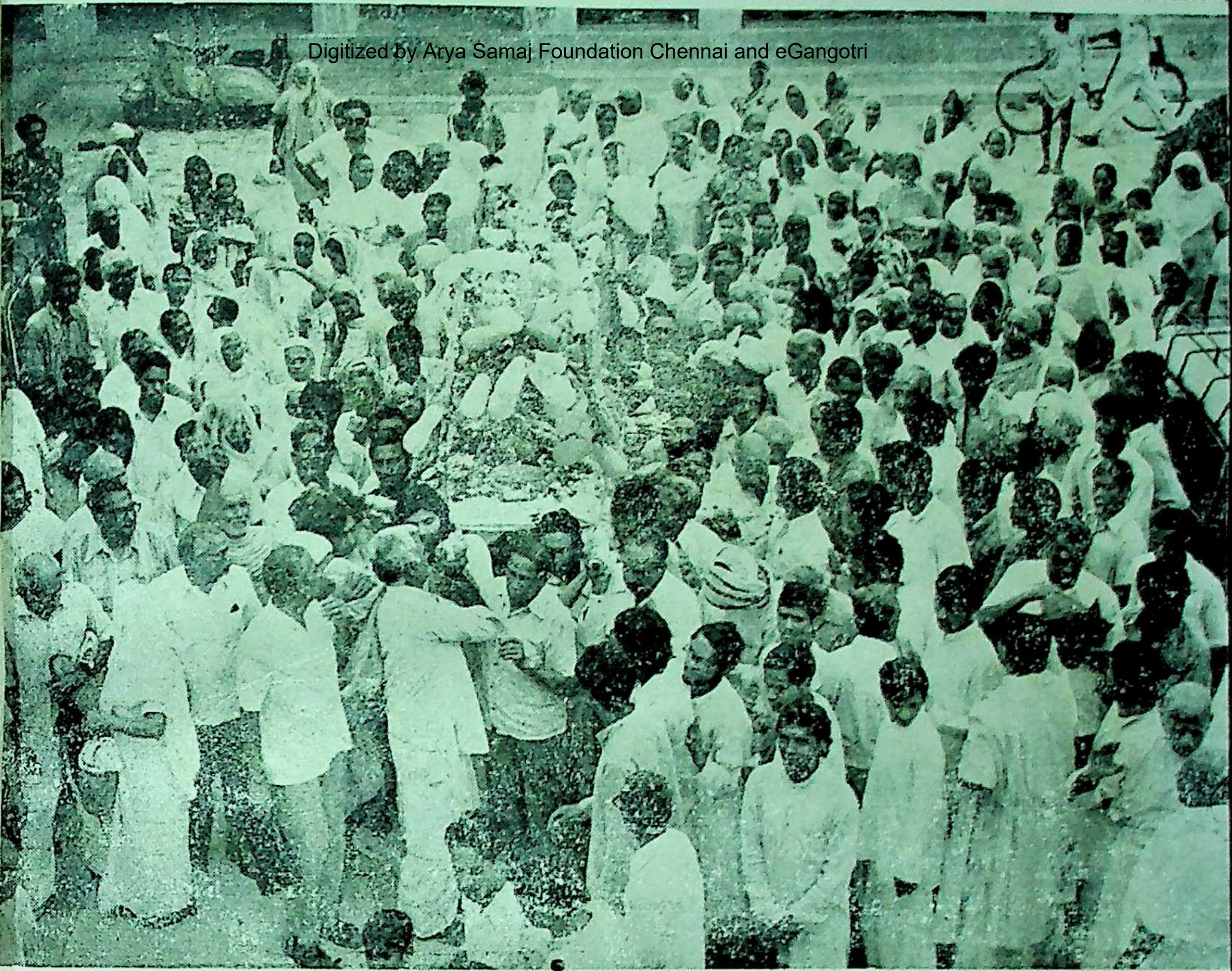

वीर पुत्र को देख
माँ का मातृत्व
सफल हो उठा ।
शोभा-यात्रा में
माँ आनन्दमयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शोभा-यात्रा कनखल बाजार में —

पंछी उड़ चला अनन्त गगन में अनन्त की ओर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

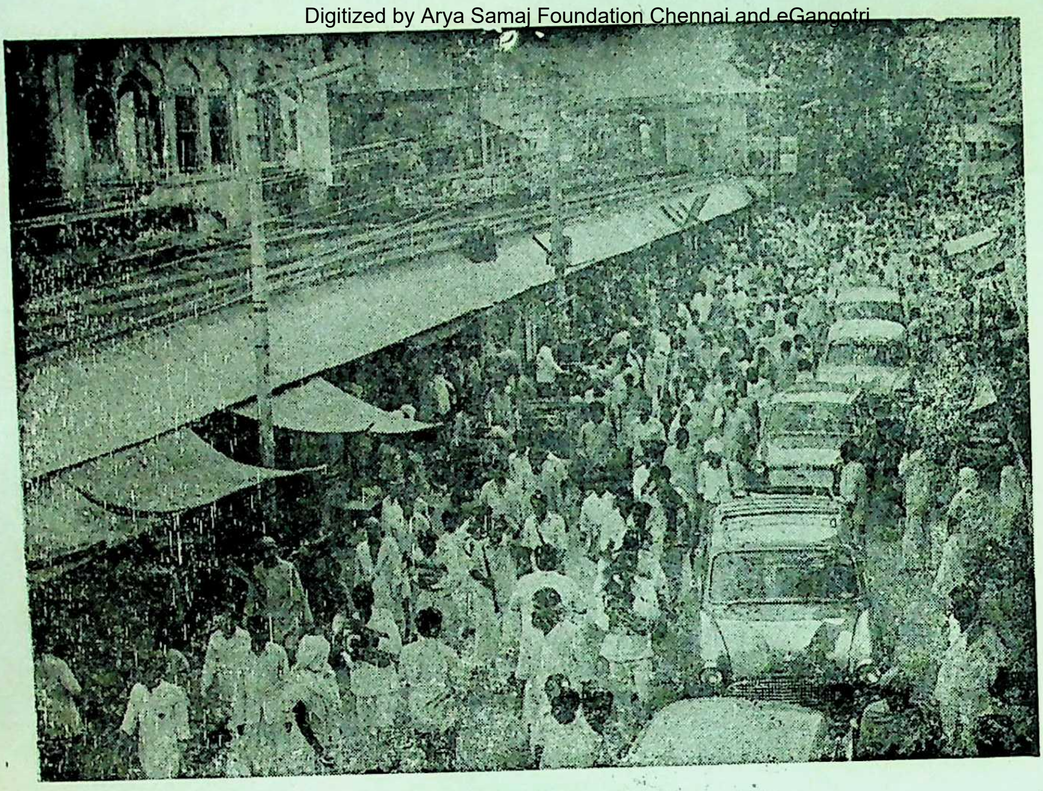

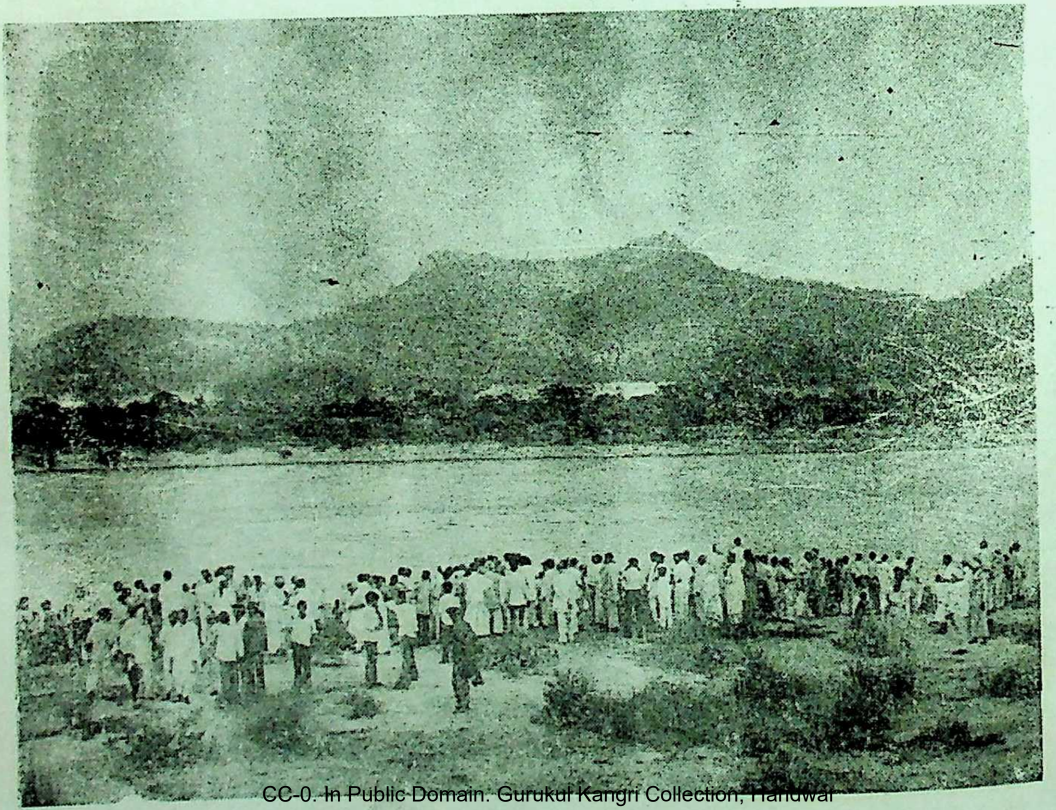

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जल-समाधि के बाद नील धारा तट पर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धा-सुमन-समर्पित

माननीय महात्मन् !

आपके महाप्रयाण का दुःखद-सन्देश सुनकर भारत की अनेक संस्थाओं के साधु-सन्त, छात्र-अध्यापक आपके लिये अश्रु-जल-मोती की माला गूंथ रहे हैं। आप स्वभाव से निश्छल, मन से निर्मल, बुद्धि से विद्वान एवं शरीर से कर्मयोगी थे। आपके अथक परिश्रम से अनेक संस्थायें पल्लवित, पुष्पित तथा फलित हो रही हैं। स्वामी रामतीर्थ की मस्ती के आप समर्थ गायक और प्रचारक थे। 'राम सन्देश' इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

हे निष्काम !

आपके प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे १९७४ हरिद्वार में मिला था। प्रथम दर्शन में ही आपकी सरलता-सरसता और सजीवता की त्रिवेणी में अवगाहन कर मैं आह्लादित हो गया था, फिर तो समय-समय पर आपका सान्निध्य प्राप्त होता रहा। आपके अन्तिम दर्शन इसी वर्ष मार्च में वाराणसी में हुए थे जब आप टेकरामठ में पधारे थे चलते समय मुझसे कहा था—'इस वर्ष देहरादून आना' पर मैं कार्यवश देहरादून न जा सका और आप इन्द्रप्रस्थ में ब्रह्मीभूत हो गये। 'अस्तु'

अन्त में रमारमण-उमारण के राजीव चरणों में प्रार्थना है। कि आप सभी को सुबुद्धि प्रदान करें तथा अव्यक्त रूप से अपनी सभी संस्थाओं को अनुकम्पा भरी दृष्टि से निहारते रहें। 'इत्यलम्'

—एक शोध छात्र, टेकरामठ, वाराणसी

आपका स्नेहपूर्ण शोक संतप्त पत्र प्राप्त हुआ यह जानकर अत्यन्त चित्त को धक्का लगा कि हमारे सन्त समाज का एक अद्वितीय हीरा (तत्त्ववेत्ता) महापुरुष व्यावहारिक दृष्टि से सदैव के लिये बिछुड़ गया परन्तु यह सोचकर धैर्य धारण करना होता है कि इसी मार्ग से हम सबको गुजरना है शरीर धारण करके तो अवतारों को भी अलग होना ही पड़ता है अब भगवान से प्रार्थना है और आपसे भी निवेदन है कि उन महापुरुष के पद-चिन्हों पर चलें, 'महाजनो येन गतः स पन्थाः'।

आपका अपना
स्वामी गीतानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी रामतीर्थ मिशन देहरादून के परमाध्यक्ष परम श्रद्धेय वेदान्ताचार्य श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज १९-९-७७ को ब्रह्मलीन हो गये हैं यह जानकर हृदय को आघात पहुंचा ।

पूज्य श्री स्वामी जी निष्काम कर्मयोगी थे, मिशन के माध्यम से आपने देश-समाज की जो सेवायें की वह भुलाये से नहीं भूलने वाली हैं । आपके ब्रह्मलीन हो जाने से मानव समाज की अपूरणीय क्षति हुई है । आपकी वेदान्त में कितनी गहन पैठ थी—उसका तो शायद सत्संग समाज भूरि-भूरि प्रशंसा करता रहा है । आपका पंचभौतिक शरीर तो अब न रहा पर आपके द्वारा सुझाये हुए उपदेश हमारा मार्ग-दर्शन करते रहेंगे ।

शोकाकुल

तुलसी मानस प्रकाशन

इस महाविद्यालय के संस्थापना-प्रेरक, प्रारम्भिक एवं सुदीर्घकालिक व्यवस्थापक तथा कर्णधार श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ स्वामी श्री गोविन्दप्रकाश जी वेदान्ताचार्य, जो धार्मिक जगत् एवं साधु-समाज के देदीप्यमान नक्षत्र और अनन्य विद्याप्रेमी, विशेषतः संस्कृत के निष्ठावान् प्रचारक-प्रसारक होने के साथ भारतीय संस्कृति और सभ्यता के संयोजक विशिष्ट वाग्मी विद्वान थे, का दिनांक १९-९-७७ को मध्यान्ह हृदय-गतिरोध से दिल्ली में आकस्मिक हृदयद्रावक निधन हो गया । विद्यालय-परिवार अत्यन्त शोकमग्न हृदय से ब्रह्मलीन उन महापुरुष के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हुआ उन पुण्यात्मा की एकान्त शान्ति के लिये अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक से विनम्र प्रार्थना करता है । उनके शोक में विद्यालय में दिनांक २१ सितम्बर ७७ से २३ सितम्बर ७७ नक ३ दिनी का अवकाश रहा ।

व्यवस्थापक, प्रधानाचार्य

श्री भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय

प्राचीन अवधूत मण्डलाश्रम

पो० गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज ता० २५-६-७७ को ६ बजे स्वामी रामतीर्थ मिशन के सत्संग भवन में महामन्डलेश्वर सन्त श्री १०८ स्वामी हजारासिंह जी महाराज 'विरक्त शिरोमणि' जीं की अध्यक्षता में रामदरबार के सम्राट स्वामी गोविन्दप्रकाश जी महाराज के दिवंगत होने पर शोक सभा हुई।

जिसमें हंसराज सचदेवा मुख्यमन्त्री, श्री सुरेन्द्र कुमार जी सहगल, पं० श्री राधेश्याम शास्त्री सरदार चरनसिंह, श्री उत्पल जी, सरदार बाबा हरचरनसिंह जी, श्री के०सी०पाल, श्री बी० एन० अरोरा तथा आचार्य रमेशचन्द्र ठक्कर ने पूज्यपाद स्वामी जी महाराज के जीवनी पर प्रकाश डाला।

वेदमन्त्र—गीता तथा रामायण—के पाट के उपरांत ५ मिनट मौनधारण कर श्रद्धान्जलि सर्मापित की।

शांति पाठ के उपरांत अश्रुपूरित सभा विसर्जित कर दी गई। इसमें लगभग ५०० स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया।

हंसराज सचदेवा
मुख्यमन्त्री
स्वामी रामतीर्थ मिशन, अलीगढ़।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब को ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ महामण्डलेश्वर स्वामी श्री गोविन्द प्रकाश जी वेदान्ताचार्य का स्वर्गवास जानकर महान दुःख हुआ है। स्वामी महामण्डलेश्वर जी का सनातन धर्म जगत में विशेष नाम था। और इसके लिये उन्होंने देश में घूम २ कर विशेष कार्य किया है।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ने अपनी २५-६-७७ की एक विशेष बैठक में श्री स्वामी महामण्डलेश्वर जी के निधन पर एक विशेष प्रस्ताव पास किया है और उनकी आत्मा को शान्ति प्रकट की।

आपका
(चिमनलाल कल्याल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सनातन धर्म सभा (पंजी०) शंकर रोड़ राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की कार्यकारिणी समिति की विशेष बैठक दिनांक २-१०-७७ (रविवार) में पारित किया गया।

प्रस्ताव—
आज की बैठक में पूज्य पाद महामण्डलेश्वर श्री १६०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के आकस्मिक दिनांक १६-६-७७ को ब्रह्मलीन (हृदय की गति की गति के रूक जाने के कारण) हो जाने पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है।

आप एक उच्चकोटि के परमसंत तथा महान वेदान्ती थे जिन्होने जीवन भर धर्म प्रचार का कार्य किया। सच तो यह है कि आप सनातन धर्म के वास्तविकता में स्तम्भ थे जो अपने अमृत मय उपदेशों द्वारा धर्म परायण जनता का मार्ग दर्शन करते रहे। इसके अतिरिक्त आप श्री राम तीर्थ मिशन के संचालक थे आपकी अध्यक्षता में 'मिशन' ने धर्म क्षेत्र में बडी प्रगति की। आपका हमारे शंक रोड़, राजेन्द्रनगर मन्दिर के साथ भी अति स्नेह था वह प्रायः हमारे मन्दिर के वार्षिक अधिवेशनों पर राजेन्द्रनगर की धर्म परायण जनता को अपने अमृतमय सत्योपदेशों द्वारा अमृत पान पिलाने पधारा करते थे। आप के ब्रह्मलोन (निधन) हो जाने से धर्म क्षेत्र में अर्थात सनातन जगत में भारी क्षति हो गयी है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

अन्त में हम सब सभाट्रस्टी परम पिता श्री परमात्मा जी से प्रार्थना करते है कि वह वंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान तथा शान्ति प्रदान करें।

भवदीय

पी० एन० जेतली
श्री सनातन धर्म सभा (रजि०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सनातन धर्म सभा गीताभवन की यह शोक सभा पूज्य महामन्डलेश्वर स्वामी गोविन्द प्रकाश जी वेदान्ताचार्य के आकस्मिक ब्रह्मलीन होने पर अत्यन्त शोक प्रकट करती और उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है तथा श्री भगवान के चरणों में प्रार्थना करती है कि भगवान उनकी परम पवित्र आत्मा को अपने चरणों में विश्राम दें।

महाराज जी ने देहरादून के लिए विशेष-कर और दूसरे शहरों में धर्म प्रचार करने में जो प्रयत्न किये वे कभी भूले नहीं जा सकते हैं। आपका रामतीर्थ के अध्यक्ष होते हुये भी सनातन धर्म सभा गीता भवन से भी इतना ही प्रेम था और समय समय पर आपसे पूरा सहयोग मिलता था। और यहां गीता भवन में महात्माओं का सत्संग करने के प्रबन्ध में आपका बड़ा हाथ रहा है और उनके ब्रह्मलीन होने पर सभा की बड़ी हानि हुई है जिसकी कभी पूर्ति नहीं हो सकती है।

श्रद्धान्जलि

परम श्रद्धेय पूज्यपाद गुरुदेव स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज की प्रेरणा से मैंने कुछ शब्द लिखने का प्रयास किया है। ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज आदर्श महापुरुष थे। उनमें महात्माओं के प्रकृति-सिद्ध गुण थे।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः–
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्।

स्वामी गोविन्द प्रकाश जी जीवन पर्यन्त कर्म में संलग्न रहे। वे एक सच्चे कर्मयोगी थे। उन्होंने जीवन में कभी विश्राम नहीं किया यद्यपि कुछ समय से उनका स्वास्थ्य खराब चल रहा था परन्तु वे सदैव आश्रम के कार्य में संलग्न रहते थे। रुग्णावस्था में भी उनके मुख की मुस्कान विलीन नहीं होती थी। उनका सौम्य एवं आकर्षक व्यक्तित्व था। प्रत्येक व्यक्ति सहसा उनकी ओर आकर्षित हो जाता था। उन्होंने स्वास्थ्य के अधिक खराब हो जाने पर भी कभी दूसरे को आभास होने नहीं दिया। वे जनमानस की तन, धन एवं मन से सेवा करते थे। बाल्यावस्था से ही उनका जीवन तपस्या से परिपूर्ण था। अध्ययन काल की शीतल रात्रि में वे धान पुराली बिछाकर सोते थे। वे बाल्यकाल से मनीषी एवं विद्वान थे वे अपनी कथा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करते थे। उनका विद्यार्थी-जीवन आज के विद्यार्थी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

स्वामी जी निर्वाण पुरुष थे। कोई व्यक्ति यदि कोई अपशब्द भी कह देता था तो भी सहन कर लेते थे। प्रति उत्तर में कुछ नहीं कहते थे। वे वास्तव में साधु थे। वे जिस कार्य को आरम्भ कर देते थे। उसे पूर्ण करके ही विश्राम करते थे। आश्रम का हिसाब करने जब वे बैठते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे तो पूर्ण हिसाब करके उठते थे एक बार दस रुपये का हिसाब मिल नहीं रहा था स्वामी जी काफी समय तक लगे रहे। पूज्य स्वामी अद्वैतानन्द जी कहने लगे कि दस रुपये मैं दे देता हूं। आप व्यर्थ में क्यों परेशान हो रहे हैं? स्वामी जी कहने लगे कि हिसाब तो अपनी जगह है। जब तक हिसाब नहीं मिलेगा मैं विश्राम कैसे कर सकता हूँ। स्वामी जी एक-एक पैसे का हिसाब रखते थे।

स्वामी जी स्वयं विद्वान थे एवं विद्वानों का सम्मान करते थे। अत्याधिक विद्वान एवं तपस्वी महात्माओं को आश्रम पर लाना एवं जन साधारण को उनके वचनामृत से लाभान्वित करना उनकी कर्मनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है।

स्वामी जी एक महान समाज सुधारक भी थे। वे मनुष्यों की सामाजिक समस्यों का समाधान भी करते थे। यद्यपि वे संन्यासी थे परन्तु वे गृहस्थियों के घर जाकर उनकी सांसारिक समस्याएं बड़े प्रेम से सुनते थे एवं उनका समाधान तत्काल कर देते थे।

वे राम प्रेमियों के दुःख-सुख के साथी थे। उनका दिल अत्यधिक कोमल था। वे किसी को रोता नहीं देख सकते थे।

दुःखी प्राणी की सहायता करना वे अपना परम कर्तव्य समझते थे। वास्तव में वे देवता थे शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका कार्य प्रशंसनीय है। उन्होंने संस्कृत महाविद्यालय का प्रबन्ध किया। वे अनेक विद्यार्थियों की पढ़ाई का खर्च देते थे। वास्तव में स्वामी गोविन्द प्रकाश जी गोबिन्द का प्रकाश थे। उन्होंने अनेक लोगों के अंधेरे जीवन को प्रकाश दिया। वे वास्तव में स्वामी हरिॐ जी का ही स्वरूप थे। राम प्रेमियों के हृदय सम्राट थे। उनके गुणों का वर्णन करने में यह लेखनी असमर्थ है।

डा० वीना शर्मा
एम० ए० पी० एच० डी०

परम पूज्य स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के ब्रह्मलीन होने का हृदय विदारक समाचार सुनकर हम सब लोग बड़े ही दुःखी हुए। स्वामी रामतीर्थ मिशन (चैरिटेबुल) डिस्पेन्सरी के सदस्यों की एक अत्यावश्यक मीटिंग हुई और उनके प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुये निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया।

"स्वामी रामतीर्थ मिशन (चैरिटेबिल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिस्पेन्सरी नैनी, इलाहाबाद की समिति अपने परमाध्यक्ष स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज के असामयिक ढंग से ब्रह्मलीन हो जाने पर शोकाकुल हृदय से उनके प्रति अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करती है। स्वामी जी कर्मप्राण, परमोदार, निःस्वार्थ सेवी तथा उच्चकोटि के महान सन्त थे। इस संस्था के वे संचालक ही नहीं अपितु इसके प्राण थे। समय समय पर अपने अपूर्व सुझाव और विभिन्न प्रकार की सहायताओं से इसे अग्रसरित करने का दायित्व तथा श्रेय उन्हीं को था। उनके वरदहस्त के अभाव में आज यह संस्था अपने को भविष्य में न पूर्ण होने वाली क्षतिग्रस्त दशा में पाती है।"

सदस्यों ने दो मिनट तक मौन रहकर स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित की।

भवदीय
एस०पी० धीर, मैनेजिंग ट्रस्ट

अवधूत मण्डल (प्राचीन), हरिद्वार तथा स्वामी रामतीर्थ आश्रम देहरादून में हुई श्रद्धान्जलि सभाओं तथा भंडारों में उपस्थित होकर उनके श्री चरणों में अपनी मूक अथवा व्यक्त भावभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित करने के बाद दिल्ली मिशन के सदस्यों एवं रामप्रेमियों ने दिल्ली मिशन श्री रामतीर्थ नगर में रविवार दिनांक ९ अक्टूबर को एक विशेष सभा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का प्रातः ८.३० वजे हवन से शुभारम्भ हुआ। तदन्तर गीता पाठ राम-स्तवन और प्रार्थना हुई और ठीक १० बजे सर्वदर्शनाचार्य परम श्रद्धास्पद वेदों के प्रकांड पंडित एवं व्याख्याता श्री स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज उदासीन की प्रेरणादायी अध्यक्षता में श्रद्धान्जलि कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, अपने हृदय–विदारक शब्दों में उद्गार व्यक्त करते हुए महाराज श्री ने इस घटना को असह्य बताया और उससे पूर्व घटित उस दुःखद दृश्य को स्मरण किया जबकि उन के यटशिष्य परमपूज्य वेदान्तदर्शनाचार्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का शरीर शान्त होने पर उन्होंने यह अनुभव किया था कि उनके महाप्रयाण से उनके हृदय का एक टुकड़ा अलग हो गया है। उसकी पुनरावृत्ति श्री स्वामी गोविन्दप्रकाश जी के ब्रह्मलीन होने से हुई है क्योंकि, उनके अपने शब्दों में, स्वयं वेद-व्याख्या में व्यस्त रहने के कारण तथा वृद्धावस्था में शरीर के दुर्बल होने से प्रचार एवं प्रसार का समस्त भार वे परमाध्यक्ष जी पर डालना चाहते थे। ९८ वर्ष के इस मूर्द्धन्य वर्चस्वी ऋषि ने दु.ख और शब्दों में कहा कि इस आयु में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना तो मुझे चाहिए था किन्तु मेरे देखते देखते इन दो मनीषियों को मुझे विदा करना पड़ा है । उन्होंने आशा व्यक्त की कि स्वामी रामतीर्थ मिशन के नव-निर्वाचित परमाध्यक्ष स्वामी अमरमुनि जी तथा महामन्त्री स्वामी हंसप्रकाश जी की राम-लक्ष्मण की जोड़ी इस महान कार्य को आगे बढ़ाते हुए श्री स्वामी हरिॐ जी तथा श्री स्वामी गोविन्द प्रकाश जी और उनके अपने (अध्यक्ष जी के) स्वप्नों को साकार करेंगे ।

इसके बाद सभा में उपस्थित श्रद्धेय संन्यासियों, विद्वानों, श्रद्धालुओं और राम-प्रेमियों ने संक्षेप में अपने संस्मरण वताते हुये अपनी कृतज्ञता तथा व्यक्तिगत एवं व्यापक क्षति की बात कही। प्रमुख वक्ताओं में महामण्डलेश्वर श्री स्वामी कृष्णानन्द गोविन्दानन्द जी, परमपूज्य श्री स्वामी दिव्यानन्द जी 'भिक्षु', परम पूज्य श्री स्वामी सर्वज्ञमुनि जी एम०ए०, पूज्य योगीराज श्री नानक चन्द जी थे। उपस्थित विद्वानों में कुवैत से पधारे श्री हरवंसलाल जौली, श्री रामशास्त्री जी 'वागीश' मानस-व्याख्याता श्री पं० त्रिलोक मोहन जी, श्री महेश्वर देव शास्त्री जी, श्री हंसराज सचदेवा जी (अलीगढ़), डा० गिरधारी लाल गोस्वामी जी, डा. श्री जगदीश चन्द्र जी 'सम्राट', श्री शिवलाल खुराना जी, श्री मेलादेवी मल्होत्रा जी (प्रधाना, दिल्ली मिशन) और अन्य महानुभावों ने अपने परमश्रद्धेय महाराजश्री के महाप्रयाण पर उनके विविध गुणों (आत्मीयता, सरलता, व्यापक प्रेम, कुशल व्यवस्थापकता आदि) की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

परमपूज्य अध्यक्ष जी महाराज ने पूज्य श्री स्वामी अमरमुनि जी महाराज तथा पूज्य श्री हंस प्रकाश जी महाराज को पुष्पमाला पहना कर उनको अपना दुर्लभ एवं अमूल्य आशीर्वाद प्रदान किया। मिशन के उन दोनों रत्नों ने भी अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुये भगवान से कामना की, कि उन्हें वे अपने कर्तव्य के पालन की पर्याप्त शक्ति दें जिससे वे उपस्थित महानुभावों द्वारा व्यक्त की गई आशाओं को पूरा कर सकें और ब्रह्मलीन श्री स्वामी जी महाराज के अधूरे कार्य को आगे बढ़ाने में सक्षम हों।

दिन में २ वजे सभा आरती के साथ सम्पन्न हुई। बाद मे पधारे हुए महात्माओं, विप्र समुदाय, विद्वानों और सभी रामप्रेमियों ने भण्डारे में भाग लेकर अपनी मूक श्रद्धान्जलि अर्पित की।

भारत बन्धु शर्मा
प्रधान सचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी गोविन्द प्रकाश जी

भारत का समन्वयवाद जिस प्रकार विश्व के अतिवादी सिद्धान्तों के लिए आदर्श है उसी ही प्रकार भारत के सन्तों का चरित्र भी अलौकिक और प्रेरणास्पद है विश्व के लिए। जिस प्रकार बहुत कम भारतीय इस समन्वयवादी दृष्टिकोण को समझने में सक्षम हैं उसी ही प्रकार जीवन का सर्वस्व समाज के लिए, राष्ट्र के लिए और विश्वशान्त्यर्थ अर्पित करने वाले सन्त समाज में बहुत कम ऐसे हैं जिन्होंने प्राचीन और नवीन सापेक्षिक सत्यों में निरपेक्ष के दर्शन कर भारतीय मार्ग का सही रूप में प्रतिपादन किया और साथ ही उस पर आचरण भी।

समन्वित जीवन के रूप में परमार्थ, व्यवहार, गाम्भीर्य, चहचहाहट, अनासक्ति, प्रेम, कर्म और ज्ञान का सम्मिश्रण था उन महापुरुष के व्यक्तित्व में, जिन्हें भारत का अध्यात्म-समाज स्वामी गोविन्द प्रकाश जी के नाम से जानता है, जिन्होंने अपनी जीवन लीला को–इहलौकिक-समाप्त किया दिनांक १९ सितम्बर को दिल्ली में दोपहर २ बजे।

बाल्य काल से ही संस्कृत और संस्कृति के प्रतिनिष्ठा, त्याग पूर्ण जीवन अर्थात वे सारे ही गुण उनमें थे जिनकी और नीतिकार संकेत करते हैं—

"विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय में क्षमा, सभा में वाक्पटुता, युद्ध में पराक्रम, यश में रुचि, श्रुतियों का (अध्ययन, अध्यापन में) व्यसन ये सारे गुण महात्माओं में स्वाभाविक होते हैं।

शंकर के ज्ञान का, ज्ञानेश्वर की भक्ति का, और विवेकानन्द के कर्म का पुञ्ज था उनका व्यक्तित्व। वेदान्त के गम्भीर चिन्तन को पौराणिक आख्यायिकाओं, व्यावहारिक हास्य कथाओं के माध्यम से अपनी प्रसाद शैली द्वारा सामान्य स्तर पर आकर और साथ ही स्वामी राम के 'व्यावहारिक' सिद्धान्तों को वैज्ञानिक रूप में जन–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस तक पहुंचाने में सर्वस्व समर्पित करने वाला था उनका व्यक्तित्व ।

देवता नहीं, मनुष्य को मनुष्य बनना होगा पहले, विश्व के लिये जीने का मिथ्याभिमान करने से पहले उसे अपने पर, अपने परिवार पर, अपनी जाति पर, अपने राष्ट्र पर अभिमान करना होगा, स्वाभिमान चाहिए उसे अवश्य जीवन में । इससे पहले .जबकि उसे ब्रह्मानुभूति हो उसे (मानव को) मानव की तरह मानव बनकर देखना होगा । जिसकी पहिचान होगी इन्सानियत की इस परि-भाषा के अनुसार–

दर्दे दिल पासे वफ़ा जज्बा ए ईमाँ होना
है यही इन्सानियत और यही इन्सां होना ।।

यह था संक्षेप में उनका जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण, जीवन-दर्शन ।

बार बार जब भी किसी को समझाते तो यही कहते अरे मूर्ख ! सन्त तो कहते हैं क्योंकि उनका कर्तव्य है, ड्यूटी है कहना । हमारे लिये नहीं अपने लिये तुम्हें सुनना होगा । फिर उस सुने को जीवन में लाना होगा—

अपने दिल में डूबकर पा जा सुरागे जिन्दगी ।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन ।।

वे जानते थे कि जब तक कोई खुद को नहीं जान लेता, खुद का नहीं बन जाता, तब तक वह क्या जानेगा किसी को, क्या बनेगा किसी का । अर्थात अपने को, जो सबसे अधिक प्रिय है, जो नहीं बना पाया वह दूसरे को क्या बना पायेगा ।

ऐसी वह महान आत्मा ·· ··इसके आगे यदि यह लिखा जाय कि वो अब हमारे बीच नहीं तो अपराध होगा आत्म-हनन का क्योंकि आत्मा मरती नहीं इसका मतलब वह आत्मा आज भी हमारे बीच है उस रूप में जिसे हम केवल श्रद्धा, विश्वास-रूपी चक्षुओं से ही देख सकते हैं । इन नेत्रों के अभाव में हमने सदा ही महापुरुषों को समझने में गल्ती की है । पर अब हमें वह गल्ती नहीं दोहरानी है । हमें केवल उनकी पूजा मात्र ही नहीं करनी बल्कि उन्हें साक्षी मान निराकार रूप में स्वीकार करतें हुए उनके संकल्पों को पूरा करने का दृढ़ संकल्प कर, उन शिक्षाओं को जो उनके द्वारा दी गई, व्यावहारिक रूप देकर श्रद्धान्जलि समर्पित करनी है ।

साक्षात्कार

साक्षात्कार का अर्थ है अपने पुराने संगीत को नये लय में गाना । गाने तो सदा वही पुराने रहेंगे किन्तु आपको उन्हें नये लय से गाना होगा ।

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LETTERS

The Sanatan Dharam Sabha, Patel Nagar, New Dehli, heard the news of the sad and untimely demise of revered Swami Gobind Prakash Ji, Paramadhyaksha of Ram Tirth Mission with deep sorrow and pain.

The daily congregation in the temple prayed to the Lord for emancipation, eternal place and immortal life of bliss in Dyuloka of the departed soul.

On the 25th September, 1977, the Managing Commitee of the Sabha held a meeting, at which the Daivic Sampatti- laden qualities of the Swami ji were eulogised by the speakers and a resolution was passed expressing deep grief at his sudden departure from this world.

Dust hath returned to dust;
And his life's breath
Hath mingled with life-stream divine;

In the Lord,
(O. P. Puri)
Shri Sanatan Dharam Sabha
Patel Nagar, New Delhi

To Swami Govind Prakash Ji Maharaj —

Gates of memory never Close
How much we Miss you no
One knows,
Tears in our eyes we wifpe away
But Ache in our hearts is there
To Stay,—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I was shocked to learn about the sad demise respected Swami Govind Prakash Ji. He was really a great person but nothing can be done before Almighty. We pray Almighty to give peace to the departed soul and also give you strength to bear this irrepairable loss.

Please convey my heart-felt condolance to all the members of the Misson.

With respectful regards,

Yours sincerely
(Gobind Ram Kapoor)

FROM your letter, I am very sad to learn that revered Swami Shri Govind Prakash ji has passed away very untimely. I had a great reverence for him, and he was very kind and affectional to me. I can never forget him. May he, as it is expected, be a Videha Mukta. He combined in his grand personality a great Vedantist and a worldly-wise mad. He was a great Oratop as will as a great administrater. To commemorate him. The Ashram, I think, should build a Library Room in the Ashrama Premises, and name it Govinda Prakash Library, as there is no library yet in the Ashrama. Or the Ashram may give a Scholarship of Rs. 100 per month to a Research Student of International Research Institute of Philosophy, Psychology, and Psychical Research, Kuthal Gate, who writes a thesis for Ph. D. degree on some aspect of the Advaita Vedanta (or of the philosophy of Swami Ram Thirth). Please convey my heart felt condolences to all the inmates of the Ashrama.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

This time I could not have his Darshana when I was at Atreya niwas, for a long time, as Swamiji was very often absent from the Ashrama. I regret it very much.

Please let me know who will succeed Swami ji as the Parmadhyaksha of the Ashrama.

With best regards and Hari Om,
Yours sincerely and respectfully,
B. L. Atreya

TELEGRAM

Deeply grievd over Swamiji's death
Satendrajeet Singh
family Jogendrajeet Singh

Shocked offer heartfelt Condolences and homage to the sacred memory of departed soul
Kattha mill staff (labour)

Deeply grived Swamiji's passing away will miss him always may his soul rest in peace
Shakuntala Verma & family.

We are shocked to hear the news of sudden clemise of Shri Govind Prakashji Maharaj please convey our heart felt condolences to all may God rest his soul in peace.
Ram Chameli Shashi
& Om Nanda (Kuwait)

May departed soul live in peace.
Harmilapiji

Accept our heart felt condolence at such sad demise of Swami Govind Prakash
Manchanda (family)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Got greaved such News, Rerecteonal Homage to the great Departed soul

Scindia Vijay Raje

With profound sorrow we send our heart felt condolence over sudden demise Respected Swami ji may his holy soul rest in peace

Sri Ram
Kewal Jolly

Schocked to know the sudden demise Swami Govind prakashji, Maharaj heart felt condolence all the people at Ashram

Satpal Jolly Anil Jolly Kuwait

Much grieved Swami Govind Prakash Death

Munihar Milapi (Panipat)

Deeply grieved By the sad and untimely demise of our beloved Swamiji. A great miror, his memorise will be cherihed for times to come, may his soul Qest in peace.

Mohan Raj Jolly (Kuwait)

Deeply shocked grieved on Swamiji's sudden demise praying almighty shelter peace for departed soul

Malhotra Parivar

Schoked feel beseft and lost offer our homage to Swamiji memory pray for strength to all of us and blessing to carry on his noble ideal and work

Dewan Surender Lal

Respected Swami Amar Munijee	Answer
What to say	We should say
when	To inspire all being
atman merged in parmatma	
Hari Om	Amar Muni

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

How To Live Peacefully

by : Naresh Kumar Mittal, ew Delhi.

Indeed a difficult question to answer it is. And I am not going to answer it, it is for RAMA's divine literature.

In this connection, let me enunciate that there are so many factors which must be taken into consideration while replying to the question, but here I am going to take into considration oniy one thing, the basic and fundamental thing. That is what we call, POINT OF VIEW or say how to feel the day to-day matters.

"**Point of view**" is a term, very commonly used by the human beings throughout the day. You might have listned people saying "according to my point of view" his point of view, that point of view etc. etc. What they do mean actually is that the ANGLE OF THINKING of individual and of society. How one thinks and takes a thing.

Now let us examine the **relevance** in the context of life. There are so many things which create a lot of trouble in our routine life, but, the same are not too much troublesome as they look, subject to changing slightly one's point of view. If one can think about a troublesome issue in a diffarent way, the same will not remain such troublesome as it was and will not be disturbing his mental state, or mental balance, and if one is able to maintain one's mind keep calm in every moments, what is their to effect his peaceful life. nothing indeed. We often listen to the incidents of committing suicides by households, highly ranked offlcers. scientists etc. etc. Why ? Only because they are not in a position to maintain their mental balance. they are imbalanced on minor or major issues, and this leads them to suicides. A student fails in an examination. he immidiately plans suicide, Why ? Why does he not think "O.K , I will again try". Mental balance is a very very major thing, and that is why we hear every one crying everytime. May he be rich, poor, big or small, must know how to keep mental balance. This is the secret as well as the answer to the quesion involved in this discussion.

One must be able to contemplate prope-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

rly, one must know how to take routine matters, how to feel day-to-day issues, then only one will not remain just an instrument in the hands of mood, Here, I would like to refer to a well known quotation, "ANGER IS NEVER WITHOUT A REASON BUT SELDOM WITH A GOOD ONE". I find nothing different than what I am saying here because whenever anger come, one should take it in other way. Anger will be no more.

Believe me, I am not going to write out of my practical experience, that's why I claim the validity of what I say. And that's why I am too much inspired to write this article, so that others could also be benefited by it.

And rest is upon the reader to test, one must.

HARI OM TAT SAT

LETTER

Respected Swami Amarmuniji,

All of us were shocked and stunned to learn about sudden death of Swami Govind Prakashji. He was very dynamic and energetic organiser and leader. He has made significant contribution in expanding the activities of our mission. He was a powerful orator. He was a profound scholar and learned man. He had endeared himself to every body. His departure from this world is a big blow and loss to all of us. May god bless peace to his departed soul.

Yours Sincerely

Sd/. J. Goyal

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Misuse of Freedom

Undoubtedly, freedom is man's supreme right by birth. But freedom whieh is personified here as a tree will give us fruit only when we will serve it by following our duty properly. It is right that a person who is bound in certaian limits cannot achieve his goal or he cannot be prosperous and hearty. Freedom is must for progress for physical as well as for spiritual. But there should be no misuse of freedom or liberty In this universe all the creatures are going on their way peacefully. Only human beings, who think what is supposed to be the most rational in the universe is missing his rights. Human beings, they suppose them selves at a very high status and they think that they have defeated Nature and have over come by it.

Now a days it is seen that educated people do not believe in God (the supernatural power) In the Western countries the people are so materialistic and they have discarded it totally. But again they have opened "Worship homes and they are worshipping a them But in our country this wave is going on. By freedom we mean that people should believe in kindness and doing the duty properly is freedom and this is the use of freedom.

On Relation

Relation. What is relation ? First of all let us see what is the meaning of word relation ? Relation means connection between things this connection may be either by blood or society Relationship this word has a deep idea in itself, it is not a thing to neglect. Even "Einstain's" theory is based on principle, "that all motion is relative, that space and time are mutually inseparable".

When all the abstract theories, they, and even motion is relative, then we can easlily

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

imagine that this very word relation an abstract emotion has a great importance in a man's life. Man is a gregarious animal sense of stability, of security, of belonging ness is necessary for his happiness and franquility. He must have his moorings somewhere, in some home, in the love and affection of parents, and other relatives. When this sense of 'belongingness', this sense of harmony is lost for one reason or the other, man suffers from a feeling of insecurity and loss of confidence. He feels orphaned, defrauded and abay.

There are two different approaches of relation Eastern and Western. Relation may be of any kind as mother and son. father and daughter husband and wife, all these relations are based on some kind of adjustment according to the Western philoshphy.

Eat Drink, and be merry' they are some Bohemik kind of people. As viewed by them relationship or a sense of harmony is based on the fulfillment of needs. They have a shallow approach of relationship. But beside it, According to Easterns this word has a great and deep meaning we people are generally supposed to be warm blooded affectionate So attachment is the first basis of relationship. Generally it is heard that in the ancient time : people of past time were more affectihnate more reliable ; why are not they today ? The reason is shallow and outword approach of the word relationship. The mentallity of the people now a days is not good. They don't know the actual meaning of relation the first sight attraction, to which I call, "a begining point for illicit relationship" is only a fifthy attraction not relation, so people should care for it seriously and keep in mind that we should keep bright ideas in our mind, and lead our life having an idea that :

"Simple living and high thinking"

—VISHWATMA

INDIAN CULTURE

Late :— Swami Gobind prakash Ji Maharaj-

First of all I should ask you who is that Indian who is not proud of being an Indian. Who is that, whose heart does not fill with joy and happiness remember ancient culture of India. If there is any, he must become sure of himself that he is one who is only burden on this earth and nothing else. "*In all the bright and preci-*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ous objects on this earth he is the only worthless thing that is called "rubbish and nothing else." The person who abuse and talks ill of the Indian culture he must always remember the preaching of a very great and famous poet of India, whose name is (National poet Maithili Sharan Gupta) :

"हमको विदित थे तत्व सारे नाश और विकास के।
कोई रहस्य छिपे न थे पृथ्वी तथा आकाश के ॥
थे हजारों वर्ष पहले जिस तरह हमने कहे ।
विज्ञान वेत्ता अब वही सिद्धान्त निश्चित कर रहे।"

Really, it is evident that the impression of culture is a thing which can leave a deep effect on heart and even ages cannot remove it. People are surprise when they listen from the "future of India" means young generation of India these following words:

"यूनान मिस्र रोमा सब मिट गये जहां से ।
बाकी मगर है अब तक नामो निशां हमारा ॥"

culture which has its deep foundation cannot falldown easily. The root plant is based on "मातृदेवो भव" and "पितृदेवो भव" cannot be vanish so soon Though civilisation and culture are two words which are to hear to each other or we can say that there is not a lot of difference. between them yet it is wrong it differs a lot. It we want to xamine the sublimity of a cast then we have to check its culture. Indian culture is different from the culture of other countries. Difference is its supreme characteristic. From earlier time culture has been India's precious treasure;

"एतद्देशप्रसूस्य सकाशादग्र जन्मना ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् प्रथिव्यां सर्व मानव ॥"

When a Person gets wisdom he Forgets every thing and Feels very happy Wordly attachment and worldly restrictions. Raja Janak, is a great example of it. This World is not true, it is worthless and his. The only 'God' is truth. Theres been some symptom of wise that are Following.

"अशरीरं शरीष्व नवस्थेत्ववस्थिम् ।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥"

The above lines preach that a Person who never repents is wise. The Person who is spiritually elevated and has known the God, and has recogaised the supreme Power Closely after recognising it who never rep ents is wise. This is one of big super characteristics.

"आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य ।"

Arjun questioned Lord Krishna what are the Symptoms of a wise man?

In the second chapter of Geeta Lord Krishna answered :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थित धी: किं प्रभाषेत किमासीत् व्रजेत् किम् ।।"

At other Places Too Lord Krisha Said:

"ज्ञेय: स नित्य सन्यासी यो न द्वेष्टि न काँक्षति ।"

The Person who is not a victim of senses means he is spiritually elevated and having self control is Super man. In the same way so many saints and Preachers have sermonisd in their Preahching different Symptoms of wise and spiritually elevated people. Perception is neccessary and the objects of the World have the Significance for us when we are able to see the earthly objects with the help of Spirited eye (divine eye). Soul should believe in being divine. We should end this essay with the Following Preaching of Lord Krishna.

"रागद्वेषभयादिनामुक्ल चरत्रपि ।
अन्यर्व्योमिवदत्मच्छ: स जीवन्मुक्त उच्यते ।।"

★

A brief life sketch of Swami Govind Prakash Ji

Swami Govind Prakashji Maharaj was born in the year 1921 at district Miyan wali in a religious family and this is how he was inspired for the spiritual life he lead afterwards. Indus valley is proud of giving birth to many saints and philosphers and Swami Govind Prakashji was one of them.

Maharajji received his early education at Miyan wali itself. In the very childhood Swamiji left his home and at the age of 14 he took admission in the school of pataudi wala's to learn Hindi & Sanskrit.In the year1942 he came to Haridwar and because his lust for Sanskrit literature and Indian philosphy he decided to stay at Avdhoot Mandal Asharam, Hariwar, and carried on with his studies in the school of Nath sampradaya inspite of many difficulties and hardships. Maharajji was very much influenced by Swami Ram Prakashji Maharaj (Mahant avdootmandal asharam) and became his pupil. Maharajji was very brilliant scholar thus, he was awarded with gold medals by the then President for top position and highest marks he scored in Vedantacharya exam later he went to Prayagaraj, here he met Swami Hari om ji Maharaj and became a great friend and close associate of him.

Swami Hari Omji, of Swami Ram Tirtha mission was impressed By Swami Govind prakash ji upto that extent that in Prayaga-Kumbh he gave away all the responsibilities to Maha Rajji and introduced Maharajji to his disciples as hisownself he used to say that "Govind is myself" In the year 1955 Hari-Omji Maharaj left for his heavenly aboard Thus, Swami Govind Prakash Ji took over as the President of Swami Ram Tirtha Mission.

Swamiji was a dedicated person he spent all his life for the service of vedanta of Ram Tirth Mission. He believed in a saying 'work is workship' and as such he never took rest and kept on working for days and nights. He expended the mission to such an height that today not only in India Swami Ram Tirth mission is famous, but it is well known in most of the countries in Middle east and united states of America It was only his zeal hard work and sincierty that today we are able to stand by our ownselves Swamiji the ever moving personality, A man who never sat idle went for eternal rest on 19th september 1977 and left number of his followers with tears in their eyes and pains in their heart. Our homage to Swamiji is that we pledge to move on the path he showed us and carry on his work with more courage and zeal. Although A sudden demise of Swamiji is a great loss to the Nation, and Swami Ram Tirtha mission but still if Remembering him we do what he wanted a little can be recovered.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ आश्रम समाचार ★

प्रकृति में परिवर्तन, जो एक सत्य है, जीवन में कुछ ऐसी घटनाओं को समक्ष उपस्थित करता है जिनके विषय में कभी किसी द्वारा सोचा तक नहीं गया होता। शायद इसीलिये विभिन्न चिन्तकों ने प्रकृति से ऊपर पुरुष या ऐसी ही किसी अनन्त शक्ति को, जो कूटस्थ नित्य और चेतन है, स्वीकार किया हैं। कौन जानता था कि गुरुपूर्णिमा के बाद तथा दिसम्बर के निर्वाण दिवस से पहले इसी वर्ष कोई ऐसा उत्सव मनाया जायेगा जो शोक और करुणा से युक्त तथा स्मरणीय होगा।

दिनांक ६ अक्तूबर के दिन परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज को सामूहिक रूप में महापुरुषों तथा रामप्रेमियों ने सप्रेम तथा अश्रुयुक्त नेत्रों द्वारा श्रद्धान्जलि समर्पित की। हर वक्ता ने श्रद्धेय आचार्य प्रवर के आलौकिक गुणों का अनुवाद किया। इसी ही दिन 'मिशन' की प्रबन्धक समिति ने मिशन के नव-परमाध्यक्ष के रूप में परम श्रद्धेय स्वामी अमर मुनि जी महाराज को उद्घोषित किया। सार्वजनिक सभा में इस निर्वाचन की घोषणा की राजमाता सिन्धिया ने। समिति के इस निर्णय की भारत साधु समाज के अध्यक्ष श्री पं०गुरुचरण दास जी महाराज,ज्योतिमठपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री शान्तानन्द जी सरस्वती महाराज के साथ ही विद्वत्साधु समाज ने प्रशंसा की। समिति ने श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी हरिॐ जी महाराज की समाधि पर अपनी समस्त सेवाओं को पूर्ववत् नव निर्वाचित परमाध्यक्ष के चरणों में अर्पित करने की प्रतिज्ञा की तथा सबको विश्वास दिलाया कि समिति उन सारी मर्यादाओं को, जिनकी स्थापना स्वामी हरिॐ जी महाराज ने स्वामी राम के सिद्धान्तों के आधार पर की थी और जिनको पुष्टि प्राप्त हुई ब्रह्मलीन कर्मयोगी स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज द्वारा, श्रद्धेय स्वामी अमरमुनि जी महाराज और स्वामी हंस प्रकाश जी महाराज के सहयोग से बनाये रखेगी।

समष्टि भोज के साथ ही यह श्रद्धान्जलि दिवस, विद्वत्समाज के पूर्णतः सहयोग के साथ सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में मंच का संचालन किया गरीबदासीय आश्रम, हरिद्वार के व्यवस्थापक श्री स्वामी श्यामसुन्दरदास जी महाराज ने।

दिनांक १९ को महाराज जी की ही स्मृति में अखण्ड रामायण का पाठ हरिॐ सत्संग भवन, राजपुर रोड पर रामप्रेमियों द्वारा किया गया। तथा यह उद्घोषणा की गई कि यह अखण्ड पाठ प्रत्येक मास की इन्हीं १९-२० तिथियों में महाराज श्री की स्मृति में सत्संगभवन में हुआ करेगा।

आश्रम की व्यवस्था का निरीक्षण करने के बाद महाराज श्री कैथल सम्मेलन में पहुंचे। तदनन्तर आपकी ही अध्यक्षता में अलीगढ़-दिल्ली शाखाओं का सम्मेलन आयोजित हुआ। उसके बाद लखनऊ होते हुए आप दिल्ली पहुंचे।

आशा है कि आप देहरादून नवम्बर के अन्तिम सप्ताह तक पहुंच जायेंगे कारण स्वामी हरिओम् जी महाराज का निर्वाण दिवस इस वर्ष २-३-४ दिसम्बर को मनाया जा रहा है।

—सह सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष-८४२२१ राजपुर, ४२६७ देहरादून, तार का पता-(वेदान्त) देहरादून, रजि० न. डी. एल.

श्रद्धान्जलि दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी हरिओ३म् जी महाराज, संस्थापक स्वामी रामतीर्थ मिशन, का श्रद्धान्जलि दिवस परम श्रद्धेय परमाध्यक्ष स्वामी अमर मुनि जी महाराज की अध्यक्षता में मिशन, राजपुर देहरादून में दिनांक २, ३,४ —१२-७७ तदनुसार शुक्र, शनि, रवि तीन दिन गीता, उपनिषदादि धार्मिक ग्रन्थों के पारायण के साथ पूर्ण आध्यात्मिक वातावरण में मनाया जायेगा। मुख्य कार्यक्रम रविवार को प्रातः १० बजे से महापुरुषों के श्रद्धान्जलिपूर्ण धार्मिक प्रवचनों से प्रारम्भ होकर समष्टि भोज तक चलेगा।

इस कार्यक्रम में रामदरबार आपको श्रद्धान्जलि समर्पण हेतु आपको सादर आमन्त्रित करता है।

—सूचना—

१-आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि यह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा बैंक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें।

२- उन रामप्रेमियों के हम अभारी हैं जिन्होंने अपने संवेदना-पत्रों द्वारा हमें आत्मबल दिया है। हम विश्वास दिलाते हैं कि स्वामी राम के सिद्धान्तों की वह परम्परा, जिसका पालन श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी हरिओ३म् जी महाराज और स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज ने किया और बताया, राम-परिवार पूर्ववत् करता रहेगा।

३— आपको पत्रिका प्रेषण में विलम्ब हुआ जिसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। और साथ ही पत्रिका से सम्बन्धित आपके विचार पूर्ण सुझावों को सादर आमन्त्रित करते हैं।

४—**'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रू० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।**

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ०प्र०) के लिए **प्रकाशक स्वामी** अमर मुनि द्वारा **न्यू आईडियल प्रिंटिंग हाउस**, ४ बी, नेशविला रोड देहरादून में, मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-सन्देश

2 C DEC 1977
2 C DEC 1978

आजीवन सदस्यता शुल्क : भारत में —१००/-, विदेश में —५००/-

—संस्थापक—
ब्रह्मलीन स्वामी हरिॐ जी महाराज

—व्यवस्थापक—
स्वामी अमर मुनि जी महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय

करहुं लाज निज पन की — तुलसी
सुधार — स्वामी राम
स्वामी रामानन्द तीर्थ के कुछ संस्मरण उनके शब्दों में
— प्रो० भारत बन्धु शर्मा
संस्मरण — स्वामी अद्वैतानन्द
भाव पत्र — बलदेव राज शान्त
लघुकथा
धर्म है? — नीरज
आमनिरीक्षण की तात्विक मीमांसा
— वल्लभदास बिन्नानी
पश्चिमी सभ्यता या दानवता
— श्रीमती मंजुदेवी जालान
ब्रह्मलीन स्वामी हरिओ३म् को श्रद्धाञ्जलि
— स्वामी ब्रह्मानन्द जी
Purpose Of Livino
— Swami Chidanand

हार्दिक अभिनन्दन

अतीत की स्नेहिल स्मृतियों के आधार पर भावी प्रेममयी कल्पना करती हुई यह "पत्रिका" नये वर्ष का अभिनन्दन करती है। साथ ही ईश चरणों में प्रार्थना करती है कि आप सबको दैहिक, मानसिक व आध्यात्मिक जीवन में यह नव-वर्ष नवकिरण द्वारा नव-हर्ष दे।

मुख्य सम्पादक—
स्वामी हंस प्रकाश वेदान्ताचार्य एम॰ए॰ (दर्शन)

सह सम्पादक—
"निर्द्वन्द्व"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'राष्ट्र के हित के लिए प्रयत्न करना ही विश्व की शक्तियों अर्थात् देवताओं की आराधना है'
—स्वामी राम

वेदान्त, अध्यात्म, संस्कृति, धर्म एवं भक्ति का सजग सन्देशवाहक तथा
स्वामी राम के आदर्शों का उपस्थापक एकमात्र लोकप्रिय मासिक—

राम-सन्देश

बेदोपनिषदां तत्त्वम् सत्यं नित्यं सनातनम् ।
तत्सर्वं "रामसन्देशे" पत्रेऽस्मिन्नवलोक्यताम् ॥

वर्ष २६
अंक १२

वार्षिक शुल्क : १० रु०,
एक प्रति-८५ पै०,

'करहु लाज निज पन को'

दिसम्बर १९७७

ऐसी मूढ़ता या मन की ।

परिहरि राम-भगति-सुरसरिता, आस करत ओस-कन की ।
धूम समूह निरखि चातक ज्यों तृषित, जानि मति घन-की ।
नहिं तहँ सीतलता, न बारि, पुनि हानि होति लोचन की ।
ज्यो गज-काँच विलोकि से न जड़, छांह आपने तन की ।
टूटत अति आतुर अहार बस, छति बिसारि आनन की ।
कहँ लौं कहों कुचाल कृपानिधि ! जानत हौं गति मन की ।
'तुलसिदास' प्रभु ! हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे:—

जनवरी १९०२ में भारत-धर्म-महामण्डल भवन मथुरा में स्वामी राम का व्याख्यान,

श्रीनारायण स्वामी द्वारा लिखित नोटों से—

व्यावहारिक वेदान्त

सुधार

—स्वामी राम

अब यहाँ एक और प्रश्न उत्पन्न होता है कि प्रकाश के सात रंगों में काला औरसफेद गिने नहीं गये, इसलिये हम किस प्रकार कह सकते हैं कि ये दो रंग सूर्य के प्रकाश के ही हैं, और यदि सूर्य के प्रकाश के नहीं है, तो ये दोनों रंग कहाँ से उत्पन्न हो आए? इसके उत्तर में विज्ञान का यह कहना है कि यदि आप इन रंगों का भी स्त्रोत मालूम करना चाहें, तो पहले इन दोनों रंगों के प्रकट होने का कारण आपको जानना चाहिए, जब इनके प्रकट होने का कारण आपको मालूम हो जायगा, तो फिर इनके स्त्रोत का हाल भी अपने आप मालूम हो जायगा,। वस्तुओं का काला रंग उस समय होता है, जब वस्तुएं प्रकाश के सातों रंगों को अपने में शोषण (जज्ब) कर लेती हैं, और सफेद रंग उस समय होता है, जब वस्तुएं प्रकाश के सातों रंगों में से एक को भीं अपने में शोषित (जज्ब) नहीं करतीं, वरन् सातों के सातों रंगों को प्रकाश के स्वामी सूर्य की ओर वापस लौटा देती हैं, या दूसरे शब्दों में यों कहो कि वापस लौटाती रहती हैं। अत: ये दोनों रंग कहीं बाहर से किसी और वस्तु के द्वारा उत्पन्न नहीं हुए, वरन् वस्तुओं का ये दोनों रंग प्रकट करना केवल सूर्य के प्रकाश के सातों रंगों को अपने शोषित न करने या अपने से बाहर निकालकर सूर्य की ओर वापस लौटाने के कारण से हैं। इसलिए इन दोनों रगों के प्रकट होने का कारण भी सूर्य का प्रकाश ही हुआ। किंतु यहां पर कर्म और कर्त्ता या सूर्य और प्रकाश में कुछ अंतर ही नहीं, क्योंकि अपरिमित प्रकाश के स्रोत को विज्ञानविद् सूर्य मानते हैं, अत: इन दोनों रंगों का कर्त्ता अर्थात् इन दोनों का उत्पन्न करनेवाला सूर्य ही हुआ। अतएव ये दोनों रंग भी सूर्य से हैं। अस्तु, यहां पर और लम्बे तर्क की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इतने लम्बे प्रमाण से केवल तात्पर्य यह था कि संसार की समस्त वस्तुओं के काले और श्वेत हो जाने का कारण स्पष्ट किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय, और यह सिद्धांत आपकी समझ में आ जाय, कि संसार की समस्त वस्तुएं केवल त्याग से अर्थात् सूर्य के प्रकाश के रंगों को अपने में प्रविष्ट न करने से, या उनके त्याग करने से ही श्वेत होती है। अतः जिस प्रकार त्याग से अर्थात् प्रकाश के रंगों को अपने स्वामी की ओर वापस लौटा देने से समस्त वस्तुएं श्वेत रंग की होती है, वैसे ही प्राणियों के अन्तःकरण की भी यदि शैली ग्रहण करें, अर्थात् भांति-भांति के सांसारिक पदार्थों को अपने में शोषित न करें, वरन् उनके स्वामी परमात्मा की ओर लौटा दें, तो वे भी श्वेत वस्तुओं की भांति श्वेत, स्वच्छ और शुद्ध-चित्त हो सकते हैं। और जब चित्त उस पतली और स्वच्छ चिमनी के समान, जिसका उल्लेख पहले हो चुका है, स्वच्छ और निर्मल हो जायेंगे, तो उनमें से आत्मा का प्रकाश फूट फूटकर बाहर स्वतः निकलेगा, वरन् स्वयं आत्मरूपी ज्योति स्वच्छ पर्दे में से आंखें मारती हुई दिखाई देगी। विरुद्ध इसके जब समस्त सांसारिक पदार्थों का प्रवेश अन्तःकरण में हो जायेगा, अर्थात् जब मन समस्त भांति-भांति के पदार्थों की कामना करके उनको अपने में शोषित करेगा, तो वह (मन) काली वस्तुओं की भांति मलिन और काला हो जाएगा। इसलिए यदि आप स्वच्छ-हृदय होना चाहते हैं, तो प्यारो ! स्वच्छ वस्तुओं की तरह आप सब पदार्थों का त्याग स्वीकार कीजिये। संसार की समस्त काली वस्तुएं आपको यही उपदेश कर रही हैं कि यदि साँसारिक पदार्थों को (इस तुच्छ अहंकार के वश में आकर) अंतःकरण में शोषित करते जाओगे, तो उनकी भांति आपका अन्तःकरण या आप स्वयं काले हो जाओगे, और इस तुच्छ स्वार्थपरता के फंदे में फंसना ही आत्म-हनन करना है। इसलिये भगवन् ! स्वच्छ या शुद्ध अन्तःकरण बनने के लिये यह आवश्यक है कि आप श्वेत वस्तुओं के समान मन को समस्त साँसारिक पदार्थों का पीछा करने से हटा दें और मन में उनका लेश-मात्र भी प्रवेश न होने दें। जब इस प्रकार से आप आचरण करेंगे, तो फिर आपके रोम-रोम से यह आवाज सुनाई देगी कि त्याग ही अन्तःकरण की शुद्धि का एकमात्र साधन है।

किंतु स्मरण रहे कि उक्त अमृत उसी समय प्राप्त होगा, जब आप मन को पदार्थों से विरक्त करेंगे, अर्थात मन को त्याग सिखाएंगे, क्योंकि इस अमृत को पाने के लिये श्रुति भगवती यह सिखलाती है:—

धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति। (केनोपनिषद)

अर्थात् धैर्यवान् पुरुष इस जगत् से मुंह मोड़कर अमृत को प्राप्त होते हैं। वैसे भगवन् ! यदि आप अमृत चाहते हैं, तो मोड़ो मुंह जगत् के पदार्थों से, वापस लौटाओ मन को अपने मालिक सूर्य की ओर, देखो प्रत्येक पदार्थ में अपने सूर्य-रुपी आत्मदेव को ही, जिससे पदार्थ-भाव मन से गर्दभ-शृंगवत् उड़ जाय, जैसे नामदेव के मन से उड़ गया था कि जो कुत्ते को रोटी ले जाते देखकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ में साग लेकर यह कहने लगा—"रूखी न खाइयो मेरे स्वामी जी, अपना बांटा ले जाइयो" और उसके पीछे हो लिया था। [अर्थात् लोगों की दृष्टि में तो कुत्ता रोटी ले जा रहा था, मगर नामदेव के विचार में तो उसका स्वामी परमात्मा ही उनके हाथ से छीनकर ले जा रहा था।

इसी प्रकार प्यारो! मन को यदि पदार्थों से लौटाकर अपने सूर्य-रूपी आत्मदेव में लगाओगे, तो पदार्थ देखने के स्थान पर आपको वहां भी अपना आत्मदेव ही दिखाई देगा, वरन् पदार्थ-भाव बिल्कुल ही उड़ जायेगा। जगत् के चित्र-विचित्र पदार्थों को मन में न शोषित (जज्ब) करने का तात्पर्य यही है कि उनसे मन का मुंह ऐसा मुड़ जाय कि तनिक पदार्थ-भाव मन में न रहे, वरन् उसकी द्वैत-दृष्टि भी उड़ जाय, और परमात्मा ही परमात्मा दिखाई दे। किंतु ऐ सुधार के इच्छुको! ऐ संसार पर सहानुभूति प्रकट करने वालो! यह स्मरण रहे कि पदार्थ-भाव मन से कभी न मिटेगा, जब तक मन को आत्मा में लीन न करोगे। क्योंकि मन का केवल पदार्थों की ओर जाने से रोकना ही पदार्थ भाव को दूर करने के लिये काफी न होगा, वरन् मन का पदार्थों से हटकर अपने आत्मा में निष्ठा करना पदार्थ-भाव को दूर करेगा। ऐसे ही भगवन्! यदि आप पदार्थों का विचार अन्तःकरण से उड़ाना चाहते हैं, तो उठो! उठो! मन को आत्मा में स्थित करो, क्योंकि आपके मन का आत्मा में स्थित होना ही हलका होकर ऊपर उड़ जाना है। ब्रह्मनिष्ठ होने के बाद आपको सुधार करने की चिन्ता भी न करनी होगी, वरन् बिना प्रयत्न किये संसार का भला स्वाभाविक होता जायगा, चाहे उस समय आप निर्जन वन में बैठो, चाहे संसार में प्रकट रूप से उपदेश दो, स्वाभाविक ही संसार का कल्याण होगा। इसलिये प्यारो! इससे कि कोई और साधन सुधार का ग्रहण करो, यही रीति जो अपने आपको सुधार करने की पुकार-पुकारकर बतलाई गई हैं, और जिससे संसार का श्रेष्ठ उपकार हो सकता है, उसको आप हृदयंगम करो। ★

क्रमशः

स्वामी रामानन्द तीर्थ के कुछ संस्मरण-उन्हीं के शब्दों में

सन् १९७७ ई० में सक्रांति से एक दिन पूर्व नारायण स्वामी हिप्परेज (Hipperage) स्थान पर मुझे संन्यास की दीक्षा देने के लिए पधारे। हमें संन्यास की विधि का ज्ञान नहीं था। विचार करते करते अर्द्धरात्रि बीत गयी और इस अनुष्ठान में उपस्थित विद्वानों का आग्रह था कि इस सम्बन्ध में सभी धार्मिक विधान का पालन किया जाय। अतः मेरे साथी मुझे साथ लेकर स्वामी जी की सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उपस्थित हुए और उनसे कार्य दर्शन का अनुरोध किया। स्वामी (नारायण) जी विधि-विधान के प्रति चिन्तित दिखायी दिये और फिर हमसे बोले "यदि आप अपने परिवार के द्वारा अपनायी गयी विधि का अनुसरण करना चाहते हैं तो किसी प्रकार के अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। तीर्थ परम्परा को इन अनुष्ठानों से कोई परिचय नहीं है। स्वामी राम के संन्याश्रम में प्रवेश करने पर कोई ऐसा अनुष्ठान नहीं किया गया। उनकी अन्तरात्मा में प्रसन्न हुआ और वे प्रवहमान नदी के जल में जा खड़े हुए। उन्होंने मुझे जाकर नाई लाने को कहा और अपना सिर मुण्डवा लिया। फिर मेरे द्वारा रंगे हुऐ काषाय वस्त्र उनका उच्चारण करते हुए धारण कर लिये। वे स्वयं दैवी आन्नद की हिलोरों में खो गये थे। ऐसे ही उन्होंने मुझे भी संन्यासाश्रम में प्रवेश कराया था। स्वामी राम के आदेश पर ही मैंने फैजाबाद में भाषण दिया था। उसे सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुए और मुझसे बोले, तुम्हारा भाषण बहुत उच्चकोटि का रहा। नरायण उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। फिर उन्होंने कहा अब हमारे मार्ग जुदा-जुदा रहेंगे। मुझसे अलग रहकर तुम्हारी आत्मा विकसित होगी, मैं रो पड़ा तथा उनके चरणों में गिर पड़ा, फैजाबाद से लखनऊ तक की हमारी रेल यात्रा में राम ने अपने दृष्टिकोण को मेरे हृदय पर अंकित करने का प्रयत्न किया। स्वयं सिसकियां भरते हुए राम ने कहा-नारायण जी, राम ने धन दौलत का त्याग कर दिया है, इसने गृहस्थ जीवन की सुख सुविधाओं को तिलान्जलि दे दी है, यह संसार के सभी व्यवहार को छोड़ चुका है, किन्तु यह अपने परम प्रिय नारायण का त्याग नहीं कर पाया है। अब लोक कल्याण के लिए उसे नारायण को भी छोड़ना होगा।

गुरु तथा शिष्य दोनों लखनऊ स्टेशन पर उतरे जहां प्रान्त सुप्रसिद्ध नेता बाबू गंगा प्रसाद वर्मा के घर में उन्हें ठहराया गया। वहां स्वामी राम ने उन्हें 'संन्यास' की दीक्षा दी। कुछ घन्टों बाद दोनों विपरीत दिशाओं में जाने वाली रेल गाड़ियों में बैठकर चले गये। 'यह है संन्यास धारण करने की विधि'। ★

गीत

गान गायक का नही व्यापार, उसकी विकलता है;
राग वीणा की नहीं झंकार, उसकी विकलता है!;
भावनाओं का मधुर आधार सांसों से विनिर्मित,
गीत कवि-उर का नहीं उपहार, उसकी विकलता है। —बच्चन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ संस्मरण

स्वामी अद्वैतानन्द

मनुष्य जन्म लेता है और कुछ काल के बाद संसार से चला जाता है। केवल उसकी उपलब्धियां ही इस संसार में शेष रह जाती हैं जो जनमानस के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाती हैं। पूज्यपाद सत्गुरुदेव स्वामी हरिॐ जी महाराज का शरीर यद्यपि आज हमारे सम्मुख नहीं है परन्तु उनके द्वारा दिये गये उपदेश, दृष्टान्त आज भी हमारे जीवन का मार्ग दर्शन करते हैं।

श्रद्धेय सतगुरुदेव स्वामी हरिॐजी महाराज प्रत्येक बात को दृष्टान्त द्वारा समझाया करते थे। एक बार अमृतसर में स्वामी जी के पास एक सेठ और सेठानी आए। उन्होंने सुन्दर गुलाब के फूलों की माला स्वामी जी को पहनायी। स्वामी जी माला हाथ में लेकर देखने लगे, सभी लोग काफी समय तक स्वामी जी के पास बैठे रहे परन्तु स्वामी जी ने दृष्टि उठाकर किसी की ओर नहीं देखा। सब लोग उदास हो गये। उनके नेत्रों से आंसू धारा बहने लगी। कुछ समय बाद सब लोग अपने अपने घर चले गये। दूसरे दिन जब वे लोग आये तो स्वामी जी सबसे हंसकर प्रेमपूर्वक मिले। भक्तों ने पूछा कि स्वामी जी! कल क्या हो गया था? आप हमसे बोले नहीं। स्वामी जी कहने लगे आपने इतनी सुन्दर माला दी कि मेरा मन उसी माला में रम गया। किसी की तरफ देखने की इच्छा नहीं हुई। भक्त कहने लगे स्वामी हमारी दी हुई वस्तु को आपने हम से अधिक महत्व दिया। आप वस्तु में रम गये, देने वाले को बिल्कुल भूल गये। स्वामी जी कहने लगे आपकी वस्तु को तो प्यार कर रहा था। आप लोगों को दुःखी नहीं होना चाहिए। भक्त कहने लगे स्वामी जी आप हमें खिलाए और आपके पास बैठकर हम आपसे बात न करें तो आपको जरूर दुःख होगा। स्वामी जी बोले ओहो! तभी भगवान रो रोकर मुझसे कह रहे थे कि सभी भक्तों को मैंने स्त्री, पुत्र, घर, धन, वाहन आदि दिये हैं। ये लोग उनमें रम गये हैं। मुझे बिल्कुल भूल गये मेरे से एक मिनट नौकर की भांति भी बात नहीं करते। ऐसे-२ सुन्दर प्रमाण देकर स्वामी जी शिक्षा दिया करते थे।

सत्गुरुदेव स्वामी हरिॐ जी महाराज कहते थे कि मनुष्य को भूतकाल के शुभ-कर्मों के फलस्वरूप ऐश्वर्य प्राप्त होता है। सिनेमा में जैसे-जैसे रील घूमती है वैसा-वैसा चित्र दिखाई पड़ता है। उसी प्रकार पूर्व तप द्वारा रूप, धन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। जो इस रहस्य को जान लेता है वह वर्तमान को शुभ-कर्मों द्वारा तपाकर भविष्य को बना लेता है। इन भौतिक वस्तुओं के मोह में ज्ञानी नहीं फंसता है, वह सदैव ईश्वर से अपना सम्पर्क स्थापित करता है। सिनेमा के चित्र अन्धकार में दिखाई देते हैं उसी प्रकार जगत की अने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कता अज्ञान तक ही होती है। ज्ञान में सब समाप्त हो जाता है। परमात्मा मनुष्य को सब ऐश्वर्य प्रदान करता और आनन्द देता है। मनुष्य दाता को भूलकर उसके दिए ऐश्वर्य में रम जाता है। मानव को ईश्वर से प्रेम करना चाहिए क्योंकि समस्त जगत का आधार परमेश्वर है।

स्वामी जी का व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली था। उनके सम्पर्क में आकर दुष्ट व्यक्ति भी सज्जन बन जाता था। एक बार स्वामी जी झांसी से शिवपुरी जा रहे थे ग्यारह बजे रात्रि में शिवपुरी के निकट डाकू रास्ते को घेरकर खड़े हो गये। ड्राईवर ने कहा—स्वामी जी आज हम डाकुओं के हाथों में पड़ गये हैं। स्वामी जी कहने लगे उनके पास कार को ले चलो। ड्राईवर ने कार को डाकुओं के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। स्वामी जी आगे की सीट पर बैठे थे उतरकर डाकुओं के सामने खड़े होकर बोले हरिॐ, आप सब लोगों को क्या चाहिए ? डाकुओं ने कहा, "महाराज आपके दर्शन के लिए हम लोग खड़े हैं।" स्वामी जी कहने लगे भगवन् ! आप संकोच न करिये हमारे पास ढाई हजार रूपया है। जरूरत हो तो आप लोगों को दे दूं। डाकुओं ने कहा स्वामी जी ! हम लोग महात्माओं से सांसारिक वस्तुएं नहीं लेते। संसारी जीवों से हमें भौतिक वस्तु मिल जाती है। हम अनाचारी, मनुष्यों को लूटते हैं महात्मा तो भक्तों को, गरीबों को देते हैं। इतना कहकर स्वामी जी को नमस्कार करके डाकू वहां से चले गए। कैसा अद्भुत गुरुदेव के दर्शनमात्र का प्रभाव था।

स्वामी जी में आत्मबल था। वे लोगों को कहते थे "जहां भय हो वहां अवश्य जाओ। आत्म विश्वास से बढकर भय को दूर करने वाली कोई शक्ति नहीं। भय में शक्ति नहीं कि वह आत्मबल के सम्मुख रह सके आप अपना उद्धार अपने आप कर सकते हैं और स्वयं रसातल को भी जा सकते हैं।" स्वामी जी सदैव गीता के इस श्लोक द्वारा साहस और धैर्य बंधाते थे:—

उद्धरेदात्मनात्मानंमात्मानभवसादयेत
आत्मैबह्यात्मनीबन्धुरात्मैवरिपुरात्मनः

मोटर को ऊपर ले जाने के लिये पेट्रोल की आवश्यकता होती है और नीचे वह स्वयं ही चली जाती है इसी प्रकार अपने उत्थान करने में अध्यवसाय और लगन तथा तन्मयता को अपेक्षा होती है किन्तु नीचे या अधःपतन में इसकी कोई भी आवश्यकता नहीं होती। अधः पतन और उत्थान दोनों विचारों से होते हैं। विवेक युक्त व्यक्ति सदैव ऊंचा उठता है। विवेकहीन का पतन होता है।

श्रद्धान्जलि

जब मैंने सत्यप्रकाश जी के द्वारा फोन पर यह दुःखद समाचार सुना तो मन ऐसे व्याकुल हो गया जसा-बिन पानी के मीन। प्यार के पुञ्ज, उदारता की मूर्ति के चरणों में कोटिशः प्रणाम करता हुआ हार्दिक श्रद्धान्जली पुष्पान्जली समर्पित करता हूं।

स्वामी सत्यदेव
सत्य साधना आश्रम
दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव पत्र

स्वामिन् !

मुझ अकिंचन को आप इतना अगाध, असीम, अतुलनीय स्नेह देते हैं यह आपकी महानता, उदारता एवं सौजन्यता है। वरना कहां आप, कहां मैं ? आप हिमालय मैं हिमकण। आप सागर मैं सागर की बूंद। आप संचित सुमेरु, मैं विकीर्णरेणु आप सुधाकर कोर मैं पिपासित चकोर। आप ज्योत्सना में ओत-प्रोत मैं खद्योत। आप सिन्धु लहर, मैं टिट्टभीअंड। आप असीम क्षितिज, मैं ससीम पदरज। आप पुण्य श्लोक, मैं अरण्य शोक। आप वेदान्त दिग्गज स्वामी, मैं "अथातो ब्रह्मा–जिज्ञासा" का अनुगामी। आप सृष्टि संहार के मन्त्रदाता, मैं आत्मसमर्पण के मन्त्र द्वारा आत्म गाता। आप ज्ञान दिनकर, मैं सम्पुटित सरोज आप गौरव सम्पर्क योगी, मैं रौरव नरक भोगी आप सत् + चित् + आनन्द, मैं नित वित्तरहित मतिमन्द। आप सत्यं शिवं सुन्दरम् के ज्ञान से शान्त, में रज्जु सर्प की भ्रान्ति से भ्रान्त कृषि दृष्टा कवि कुल चारण-चरण। आप विदेहयोगी, मैं संदेह रोगी।

आप सम्पूर्ण "अमरकोश" मैं यस्य ज्ञान-दयासिन्धो······· के अपूर्ण ज्ञानमात्र से आप्त सन्तोष। आप कृष्णाकुल मीरा की प्रेम साधना मैं कींट मनोरथ दारु शरीरा की तृष्णाकुल वासना। आप क्षितिज से सुदूर अगम्य, मैं जहाज का मति-भ्रान्त विहंगम। आप योगवशिष्ट की -गरिमा, मैं रोग कष्ट की लघिमा। आप "कामायनी" के मनु मैं किरातार्जुनीयम् का किशरा। आप "गीत गोविन्द" की कोमल कान्त पदावली, मैं पृथ्वीराज रासो का तोमर छन्दा आप हर्ष और बाण भट्ट की वाग्विदग्धता मैं घाघ और भड्डरी की कहावत। आप महाकाश, मैं घटाकाश। आप मंगल भवन अमंगल-हारी, मैं मांगि के खाऊँ, मसान में सोऊँ। आप सूर के कृष्ण, मैं तुलसी की विनय पत्रिका। आप राम कथा सुन्दर करतारी, मैं संसय विहग। आप 'कादम्बरी' के महावाक्य, मैं केवल अनुस्वार (०)।

आप "बिछरत एक प्रान हर लेहीं" मैं मिलत एक दु:ख दारुन देहीं। आप उतर ठाढ़ि भपे सुरसरि रेता, मैं अपार संसार समुद्रमध्ये समज्जतों में शरणं किमास्ति। आप करुणा विगलित आदि कवि, में क्रौञ्चवधकर्ता निषाद। आप कथा सरित-सागर, मैं अस्ति महिललरोप्यम् नाम नगरम्।

आप शब्द वेधी बाण चालक आचार्य द्रोण, मैं विचार्य वनेचर भील बालक एकलव्य का श्रद्धा-मयदृष्टिकोण। आ धृतिक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिन्द्रियनिग्रहः के धर्म-मर्म कारण, मैं अहेः पदानि गणियति तमासि जले चिरगतस्य का सकर्म उदाहरण। आप राम गुण -ग्राम गायक महर्षि बाल्मीकि, मैं ग्रामवन संचित बाल्मीकि राशि। आप महामानव मिशन भूषण मैं केवल माना दूषण आप पावन गांगेयवारि मैं ढोल गंवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूद्र पशु नारी ! आप क्षमाशील चक्रपाणि, मैं उत्पातशील कुठारपाणि ।

आप स्वर्णिक कल्पतरू मैं प्रलुब्धवा मन । आप सुधासिन्धु मैं मुधा ओस बिन्दु । आप नीर-क्षीर विवेकी मराल मैं कीटभक्षी बकुल बाल । आप राम राज्य की सुखद कल्पना, मैं कलयुग की । दैविक दैहिक भौतिक तापा की जल्पना । आप सरस सहकार तरु मैं हाहाकार करता पिपासित मरु ! आप बालि बालक चरणवत् निश्चल मैं पारदकण सा चंचल ।

आप मदविहीन महानसन्त, मैं विरुद्ध विहीन हीन जन्तु । आप संयोग की असीम सुखानुभूति, मैं वियोग वेदना की करुणा से परिपूर्ण भवभूति । आप रति रामहिं सों, मैं कामहि नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम । आप सर्वेषां मूर्ध्नि तिष्ठेत् मैं विशीयेत् वनेऽथवा । आप क्व सूर्य प्रभवोवंशः मैं क्वः चाल्पविषयामतिः । आप अगाध विशाल वेदान्त ज्ञानाब्धि, मैं तितीर्षुः दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मिसागरम् ॥

किमधिकम् ।

जौं अपने सब अवगुन कहऊँ, बाढ़ई कथा, पार नहिं लहउँ ।

और फिर-करौं कहा मुख एक प्रसंसा,

जय गोविन्द मन-मानस हन्सा ।

बस केवल यही अहैतुकी कृपा बनाये रखें –

अब कुछ नाथ न चाहिअ मोरे, दीनदयाल अनुग्रह तोरे ।

"गीध गनिका जान सबरी, खल आजामिल मान मोहि तुम तारिये" ॥

चरणानुगामी—
मैं मूरख खल कामी
चिरविनीत—शान्त

बाल्मीकि | तुलसी भयो

त्रेता काव्य निबन्ध करी सत कोटि रमायन ।
इक अक्षर उद्धरे ब्रह्माहत्यादि परायन ।
अब भक्तनि सुख देत बहुरि लीला बिस्तारी ।
रामचरन रस मत्त रटत अहनिसि व्रतधारी ।

संसार अपार के पार को सुगम रूप नौका लयो ।
कलि–कुटिल–जीव–निस्तार हेतु, बाल्मीकि तुलसी भयो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु कथा

देवर्षि नारद विश्व भ्रमण कर रहे थे, एक स्थान पर जाते हुये उनके माथे पर खुजली हुई और उनका हाथ उस ओर बडा। दैवयोग से उस समय सामने से चार सुन्दर कन्याएं गुजरीं। उन्होंने जब नारद का हाथ अपने माथे पर देखा तो उनमें इस बात पर वाद-विवाद छिड़ गया कि उस ऋषि ने हाथ उठाकर नमस्कार किया है। प्रत्येक कन्या यह कहने लगी कि मुझे नमस्कार किया गया है। अन्त में निर्णय हुआ कि क्यों न नमस्कार करने वाले से पूछा जाये कि उसने किस कन्या का अभिवादन किया है। वे भाग कर मुड़ और देवर्षि का मार्ग रोककर खड़ी हो गई। देवर्षि विस्मित हुए और बोले—कन्याओं! तुमने मेरा मार्ग क्यों रोक रखा ? वे बोली – महात्मन्! आपने अभी अभी अपने दायें हाथ से अपने माथे का स्पर्श करके उस समय नमस्कार किया जब हम आपके सामने से जा रही थी। क्या आप बतायेंगे कि हम में से किसको आपने नमस्कार किया हैं ? नारद दुविधा में पड़ गये और एक क्षण सोचने के बाद बोले—मुझे अपना अपना परिचय दो, तभी मैं इस प्रश्न का उत्तर दे पाऊंगा।

इस पर एक कन्या ने कहा—मैं लक्ष्मी हूँ। देवर्षि बोले—तुम तो चंचल हो। तुम्हारा विश्वास कैसे किया जा सकता है ? आज तुम यहां हो और कल वहां। तुम्हारे सम्पर्क में आने वाला गर्व से फूला नहीं समाता किन्तु कुछ समय बाद वह भिक्षा मांगता दिखाई देता है। भला तुम्हारा अभिवादन कैसे किया जा सकता हैं ? यह सुनकर वह अपना सा मुंह लेकर एक ओर खड़ी हो गई।

अब दूसरी कन्या की बारी आई। वह बोली—मैं वाणी की अधिष्ठात् देवी सरस्वती हूं। देवर्षि बोले—तुमसे जितना दूर रहें अच्छा है। तुम अपने शस्त्र वाणी द्वारा किसी को सम्मानित कराती हो और किसी को तिरस्कृत। जिस पर तुम्हारी कृपादृष्टि होती है वह निश्चय से सुखी अवस्था में नही रहता। बड़े विद्वान भिक्षा मांगते दिखाई दे रहे हैं और मूर्खों के शिरोमणि समृद्धि-वान होकर विद्वानों पर शासन करते हैं।

तीसरी कन्या 'बुद्धि' थी। उसको देखकर नारद जी बोले – तुम्हारा काम उस समय सक्रिय होना है जब कोई व्यक्ति भयकर भूल कर लेता है। पहले तुम उसे नटखट मन मन की दया पर छोड़ देती हो और फिर 'पाश्चात्ताप' का सन्देश लेकर प्रकट हो जाती है। भला तुमसे किसी को क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ हो सकता है ?

चौथी कन्या चुपचाप आगे बढ़ी और बोली—मैं 'भावी' हूँ। उसके शब्द सुनते ही नारद नतमस्तक हो गये और बोले—देवि ! तुम्हें मेरा शतशः नमस्कार है। सभी तुम्हारा लोहा मानते हैं। कोई तुमसे बच नहीं सकता है। तुमने तो देवि देवताओं, अवतारी पुरुषों को भी नहीं छोड़ा है। यदि तुम्हारी शक्ति अमोघ न होती तो भगवान राम, योगिराज श्रीकृष्ण आदि, जिन्होंने प्राणी-मात्र की रक्षा की है, अन्त में तुम्हारे आगे घुटने न टेक देते। भगवान राम का वनवास, भगवान श्रीकृष्ण पर व्याध का प्रहार और पाण्डवों के जीवन का विजय प्राप्त करने के बाद भी दुःखान्त न होता। देवि तुम मुझे भी एक स्थान में बैठ कर भगवान की आराधना नहीं करने देती हो। मैं स्थान-स्थान पर घूमता हुआ अपना समय व्यतीत करता हूँ। क्या कोई तुम्हारे प्रभाव से सुरक्षित रह सकता है ? कदापि नहीं।

यह कहकर नारद आगे बढ़े और कन्याओं ने भी उनके शब्दों पर विचार करते हुए अपनी राह ली।

धर्म है ?

जिन मुश्किलों में मुस्कराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कराना धर्म है।

जिस वक्त जीना गैर-मुमकिन सा लगे
उस वक्त जीना फर्ज है इन्सान का।
लाजिम लहर के साथ है तब खेलना,
जब हो समुन्दर पर नशा तूफान का।

जिस वायु का दीपक बुझाना ध्येय हो,
उस वायु में दीपक जलाना धर्म है। जिन मुश्किलों ....

हो ही नहीं मंजिल कहीं जिस राह की,
उस राह चलना चाहिए संसार को।
जिस दर्द से सारी उमर रोते कटे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दर्द पाना है जरूरी प्यार को ।

जिस चाह का हस्ती मिटाना काम हो,
उस चाह पर हस्ती मिटाना धर्म है । जिन मुश्किलों ··· ······

आदत पड़ी हो भूल जाने की जिसे
हरदम उसी का नाम हो हर सांस में ।
उसकी खबर में ही सफर सारा कटे
जो हर नजर से हर तरह हो बेखबर

जिस आंख का आंखें चुराना काम हो
उस आंख से आंखें मिलाना धर्म है । जिन मुश्किलों···· ·…

जब हाथ से टूटे न अपनी हथकड़ी
तब मांग लो ताकत स्वयं जंजीर से ।
जिस दम न थमती हो नयन-सावन झड़ी,
उस दम हंसी ले लो किसी तस्वीर से ।

जब गीत गाना गुनगुनाना जुर्म हो,
तब गीत गाना गुनगुनाना धर्म है । जिन मुश्किलों ····· ·· ··

अधिकार जब अधिकार पर शासन करे
तब छीनना अधिकार ही कर्तव्य है ।
संहार ही हो जब सृजन के नाम पर
तब सृजन का संहार ही भवितव्य है ।

वस गरज यह गिरते हुए इन्सान को
हर तरह हर विधि उठाना धर्म है । जिन मुश्किलों ·····……

—"नीरज"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ आत्म - निरीक्षण की तात्विक मीमाँसा ★

★ बल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश'
साहित्यरत्न, धर्मरत्न, विज्ञानरत्न, आगमवाचस्पति

आत्म प्रत्यक्ष—

दर्शन की भाषा में, जिस भाँति हम इन्द्रियों द्वारा परिमित घट आदि वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, उसी भांति साधना द्वारा हम अपरिमित आत्मतत्व का भी प्रत्यक्ष कर सकते है। आत्मा को स्वरूप सच्चिदानन्द है। सत्ता, चैतन्य और आनन्द उसके गुण है। वह अनादि और अनन्त है, काल और दिशा से वह बंधी हुई नहीं है। वह स्व का नित्य और वृहत् रूप है। साधन द्वारा हम जितना 'स्वरूप' के निकट पहुंचते हैं, उतना ही हम चैतन्य और आनन्द का अनुभव करते हैं। वह अनुभव इन्द्रिय–जन्य सुख से विचित्र होता है, इसी का नाम ब्रह्मानन्द है।

साहित्य और कला के सन्दर्भ में एक सिद्धांत है जिसके अनुसार कला सुख, जिसे रस या आनन्द कहा जाता है, आत्म–प्रत्यक्ष का ही फल होता है। विश्वनाथ के अनुसार 'रस ब्रह्मास्वाद –सहोदर होता है। ब्रह्म अथवा के वृहत् स्वरूप की प्रत्यक्ष अनुभूति के समान होता है। कला–कृति का प्रभाव जीवन की प्रवृत्तियों को अन्तर्मुखी बना कर 'स्व' के आदि–स्रोत अथवा आत्मा की ओर ले जाता है। यह कला का आध्यात्मिक सिद्धांत है। कला का सर्जन आस्वादन उसी साधना से होता है। जिससे आत्म–आराधना होती है। इसीलिए कवि का अर्थ कवन करने वाला तथा क्रान्तदर्शी किया गया है। पण्डितराज जगन्नाथ के अनुसार साहित्य में रसास्वादन की प्रक्रिया विदा-वरण भंग या आत्मा–प्रत्यक्ष की प्रक्रिया है।

आत्मप्रलम्बन—

आत्म-प्रक्षेपण के ही अधिक उन्नत, उदान्त रुप को हम आत्म प्रलम्बन कह सकते है। अपने आदर्श की कल्पना, उसे प्राप्त करने की इच्छा हमें अपने अहम् को अधिक व्यापक और विस्तृत करने को विवश करती है। ऊंचे आदर्शों की महत्वाकांक्षा हमारी आत्मा को अह की सीमाओं से ऊपर उठाती है।

आत्मवाद –

भारतीय दर्शन में सामान्यतः दो धाराएं है–आत्मवाद और अनात्मवाद या नैरात्म्यवाद। आत्मवाद के अन्तर्गत समस्त हिन्दू दर्शन और अनात्मवाद में बौद्ध तथा चार्वाक दर्शन है। जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन दोनों का समुच्चय करता है। आत्मवाद के अनुसार आत्मा नित्य, अजर-अमर, सभी वस्तुओं की साक्षी, चेतन और अपरिवर्तनशील है अनात्मवाद के अनुसार या तो आत्मा है ही नहीं और या तो वह नश्वर तथा परिवर्तनशील है। जैन मत में वह परिवर्तनशील और अपरिवर्तनशील दोनों है, जो स्वतः विप्रतिषेधक होने के कारण ठीक नहीं है। अतः आत्मवाद और अनात्मवाद, ये ही दो प्रमुख सिद्धान्त आत्मा के बारे में है।

यास्क ने आत्मा शब्द की निरूक्ति यों की है - आत्मा तते वप्ति वापि वाप्त इव स्याद् यावड् व्याप्तिभूत इति, अर्थात्—आत्मा शब्द अत् धातु (सतत चलना) या अप् धातु (व्याप्त होना) से से बना है। आत्मा को आत्मा इसलिये कहा जाता है कि यह सदा चलती रहती है या सदा समस्त वस्तुओं में व्याप्त रहती है। शंकराचार्य व्युत्पत्ति करते समय एक प्राचीन श्लोक(लिंग पुराण ७०।९६ का उल्लेख करते हैं, जो यों है—यच्चाति यदादत्ते विषानिह। यच्चास्य सन्ततो भावस्तस्मादात्मेति कीर्त्यते।। अर्थात्, क्योंकि यह सबको व्याप्त करती है (आप्नोति), ग्रहण करती है (आदत्तो), इस लोक में विषयों का मोती है (अत्ति) और इसका सदैव सद्भाव रहता है(अतति) इसलिये इसे आत्मा कहा जाता है। इस व्युत्पत्ति के पूर्व वे कहते हैं कि आत्मा शब्द इस लोक में प्रत्यक् (सम्पूर्ण विषयों को जानने वाला) के अर्थ में रूढ़ है और किसी अन्य अर्थ में नहीं (कठोपनिषद्भाष्य ११) इसलिये वे इसे प्रायः प्रत्यगात्मा कहते हैं। कभी-कभी प्रत्यगात्म की वे व्याख्या करते हैं कि यह प्रत्यक अर्थात् सम्पूर्ण विषयों को जाननेवाला और आत्मा दोनों हैं। यहां आत्मा का अर्थ उस वस्तु से है जिसका सातत्यभाव हो जो सदैव एकतायुक्त हो।

उपनिषदों में आत्मा के स्वरूप की खोज बड़ी छान-बीन के साथ की गई है। उनके अध्ययन से पता चलता है कि सबसे पहले आत्मा शब्द का स्वभाव या किसी वस्तु की सत्ता (वस्तुत्व) या किसीं वस्तु की एकता (वस्तु का एक होना)के अर्थ में हुआ। फिर उसमें सातत्यभाव जोड़ दिया गया और जिसकी सतत सत्ता बनी रहे अर्थात् जो सतगामी हो उसी को आत्मा कहा जाने लगा। एकता और सततगामिता से इस प्रकार 'तत्व' का विचार सम्पन्न हुआ। तत्व के अर्थ में आत्मा शब्द का प्रयोग होने लगा। छन्दोग्योपनिषद् में 'आधिदैवतरूप से आदित्य, चन्द्रमा, विद्युत, स्तनयित्नु, वायु, आकाश, अग्नि तथा जल को क्रमशः आत्मा तत्व माना गया। फिर वही आध्यात्मरूप से आदर्श (दर्पण), छाया प्रतिध्वनि, शब्द शरीर, दक्षिणनेत्र और सव्य नेत्र को क्रमशः आत्मा तत्व समझा गया, आध्यात्मपक्ष पर चिन्तन बढ़ जाने से वाक्, वाणी, चक्षु। चिन्त, मन तथा हृदय को विभिन्न औपनिषद दार्शनिकों ने आत्मा या तत्व माना। ऐतरेयोपनिषद् में आत्मा को मूल तत्व या जगत का अविकारण ही कह दिया गया और आत्मा से ही सृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उत्पन्न सिद्ध किया गया । क्योंकि जगत् के आदि कारण ऊपर पर्याय ब्रह्म हैं, अतः आत्मा को ही ब्रह्म समझा गया । माण्डूक्योपनिषद् में आत्मा ब्रह्म है, इसका स्पष्ट उल्लेख है । 'तत्वमसि (वह तू है) छान्दोग्योपनिषद् में माना गया । अब तक जैसा शंकराचार्य कहते हैं, आत्मा प्रत्यगात्मा के अर्थ में और ब्रह्म जगत् के मूल कारण के अर्थ में रूढ़ हो चले । सोहमस्मि अनुभव में आत्मा तथा अभेद का प्रत्यक्ष ज्ञान हुआ । कुछ लोगों ने इस अभेद में रुचि दिखलायी और प्रत्यगात्मा को जीवात्मा तथा ब्रह्म को परमात्मा कहकर दोनों को सदा भिन्न दिखलाया । इसके फलस्वरूप आत्मा जीवात्मा के अर्थ में रूढ़ हो चला । फिर उसे कुछ ने कर्ता माना तो कुछ ने भोक्ता और कुछ ने ज्ञाता। अभेद वादियों ने इसे कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता न मानकर सत् चित् या ज्ञान तथा आनन्द माना । शब्द के इस वेदोपनिषत्कालीन इतिहास में आत्मवादी ओर अनात्मवाद का संघर्ष उल्लेखनीय है । सतगामिता दोनों को मान्य है, पर आत्मवादी आत्मा को सततगामी और एकरूप, दोनों मानता है । अनात्मवादी उसको सततगामी या बहुरूप, या अनेक रूप मानता है । उसके मत से आत्मा प्रतिक्षण परिवर्तन होती रहती है । और वह नित्यनूतन है । यही बौद्ध मत है । एकरूपता और सततगामिता का समन्वय इस मत से व्याघातक है । 'पर हिन्दू दर्शन के अनुसार आत्मा सदैव एकरूप रहकर ही सततगामी या अमर है , इस कारण दोनों का समन्वय सम्भव है । आत्मवाद और अनात्मवाद में इस विवाद से स्पष्ट है यद्यपि एकता या एकरूपता आत्मा का प्रधान अंश है, तथापि बौद्ध नितांत आत्मवादी नहीं है, क्योंकि वे सातत्य के अर्थ में आत्मा को मानते हैं ।

आत्मा को हमने चैतन्य के अर्थ में रूढ़ सिद्ध किया है । चैतन्य जानना है । हम बहुत सी वस्तुओं को देखते, सुनते या जानते हैं, इसलिए चैतन्य अवश्य है । अगर चैतन्य या जाननेवाला न होता तो फिर उन वस्तुओं का ज्ञान कैसे होता ? ज्ञान के न होने पर शेष भी नहीं हो सकता । शेष के होने पर ज्ञान और ज्ञाता भी अवश्य है । अतः चैतन्यरूप आत्मा है । इस प्रमाण से सिद्ध है कि आत्मा सभी क्षेत्र वस्तुओं का आधार है, अतः वह कभी शेष या विषय नहीं हो सकती ।

जो लोग आत्मा के नास्तित्व को मानते हैं, वे उसे 'अभाव' शून्य या नहीं है कहते या मानते हैं । पर 'अभाव' शून्य नहीं हैं आदि शेष विषय है । यदि हम इनको इनके रूप में मानते हैं तो फिर हमें इनके ज्ञाता और ज्ञान को भी मानना पड़ेगा, अतः नास्तिक भी वस्तुतः आत्मा के अस्तित्व को मानता है । आत्मा के अस्तित्व का प्रत्याख्यान करना वदतो व्याघात है । इस प्रमाण से सिद्ध है कि आत्मा अप्रत्याख्येय या अखण्डनीय है ।

यदि कोई आत्मा के अस्तित्व पर संशय करता है कि वह है या नहीं, तो वह भी कम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम संशय को तो मानता ही है। संशय भी अनुपपन्न है। अतः शशय भी सिद्ध करता है कि आत्मा, जो संशय कर रही है, अवश्य है। इससे सिद्ध है कि आत्मा सन्देह का विषय नहीं है।

अपनी आत्मा की प्रतीति सबको होती है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है, कहता है और अनुभव करता है कि मैं हूं। कोई यह अनुभव नहीं करता कि मैं नहीं हूं। मैं हूं का यह अनुभव ही तो आत्मा हैं। अतः आत्मा है। इससे सिद्ध होता है कि आत्मा बिल्कुल अज्ञेय भी नहीं है।

यदि कोई कहे कि आत्मा अविषय है, अगोचर है, उसके विषय में हाँ और नहीं, कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये सभी प्रमेय या विषय हैं तो कुछ हद तक ठीक हैं। पर इसका यह आशय नहीं कि आत्मा नहीं है। वस्तुतः शांति द्वारा ही आत्मा के अस्तित्व का निरूपण होता है। यही कारण है कि जब गौतम बुद्ध से प्रश्न किये गये कि आत्मा है या नहीं तो वे शान्त या मौन रहे। उपनिषदों में भी यही सिद्धांत बतलाया गया है। उपशन्तोहि अयमात्मा यह मौन या शान्ति ही आत्मा है। ज्ञान-साधना से आत्मा के अस्तित्व का यही प्रमाण मिलता है। आत्मा के अस्तित्व के इन प्रमाणों से यह बात भी सिद्ध होती है कि आत्मा न तो विषय या प्रमेय पदार्थ है और न अविय पदार्थ। उसका स्वभाव सर्वविषयवाद या सर्वज्ञेयवाद तथा अज्ञेयवाद इन दोषों से मुक्त है।

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, और पूर्ण ज्ञान, आत्मा की चार अवस्थायें हैं। कुछ लोग इन सम्मिश्रण से कुछ अन्य अवस्थाओं को भी मानते जैसे जाग्रत-स्वप्न, स्वप्न सुषुप्ति, जाग्रत सुषुप्ति आदि। चौथी अवस्था को हम पूर्ण ज्ञान कह हैं, इसे पारिभाषिक शब्दावली में तुरीय (चौथी) अवस्था ही कहा जाता है, क्योंकि यह जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति भिन्न भिन्न है। वस्तुतः यह इसका निषेधात्मक वर्णन है। तुरीय अवस्था अन्य सभी अवस्थाओं की आधार शिला है। इसी अवस्था आत्मा को अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है। अन्य अवस्थाओं में आत्मा का ज्ञान अपूर्ण सदोष ही रहता है।

जाग्रत अवस्था में चैतन्य को विश्व, स्वप्न तेजस् और सुषुप्ति में प्राज्ञ कहते हैं। विश्व तेजस और प्राज्ञ तीनों एक दूसरे के बाधक और निराकृत है। वे सततगामी नहीं है। इन तीनों की प्रतिष्ठा आत्मा में है। आत्मा ही इन तीनों की गहनतम सत्ता है, वे आत्मा के ही आभास हैं।

वृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को बतलाया है कि श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन से सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है और कुछ शेष नहीं रह जाता। श्रवण मतलब है उपनिषद के वाक्यों का स्वाध्याय करना। मनन का आशय है उन पर युक्तिपूर्वक विचार करना। निदिध्यासन आत्मा का अबाध या सतत चिन्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह ज्ञान मार्ग है। कर्म मार्ग तथा भक्ति मार्ग से भी लोग आत्मा का ान प्राप्त कर सकते हैं।

अद्वैत-सम्मत आत्मवाद का प्रभाव हिन्दी साहित्यकार पर विशेष पड़ा है। मध्यकालीन सन्तों में से प्रायः सभी आत्म ज्ञान को विशेष महत्व देते हैं। आत्मज्ञान को ही वे मानव-जीवन का निःश्रेयस् समझते हैं। जैसे कस्तूरी मृग अपनी नाभि में कस्तूरी को रखे रहने पर भी उसकी खोज के लिए सर्वत्र घूमता रहता है, वैसे अविवेकी पुरुष आत्मा को जानने के लिए अपने को छोड़कर अन्यत्र प्रयास करता है। आत्मज्ञान होने पर ही परम तत्व का ज्ञान सम्भव है। नेति-नेति तत्वमसि, सोऽह-मस्मि, अयमात्मा-ब्रह्म इत्यादि पदावलियां हिन्दी संस्कृत-साहित्य में बहुत प्रयुक्त हुई हैं। आत्मा ब्रह्म है। वह अन्नमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय और आनन्द मय कोश से परे है। वह स्थूल शरीर (पंचभूतों से रचित शरीर), सूक्ष्म या लिंग शरीर (इन्द्रियों या अन्तःकरण का संघात तथा अविज्ञया शरीर (अज्ञानमात्र) से भिन्न है। वह जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं से मुक्त है। उसका अनुभव तुरीयावस्था या समाधि में ही हो सकता है। यह समाधि सहज-समाधि तथा हठसमाधि दो प्रकार की होती है। जब इसका ज्ञान सहज ढ़ंग से होता है तब हम उस अवस्था को सहज समाधि कहते हैं और जब हम बल पूर्वक हठयोग आदि करके उस अवस्था को प्राप्त करते हैं तो वह इन सिद्धांतों की हिन्दी साहित्य में पर्याप्त विवेचना मिलती है। अधिकांश सन्तों को इस विषय पर कुछ अपने अनुभव हुए हैं। कुछ सन्त वेद-सम्मत कर्ममार्ग या ज्ञान कर्म-समुच्चय मार्ग का खण्डन करते हैं। पर विशुद्ध ज्ञान-मार्ग और भक्ति समुच्चित ज्ञान मार्ग का वे सदैव अनुमोदन करते हैं। अद्वैत वेदान्त के अति-रिक्त अन्य वेदान्तों का प्रभाव भीं इस प्रसंग में उल्लेखनीय हैं।

प्रश्न

प्र०— देह-मन आदि से असङ्ग कैसे हो सकते हैं।

उ०— अपने आपको देहमय, मनोमय मानना ही इनका संग करना है। देह-मन आदि संघात को भिन्न देखते हुए अपने को ज्ञान स्वरूप अनुभव करना ही असंग होने की युक्ति है। असंगता में ही मुक्ति है।

—पथिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिमी सभ्यता या दानवता

❀ श्रीमती मंजुदेवी जालान, कलकत्ता

इस भू-मण्डल का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानव, विधाता की एक बेजोड़ रचना हैं, जो युगों-युगों से सभ्यता की एक-एक सीढ़ी पार करता चला आ रहा है। आज यदि हम मानव इतिहास पर दृष्टि-पात करें तो मनुष्य के पहले एवं आज के रूप में किसी प्रकार का सामंजस्य नहीं बैठा पायेंगे। आज हम पहले के मानव का वर्तमान के सभ्य व सुरक्षित कहे जाने वाले मानव से तुलनात्मक अध्ययन करें तो हम दोनों में जमीन आसमान का अन्तर पायेंगे।

जहां पहले मनुष्य प्रकृति के वश में था आज प्रकृति को अपने वश में करने का प्रयत्न कर रहा है तथा इस उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए वह निरंतर नई खोज, नये नये प्रयोग कर रहा है। आज मनुष्य अपने बुद्धि बल से देवताओं और दानव की सी अतिमानवीय शक्तियां भी अपने लिये सुलभ कर लेने में प्रयत्न रत हैं और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जल्दी ही वह उन पर विजय प्राप्त कर लेगा। मनुष्य की उपरोक्त उपलब्धि को देखते हुए हम एक बार सोचने को बाध्य होने लगे हैं कि क्या यथार्थ में मानव बन सका है या सभ्यता की इस दौड़ में मानवता को भुला बैठा है।

सभ्यता का तात्पर्य एक सभ्य व पूर्ण मानव से है। तथा त्याग, सेवा व सहानुभूति सभ्यता के आन्तरिक गुण कहे जाते हैं। आज मनुष्य सभ्यता को बाह्य प्रदर्शन व भोग का एक साधन मात्र मानता है और सभ्यता के आन्तरिक गुणों को धीरे-धीरे भूलता जा रहा है। ये आन्तरिक गुण जो कभी श्रद्धा व आदर की दृष्टि से देखे जाते थे आज के सभ्य लोग इन्हें निरी भावुकता व आदर्शवादिता ही समझते हैं। अर्थात आज मनुष्य ऊपरी आडम्बर में ही उलझ कर आंतरिक गुणों तक नहीं पहुंच पाते।

आज मनुष्य मानवता के लक्ष्य से भटक गया है और उसकी समस्त इच्छाएं स्वयं पर ही केन्द्रित हो गई हैं तथा उसका लक्ष्य बन गया है 'भोग'। भोग की भावना से ग्रस्त व्यक्ति धन लोलुपता व प्रदर्शन की अन्धी दौड़ में अपने जीवन की बाजी लगा चुका है। लेकिन उसने यह सोचने की कभी कोशिश ही नहीं की कि भोग की न तो कोई सीमा है, और वह न ही भोग से कभी कोई तृप्त हो सका है। इसलिये एक बार चाणक्य ने कहा था 'भोग नहीं भोगे गये हम ही पूरे हो गये।'

आज समाज का प्रत्येक सदस्य चाहे वह डाक्टर हो, या वकील या व्यापारी सबका एक-मात्र लक्ष्य केवल भौतिक सुख प्राप्त करना है इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक सुख की आड़ में उन्हें यह भान नहीं है कि उनके कार्य के प्रति अनिष्ठा की भावना पूरे समाज को ही नहीं बल्कि राष्ट्र को भी दूषित कर रही है। वे इस बात को बिल्कुल भूल रहे हैं कि भोग विलास के साधनों की अपेक्षा सेवा और सहानुभूति ही सभ्यता व महानता की सूचिका है।

हम एक जड़ व्यक्ति की अपेक्षा एक उन्नतिशील मनुष्य की कल्पना करते हैं। उन्नति मनुष्य के लिये आवश्यक है। लेकिन आज मनुष्य उन्नति को केवल भोग का एक अंश मानता है और भोग प्राप्ति के लिये बहुत अधिक धन व्यय करता है। अतः दोष भोग प्राप्ति के साधन, धन का नहीं बल्कि उसके दुरुपयोग का हैं, मानव से मानव की दूरी को बढ़ा रहा है, अमानुष होता जा रहा हैं। दूसरी ओर एक निर्धन व्यक्ति अपने पेट की तृष्णा को शान्त करने के लिये भोजन की चिन्ता में रहता है और उसको पूरा करने के लिये वह हर सम्भव प्रयत्न करता है। फिर भी वह चिन्ता से मुक्त नहीं हो पाता अतः विवश हो भौतिक कार्य करने लगता है।

अति भोग मनुष्य को अशान्त व अनैतिक बना देता है जिसका ज्वलन्त उदाहरण है पश्चिमी सभ्यता ! आज पश्चिमी सभ्यता में पले हुए लोग क्यों अशान्त हैं ! उनके पास भौतिक साधनों का बाहुल्य है पर फिर भी वे मानसिक तनाव से पीडित हैं, आज वे शान्ति की खोज में पूर्व की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। वहां मानसिक रोगों से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक है। जब मनुष्य में आत्म संतोष ही नहीं तो भौतिक सुखों की क्या कद्र। आज पश्चिमी सभ्यता हमें एक ऐसे युद्ध की ओर ले जा रही है जो एक क्षण में युगों-युगों से प्राप्त हमारी उपलब्धियों को तहस नहस कर सकता है। इस युद्ध को रोकने के लिये अब हमारे पास आत्म बल नहीं है। आज मनुष्य साधन सम्पन्न होते हुये भी कितना निरुपाय तथा अकेला रह गया है।

आज यह बात नहीं कि पूर्व अर्थात भारत के लोग क्लांत नहीं हैं। इसकी वजह है उनकी अति गरीबी और पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण। अधिकतर भारतीय साधनहीन व्यक्ति अपनी गरीबी के कारण अनैतिक कार्यों से लिप्त हैं और पढ़े-लिखे शिक्षित व्यक्ति पश्चिमी सभ्यता की अन्धाधुन्ध नकल में ही अपना गौरव मानते हैं। दुख तो यह है कि आज पूर्व के लोग अपनी निधि सत्य, शांति, प्रेम तथा सद्भावना की नीति को भूल रहे हैं तथा विदेशीपन में रत हैं।

जब-जब पश्चिमी जीवन पद्धति का पूर्वी जीवन नीति से मुकाबला हुआ है तभी पश्चिम के पास खीज से हथियार उठाने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं रहा है। हथियार, जो कमजोरी का सबूत है, बल का भ्रम पैदा करता है। हमारे शास्त्रों में लिखा है, शस्त्र का उपयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ आत्मरक्षा के लिये या दुर्बल की रक्षा के लिये ही करना चाहिए। इसीलिये आज का भारत-वासी आत्मिक बल को भौतिक बल से श्रेष्ठ मानता है। बुद्ध और गांधी का यह देश इसलिये स्वयं को आज एक दोराहे पर खड़ा पाता है।

आज राह चलने के पहले ही कदम ठिठक जाते हैं कि किस राह पर कदम बढ़ायें ? कहां मिलेगी मन्जिल ? प्रश्न यह उठता है कि क्या इस दोराहे पर चलते हुये लोग मानवता को भूल जायेंगे ? क्या पश्चिमी सभ्यता की यह कुन्ठित, पीड़ित और अशान्त प्रवृत्ति समाप्त होगी ? आज अशान्त हृदय के लिये व्याकुल है। वह समय अब दूर नहीं जब सारा विश्वधर्म एक ही होगा "मानवता"। फिर से एक बार बौद्धिक की जगह हार्दिक, कृत्रिम के बजाय प्राकृतिक व स्वार्थपरता की अपेक्षा सेवाभाव का पलड़ा भारी होगा।

★

★ ब्रह्मलीन स्वामी हरिओम् को श्रद्धान्जलि ★

स्वामी ब्रह्मानन्द,
एम०ए०, एल०एल०बी०, एडवोकेट
कार्तिकेयाश्रम, ऋषिकेश।

जीवन मेरे विचार से आने जाने की मध्यावधि है, आने के पूर्वावस्था के परम्परानुसार व्याख्या करते हैं एवमेव जाने की परवर्त्यवस्था है। स्मृति को भी सत्य मानने को बहुत कम लोग सन्नद्ध है, अपने पूर्वजन्म की कथा श्रवण करने अथवा कराते हुए भी पूर्णतया विश्वसनीय नहीं होती है। संसार में मध्यावधि है किन्तु पूर्वावस्था अव्यक्त है और पश्चादवस्था अव्यक्त हो जाती है। मध्यावस्था मेरी धारणा से तीन पीठिकाओं में विभक्त है, प्रत्येक पीठि का अपने निश्चित कार्यक्रम के लिये नियक्त है, निर्धारित कार्यक्रम का सम्पादन करना कर्तव्यपालन है और धर्मसञ्चयन है। आसन्न पीठिका का कार्यक्रम अग्रिम पीठिका के लिए छोड़ना बाधक है, साधक नहीं।

जन्म के सम्बन्ध में नाना धारणा हैं, सभी अपनी धारणा का सप्रमाण एवं युक्तियुक्त समाधान करते हैं। कर्म को प्रायः सभी मानते हैं, किन्तु कर्म का अर्थ प्रारब्ध है, तृष्णा कर्मोत्थापिका है। जब तक तृष्णा बनी रहेगी प्रारब्ध बनता जायेगा। वितृष्णता पर अधिकतर चिन्तकों ने बल दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु वितृष्णता का अभिप्राय सहज कर्म के परित्याग से नहीं। सहज कर्म का सम्पादन अपरिहार्य है। उत्तम प्रकृति के लोग कर्म करते रहते हैं और फल की कामना भी नहीं करते, मध्यम कोटि के पुरुष कर्म का त्याग तो नहीं करते किन्तु फलेप्सा बनी रहती है। निम्न कोटि के लोग फलेच्छु होते हैं कार्य कुछ नहीं करना चाहते हैं।

उत्तम कोटि के पुरुष आत्मोद्धार के साथ परमोद्धार के लिये भी प्रयत्नशील रहते हैं। जिस कारण वे आकर्षण के केन्द्र बन जाते हैं। जो जन अपने ही लिये जीवित रहता हैं वह उपेक्ष्य होता है। उसके परिश्रम से क्या लाभ जिसका परिणाम दूसरों के लिये नहीं, अतः लोग सदा परहित की भी इच्छा करते हैं। अपने नियत जीवन को यापन करते हैं और समय निकाल कर दूसरों के शुभ के लिये कोई न कोई शुभ कर्म करते हैं। कर्मकाण्ड की समालोचना होती है किन्तु सकामभाव, जो कर्म किया जाय। आत्मचिन्तन के लिये परम्परा है जिसका प्रतिपादन अद्वैतवाद में है क्योंकि सापेक्ष जीवन की उपेक्षा का कहीं भी विधान सम्भव नहीं किन्तु वह मध्यावधि है।

इस मध्याबधि की सँज्ञा है व्यावहारिक जीवन जो वास्तव में सम्बन्धावच्छिन्न। नाना प्रकार के सम्बन्ध हैं जिनका होना सहजभाव है। माता, पिता, भ्राता, भगिनी, बान्धव, शिष्य, गुरू, आचार्य, स्वामी, सेवक, सखा ये व्यावहारिकता के साधक हैं। यो·यथा वर्तते तेन तथा वर्तितव्यम्, जिसका जैसा व्यवहार, उसके साथ वैसा रहना न्याय है। लोक में रहते हुए लोकाचार विवर्जित पुरुष हास्यास्पद होता है। व्यावहारिक जीवन रंगमंच है जहां प्रत्येक कुशीलव अपने कौशल का अभिनय करता है जिससे सामाजिक में एक भी असन्तुष्ट नहीं रहता वही सफल एतावता प्रशंसनीय पात्र है।

सुलभ अधिकार का जो उदारता से उपयोग नहीं करता वह जन विफल रह जाता है। सँसार में कौन मार्ग शुभ और कौन शुभेतर कहना सुगम नहीं, वास्तव में प्रत्येक मार्ग शुभ है, अशुभ तो मनोभाव है। मनोविलय होते ही ज्ञानोदय हो जाता है। परिणामतः पुरुष विशेष में वैराग्योदय होता है, और वह गृहत्याग कर सद्गुरु की शरण में पहूंच जाता है। सद्गुरु की प्राप्ति बहुत कठिन है, देवाधीन गुरुकृपा है। सद्गुरु परम्परा का अतिक्रमण नहीं करता है, शिष्य को साधना पथ पर लगाता है।

साधना का लक्ष्य आत्मोद्धार है, जिसके लिये अनेक उपाय हैं, शास्त्रों का श्रवण मनन निदिध्यासन प्रमुख है निवृत्तिमार्गों के लिये। बाल्यावस्था में वैराग्योदय के कारण कोई भाग्यशाली जन सद्गुरु की शरण में जाता है, और तब उसे अध्ययनादि का उपदेश मिलता है। अधिकारी उसे देख कर उसे पूर्ण दीक्षा देते हैं। वह अपने साधना के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112395

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल को अधिकारियों में वितरण करता है । कहीं आश्रम, कहीं मन्दिर, कहीं विद्यालय, कहीं सत्संग स्थापित करता है। वह लघुगृह से निकलकर वृहद भवन में रहता है। महात्मा हो जाता है । उसके भीतर संकीर्णता का अभाव हो जाता है। साम्प्रदायिक कीचड़ से वह निर्लिप्त रहता है। अपने सरल व्यवहार से दूसरों को हर्षित एवं मुदित करता है। दोषगुर्णो का उसमें अभाव तो नहीं किन्तु वे क्षणिक हैं, पारमार्थिक नहीं। अपनी पूर्व पीठिका में समर्जित निधि का उपयोग मध्यपीठिका में करता है। यही बात महात्मत्व का परिचायक है। जगन्मिथ्या ब्रह्मैव सत्यम् के प्रतिपादक शंकर ने मर्यादा के लिये देश में विभिन्न कार्य किये जिनको यद्यपि संकीर्णता के आवरण से प्रच्छन्न व सीमित करना लोगों में बहुतों का ध्येय हो गया किन्तु वह सर्वथा उपेक्ष्य है। किसी के प्रसार के अवरोध का कारण सीमा में आबृत्त करना है। ब्रह्म निष्कामि है और महात्मा निःसीमोपासक हैं अतः उनमें संकीर्णता की परिकल्पना करना भी असम्भव है।

अपने प्राप्त धन का उपयोग स्वामी हरिॐ जी ने अपने परम गुरु स्वामी रामतीर्थ के सन्देश प्रचार प्रसार में समर्पित किया है और रामतीर्थ मिशन की स्थापना की। स्वामी हरितीर्थ विरक्त वृत्ति के महात्मा थे अतः अपने गुरुदेव के प्रदत्त उपदेशों का प्रचार प्रसार अपना लक्ष्य नहीं बना सके, सरदार पूर्णसिंह ने पूर्ण रूपेण प्रवृत्ति पथ अपना लिया था स्वामी गोविन्दानन्द ने अपना शिष्य तैयार किया और प्रेरणा प्राप्त कर स्वामी हरिओम् ने रामतीर्थ को पुनःर्जीवित किया । स्वामी रामतीर्थ के साहित्य का हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू में रामतीर्थ प्रकाशन प्रतिष्ठान ने बनाये रखा किंतु यह पठित जनों में ही सीमित था। स्वामी हरिओम् के साहसिक कार्य को देखकर अनेक सहयोगी तथा प्रशंसक आगे आ गये। पटियाला से स्वामी हरितीर्थ भी आते थे, लखनऊ से रामेश्वर सहाय सिंह आते थे। दूसरे अनेक भद्र पुरुष तथा भद्र महिलाएं भी स्वामी हरिओम तीर्थ का सहयोग करने लगे । परोपकार के लिये सदा प्रयत्नशील रहे । भगवत् कृपा से स्वामी हरिओम् तीर्थ की सौम्य आकति, मधुरवाणी, व्यावहारिक सरलता, आकर्षण का केन्द्र वनीं। देश के विभिन्न भागों में रामसन्देश के प्रसारार्थ हरिओम सत्संग केन्द्र स्थापित जिनका संचालन एवं संरक्षण साहसी महानुभावों ने स्वीकार किया। साथ ही मासिक पत्रिका 'रामसन्देश' का प्रकाशन भी किया सादर स्वागत किया गया । यावज्जीवन प्रयासविमुख रहे किन्तु सहसा मध्यमार्ग में ही दिवंगत हो गये। जिस रामतीर्थ मिशन की स्थापना राजपुर में की थी, वह निरन्तर विकासोन्मुख है, ब्रह्मलीन स्वामी गोविन्द प्रकाश ने पूर्णतया सेवापूर्वक संचालन किया और अपने गुरुदेव स्वामी हरिओम् का अक्षरशः पालन किया। अपने व्यवहार से दोनों महात्मा आकर्षण के केन्द्र और प्रेरणा के स्रोत रहे। स्वामी अमरमुनि जी को उक्त संस्था के संचालन का अवसर मिला आशा है कि अपने पूर्व महात्माओं का अनुशीलन करते हुए हमारा पथ-प्रदर्शन तथा 'रामसन्देश' का प्रसार करते रहेंगे, यही स्वामी हरिओम् को सर्वोपरि श्रद्धाञ्जलि होगी। (इतिः) ०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PURPOSE OF LIVING

METHOD OF ITS ATTAINMENT

--Swami Chidanand--

Every moment of our living is unconsciously directed towards attainment of peace happiness and perfection. In fact this is sole aim of life. This is attainable by triplicate sadhana of :

(a) Spiritualisation of all activities
(b) Cultivation of virtues
(c) Constant rememberance of God.

We start our day by waking ; and we end it by entering into sleep. So, the first idea to be impressed upon the mind when we wake up, fresh from a period of sleep, should be prayer. "Oh Lord ! I awake to worship Thee in all names and forms". The feeling that you are a Pujari of the Cosmic Form of the Lord should be the first idea that should be impressed upon the blank mind, when you emerge from sleep; Therefore, the moment you get up, try to say over and over again : "Everything is the Lord ; whatever we see is the Lord" and then start the day with a Cosmic Solution : "Namostwanataaya Sahasramurthaye Sahasranaamne Purushaya Saaswate". Devise your own prayer. 'Oh Lord ! Whatever actions, I may do during the course of my waking hours this day by thought, by speech or by action, may it all be a continuous worship of Thee". With this idea commence your day's work.

SPARE FIFTEEN SECONDS

Every now and then, during the course of your work for fifteen seconds try to collect yourself and say : "This is all Worship ; whatever I do is worship— Na Aham Karta, Harih Karta". Try to behold the Lord in every being. Every now and then try to remind yourself that this is your Bhava : Sarvam Brahmamayam.

And, in the end, when you retire to sleep, offer up all the actions of the day at the feet of the Lord. Say : What all I have done through hands, feet, eyes, ears, nose, tongue or mind, I offer up into the Lotus Feet of the Lord as my Pushpanjali— Brahmarpanam". Then go to sleep with this idea impressed upon the unconscious mind. This is practical spiritualisation of your life : this is practical dynamic, intense, Sadhana.

Also, when you do certain particular actions every day, try to see that at the beginning and at the end of each individual distinctive activity this process is gone through. For instance, it is done when you sit for food, you offer up everything and when you get up, you say : Brahmarpanam. When you sit to write a letter, say : "Oh Lord may it be a worship of Thee" : when you finish it, say ; "Bahmarpanam". Every complete act that you do start with the prayer and end with the offering.

This is the greatest secret and there is a most effective and pawerful way of trans:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112394

forming all activities of the day into Puja, Sacrifice and Worship. That is the constant mental repetition of the Lord's Name. This is the greatest thing which our ancient seers and saints have discovered and given to us our priceless heritage : A saint has said :

Jache Muke Sada Hari;
Tanche Yajna Pauli Pauli .

On whose lips is the Name of Lord; At every step he is doing a Yajna.

DIETIC RULES

1. Fruits should be perfectly ripe. Do not eat sour or unripe fruits.
2. Eat only when you hungry. Beware of false hunger.
3. Eat less. masticate move, maxticate your food thoroughly. Chew every mouthful 30 times. Do not eat too rapidly. Do not bolt your food hastily.
4. Fast one day in a week. Fasting eliminates the poison, Overhouls the internal mechanism and gives rest to the organs.
5. Do not overload the stomach, Take Mitahara (moderate diet). Get up when 3/4th of the stomach is full.
6. Do not eat anythings which you do not like, but do not eat everything which you like most.
7. Take always some raw vegitables like cucumber, raddish with your food. Reduce cocked food to a minimum,
8. Eat only 4 or 5 kinds of food at one meal, Abandone too many mixtures or combinations. It is difficult for the digestive juices to digest complex diverse combinations.
9. Eat only combinations which are compatible. If you take incompatible mixtures there will be fermentation in the stomach and intestine. All cereals can be taken with milk, fruits and vegitables. Do not take milk with milk products such as Rubdi, Peda, Kalakana etc. Nuts bread, apples, lemons, butter can be taken with everything. Proteins, and starches and fruits and cereals and other corbohydrates are compatible combinations. Experience and Instinct will guide you in making compatible mixture of diet.
10. Do not eat when you are angry. Rest for a while till the mind becomes calm and then take your food. Poisons are secreted by glands when you are angry and thrown into blood stream.
11. Take food as medicine, gluttony.
12. Do not eat anything between meals. Do not drink between meals. Do not eat late at night
13. Do not remove the skin of apples and carrots because the skin has valuable minerals and vitamins.
14. Do not take tinned food and old butter. Vegetables and rice should be steamed. Overcooking will rob the vegetables of their value and flavour. Do not throw away the 'Kanjee' and the water in which the vegetables are boild. They contain valuable minerals, Drink them also.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ आश्रम समाचार ★

परमश्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी हरिॐ जी महाराज, संस्थापक स्वामी रामतीर्थ मिशन, की पुण्य स्मृति में २ से ४ दिसम्बर तक मनाये गये श्रद्धाञ्जलि दिवस में, जो मिशन के नव-परमाध्यक्ष स्वामी अमरमुनि जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, दिल्ली, अमृतसर आदि शाखाओं से आये हुए रामप्रेमियों ने भाग लिया।

उत्सव का प्रारम्भ गीता, उपनिषदादि धार्मिक ग्रन्थों के पारायण के साथ दिनांक २-१२-७७ से प्रारम्भ हुआ। ३ दिसम्बर को 'रामचरित मानस' का अखण्ड पारायण ज्ञान मन्दिर में रखा गया, जिसकी पूर्णाहुति हुई ४ दिसम्बर की प्रातः ६-३० बजे। इस पूर्णाहुति के बाद स्वामी हंस प्रकाश जी महाराज, महामन्त्री स्वामी रामतीर्थ मिशन, के संचालन में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ दिल्ली से पधारी हुई मातृमण्डली के सुमधुर भावमय भजनों से। तदनन्तर देहरादून की मातृ-मण्डली ने श्रद्धाञ्जलि पूर्ण गीतों से वातारण को मौन व संगीतमय करते हुए अतीत की स्मृतियों से युक्त कर दिया।

भावमय गीतों द्वारा महापुरुषों को भावमयी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने के बाद श्री शिवचरणदास जी सभ्रवाल ने महापुरुषों के आत्मस्वरूप की ओर संकेत किया। स्वामी—स्वामी हरिॐ जी महाराज के साथ अपने प्रथम मिलन की स्मृति करते हुए पुजारी राम चरणदास जी ने स्वामी जी के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं की ओर संकेत किया। स्वामी तीर्थानन्द जी ने स्वामी राम और स्वामी हरिओ३म् जी महाराज के साक्षार रूप में स्वामी गोविन्द प्रकाश जी महाराज को सिद्ध करते हुये कहा कि कोई सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है और कोई उसे व्यावहारिक रूप देता है। स्वामी सत्य प्रकाश जी, स्वामी अद्वैतानन्द जी, जेतली जी, सरदारी लाल जी ओबराय आदि सन्तों व राम-प्रेमियों ने एक स्वर में यही कहा कि उनको—महापुरुषों को—श्रद्धाञ्जलि केवल वाणी तक नहीं सीमित रखनी चाहिए बल्कि हम सबको उनके उपदेशों जीवन में व्यावहारिक रूप देना चाहिए।

ब्रह्मलीन स्वामी हरिओ३म् जी महाराज के श्रद्धाञ्जलि दिवस पर ब्र० स्वामी गोविन्द प्रकाश जी को श्रद्धाञ्जलि समर्पित करना कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि दोनों शारीरिक रूप से भिन्न होते हुए भी आत्मिक रूप से अभिन्न थे ये भावमिश्रित वाक्य थे स्वामी हंस प्रकाश जी महाराज के।

अन्त में अध्यक्ष पद से सम्बोधन करते हुए श्रद्धेय स्वामी अमर मुनि जी महाराज ने कहा कि मैं तो निमित्त मात्र हूँ। सारा कार्य भार तो स्वामी हंस प्रकाश जी को ही वहन करना है। उन्हीं के सह-योग से मिशन ने उन उद्देश्यों को प्राप्त करना है जिनको प्राप्त कराना चाहते थे हमारे महापुरुष।

इस प्रकार सभी को धन्यवाद देते हुए तथा छात्र-छात्राओं को आवश्यकीय पठन-सामिग्री का वितरण करते हुए, समष्टिभोज के साथ शान्त और श्रद्धामय वातावरण में यह श्रद्धाञ्जलि दिवस सम्पन्न हुआ।

६ की सायं परमाध्यक्ष जी ने इलाहाबाद की ओर तथा ४ की सायं ही महामन्त्री जी ने लखनऊ की ओर प्रस्थान किया। परमाध्यक्ष जी ११ की सायं मिशन होते हुए बम्बई चले जायेंगे। जहां-बम्बई में उनका निवास जनवरी मास तक रहेगा।

—सह सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष-८४२२१ राजपुर, ४२६७ देहरादून, तार का पता-(वेदान्त) देहरादून, रजि० नं. डी. एल. १५

—सूचना—

१—मासिक पत्रिका 'राम सन्देश' न मिलने पर अपने समीपस्थ डाकखाने (पत्रालय) से पता करने के पश्चात हमें सूचित करें। क्योंकि कभी किसी कारणवश "राम सन्देश" १५ ता० तक निकलता है। इसलिए शिकायत पत्र अपनी २ ग्राहक संख्या सहित दिनांक २० के बाद प्रेषित करने का कष्ट करें।

२—आप आश्रम में किसी भी प्रकार का धन भेजते समय यह लिखना न भूलें कि वह धन किस निमित्त भेजा जा रहा है तथा चैक स्वामी रामतीर्थ मिशन के नाम पर ही भेजें।

३—यह प्रार्थना है कि जो पाठक इस पत्रिका के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं वे अपना सदस्यता शुल्क सम्पादक के नाम प्रेषित करें। सदस्यों को आजीवन पुनः बिना किसी शुल्क के यह पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

४—स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून के आजीवन सदस्यों को कार्यकारिणी की १९७७ गोष्ठी के निर्णयानुसार यह सूचित किया जाता है कि सदस्यता शुल्क वार्षिक १२ रु० के स्थान पर २० रु० कर दिया गया है तथा उन सदस्यों को मासिक पत्रिका का प्रेषण मास जनवरी १९७८ से निःशुल्क किया जायेगा। अतः सदस्य अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय १२ रु० के स्थान पर २० रु० प्रेषित करने का कष्ट करें।

४—'राम सन्देश' के विदेशी ग्राहक अपना वार्षिक शुल्क १५ रु० भेजें। क्योंकि परमाध्यक्ष जी की आज्ञानुसार १२ रु० के स्थान पर ३ रु० वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

बुक पोस्ट

ग्राहक संख्या .. 425

श्री/श्रीमती ....

स्थान ....

डाकखाना ....

जिला ....

मासिक पत्र—
"राम – सन्देश"
स्वामी रामतीर्थ मिशन
राजपुर, देहरादून (यू. पी.)
Pin-248009 भारत

स्वामी रामतीर्थ मिशन, राजपुर देहरादून (उ०प्र०) के लिए प्रकाशक स्वामी अमर मुनि द्वारा न्यू आईडियल प्रिंटिंग हाउस, ४ बी, नेशविला रोड देहरादून में, मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar